❀ श्री कृष्ण:शरणंमम् ❀

दयासागर प्रभू श्री गोवर्द्धननाथजी हम यह ग्यारहवें
पुष्पाञ्जलि चरणारविंद में समर्पण करने लाये हैं
श्री गोवर्द्धन ग्रंथमाला रूपी इस वाटिका में सदैव
नवीन नवीन पुष्प विकसित होते रहें, हम
सेवकों की यह ही भावना है

❀ हम हैं आपके दासानुदास ❀

सुरेन्द्र कुमार
बी. ए. प्रभाकर
संरक्षक

निरंजनदेव शर्मा
व्यवस्थापक

❀ श्री गोवर्द्धन ग्रन्थ माला समिति ❀

याद रखिये—समस्त पुष्टि मार्गीय एवं बृजभाषा साहित्य
तथा धार्मिक पुस्तकें मिलने का एक मात्र स्थान

पुष्टि मार्गीय पुस्तकों का केन्द्र

श्री बजरंग पुस्तकालय, दाऊजीघाट, मथुरा।

व्यवस्थापक—निरंजनदेव शर्मा का सादर भगवद् स्मरण।
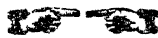
याद रखिये

हमारा मुख्य सिद्धान्त पुष्टिमार्गीय साहित्य का प्रचार करना है १६ वर्षों तक सतत प्रयत्न करके हमने समस्त पुष्टिमार्गीय साहित्यप्रकाशन संस्थाओं से सम्पर्क स्थापितकर लिया है वर्तमान समय में संस्कृत, ब्रजभाषा, हिन्दी, गुजराती, इंगलिश में जो भी पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ प्राप्त हो सके हैं वह समस्त ग्रन्थ पर्याप्त संख्या में हमारे यहां मिलते हैं, और इसके अलावा हमारे यहां भी पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं। अन्य पुष्टिमार्गीय प्रकाशक सिर्फ अपने यहां के प्रकाशित ग्रन्थ ही अपने यहां रखते हैं परन्तु हमारे यहां सभी प्रकाशकों के प्रकाशित ग्रन्थ उपरोक्त भाषा में उसी न्यौछावर में मिलते हैं, इसके अतिरिक्त बृजभाषा साहित्य एवं सभी प्रकार की धार्मिक पुस्तकें भी हमारे यहां मिलती हैं, अलग २ स्थानों से पुस्तकें मंगाने के बजाय एक ही स्थान से मंगाने में समय और पैसे की काफी बचत होती है। अतः हमारी समस्त धार्मिक जनों से सानुरोध प्रार्थना है कि पुष्टिमार्गीय, बृजभाषा साहित्य एवं धार्मिक पुस्तकें मंगाते समय हमें याद रखते हुए एक बार अपनी तथा अपने सत्संग मंडलों की सेवा करने का सुअवसर अवश्य प्रदान करें। विशेष जानकारी के लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगावें।

विनीत
निरञ्जनदेव शर्मा
व्यवस्थापक:—पुष्टिमार्गीय पुस्तकों का केन्द्र

श्रीव्रजरंग पुस्तकालय, दाऊजीघाट मथुरा

प्रस्तावना

प्रस्तुत ग्रन्थ वि० सं० १६६७ की प्रतिलिपी है। इसका मिलान कांकरौली की वि० सं० १६६७ की लिखी ८४ वार्ता से किया गया है जिसमें निज वार्ता और श्री गुसांई जी के अष्टछापी चार सेवकों की वार्ताऐं भी सम्मिलित हैं। अतः इसकी प्राचीनता में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता। यह प्रति मुझे अपनी शोध में मिली है।

बहुत दिन से मेरा बिचार था कि इस प्रति को मैं प्रकाशित कर बम्बई आदि से प्रकाशित निजवार्ता घरूवार्ता की प्रति की अप्रामाणिकता को इतिहास-प्रिय जनता के समक्ष स्पष्ट करूं। किंतु अनेक कार्यवशात् मैं इसे प्रकाशित नहीं करा सका। जब श्रीबजरङ्ग पुस्तकालय के व्यवस्थापक श्री निरञ्जनदेव शर्मा ने जो कि कुछ समय से प्रतिवर्ष छोटी, मोटी दो-तीन सांप्रदायिक पुस्तकें प्रकाशित करते हैं मुझ से कहा कि इस वर्ष आप कोई पुस्तक दीजिये जिसको मैं प्रकाशित करा सकूं। मुझे उसी समय यह पुस्तक याद आई जो न तो बड़ी ही है न बिलकुल छोटी ही। उन्होंने शीघ्र ही इस पुस्तक को छपाना शुरू किया। मैंने इस पुस्तक में चलती लिपि में आये 'भावप्रकाश' को अलग छांट दिया और प्रूफ देखने आदि की सारी जुम्मेवरी श्री शर्मा जी के ऊपर छोड़ दी। क्योंकि मैं जादातर बाहर भ्रमता रहता हूं इसलिये प्रूफ आदि देखने का कार्य नियमित रूप से मैं नहीं कर पाता हूं।

पुस्तक छपी हुई देख कर मुझे यह सन्तोष हुआ कि इसमें प्रूफ की उतनी गलतियां नहीं पायी गईं जितनी 'श्री विट्ठलेश चरित्रामृत' में पूर्व पाई गई थीं। अस्तु

प्रस्तुत पुस्तक जो 'निज वार्ता घरू वार्ता' के नाम से प्रसिद्ध है इससे आचार्य जी के चरित्र और सामर्थ्य पर काफी प्रकाश पड़ता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि 'निजवार्ता—घरूवार्ता' की

रचना ८४ वैष्णव की वार्ता के अनन्तर ही हुई है, क्योंकि इसमें ८४ वार्ता के उल्लेख कई स्थानों पर मिलते हैं। इसमें जो 'भावप्रकाश' है वह भाषा और लेखन शैली की दृष्टि से ८४ वार्ता के 'भावप्रकाश' से बहुत कुछ मिलता है। अतः इसके संकलन और रचना का सारा श्रेय गो० श्रीहरिरायजी को ही दिया जा सकता है।

इससे आचार्य-चरित्र पर इस प्रकार प्रकाश पड़ता है—

जन्म सम्वतें—

१—इसमें महाप्रभू वल्लभाचार्यजी का प्राकट्यकाल वि० सं० १५३५ जिन पंक्तिओं से सिद्ध होता है वे इस प्रकार हैं—

"सो श्रीबलदेवजी श्रीगोपीनाथजी होइकें अडेल में सं० १५६७ आश्विन कृष्ण १२ के दिन प्रगट भये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप तीस वर्ष की वैंय कों अङ्गीकार किये हते।" श्रीगोपीनाथजी के प्राकट्य का उक्त समय चैत्री सम्वत् है। अतः दक्षिण-गुजरात में प्रचलित कार्तिकी सम्वत् १५६६ होता है। इस समय श्रीआचार्यजी तीस वर्ष को पूर्ण कर चुके थे। इस हिसाब से आचार्यजी के प्राकट्य का सम्वत् १५३५ सिद्ध होता है। जो सम्प्रदाय के श्रीनाथजी प्रभृति सभी घरों में एकमत से स्वीकृत है, और ज्योतिष एवं आचार्यजी के अतरंग सेवक विष्णुदास प्रभृति सेवकों के पदों से भी निश्चित है।

इस प्रसङ्ग का उल्लेख बम्बई से प्रकाशित 'निजवार्ता-घरूवार्ता' में नहीं मिलता है। उसमें जहाँ प्रायः ४० प्रसङ्ग बनाये गये हैं वहाँ बीसन सम्वतों की भरमार भी दिखाई गई हैं, जो किसी भी हस्त-लिखित प्राचीन ग्रन्थ में वे प्रसङ्ग और सम्वतें नहीं मिल रही है। उस प्रकाशित प्रति में खास ध्यान देने योग्य तो वह प्रसंग है जिसमें श्रीआचार्यजी के प्राकट्य का सं० १५२९ ज्योतिष चक्र से श्रीगोकुल-नाथजी (चतुर्थ पुत्र) के मुख द्वारा कहलवाया है। ऐसे झूंठे और

कल्पित प्रसंगों की अप्रामाणिकता इस प्राचीन हस्त प्रति से स्पष्ट हो जाती है। इस प्रति में श्रीगोपीनाथजी और श्रीविट्ठलनाथजी के प्राकट्य संवतों के सिवाय अन्य कोई घटना के संवतों का उल्लेख ही नहीं है। इससे क्षीर नीर न्याय वाले विवेकी पाठक उन संवतों की कल्पितता को जान सकते हैं। अस्तु

२—श्रीगोपीनाथ जी के प्राकट्य वाले उक्त उल्लेख में श्रीगोपीनाथजी का प्राकट्य समय वि० सं० १५६७ के आश्विन (गुजराती भादों) कृष्ण १२ बताया गया है, जो कि सम्प्रदाय के श्रीनाथजी प्रभृति सभी घरों में उस दिन आज प्रायः ४५० वर्षों से माना जा रहा है। जो लोग भरूची मत के श्रीगोपालदासजी व्यारे वाले के सं०१५७० और भादों वदी१० वाले कथन को पुष्ट करने के लिये यहाँ तक लिखते हैं कि सर्वत्र खोज करने पर भी कृष्ण१२का प्राचीन उल्लेख कहीं नहीं मिलता है वे सत्य से कितने दूर हैं वह इससे जाना सकता है, कृष्णदास अष्टछाप वाले के पद भी श्रीगोपीनाथजी के उक्त समय की स्पष्ट रूप में पुष्टि करते हैं।

३—श्रीगुसांईजी का प्राकट्य समय वि० सं० १५७२ के पौष कृष्ण नौमी का उल्लेख गोबिन्द स्वामी आदि अनेक समकालीन सेवकों के पदों में बहुलता से मिलता है।

इस प्रकार इस प्रति से तीन प्राकट्य संवत प्रामाणिक रूप में उपलब्ध होते हैं।

सामर्थ्य—

पुष्टिमार्ग अर्थात् भगवद् अनुग्रह मार्ग के प्रवर्तक श्रीवल्लभाचार्यजी के निजी चरित्र में यदि भगवद् अनुग्रह की सामर्थ्य व्यक्त न हो तो पुष्टिमार्ग की विशेषता कैसे जानी जा सकती है? अनुग्रह का स्वरूप सूर ने सामान्यरूप में इस प्रकार गाया है—

वंदों श्रीहरि पद सुखदाई।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, अंधे कों सब कछु दरसाई ॥

बहिरो सुने गूंग पुनि बोले, रंक चले सिर छत्र धराई।

'सूरदास' स्वामी करुणामय, बार-बार वंदों तिहि पाँई ॥

इससे यह स्पष्ट है कि भगवद् अनुग्रह की सामर्थ्य अघटित घटना को भी घटा सकती है। इसके प्रत्यक्ष दृष्टान्त रूप में पंगु किशोरी बाई (२५२ की वार्ता) जन्म से अन्धे सूरदास (८४ वार्ता) गूंगे गोपालदास और रंक नरहरिदास (८४ वार्ता) आदि के चरित्र हैं, जिनमें पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक श्रीवल्लभाचार्यजी एव उनके सुपुत्र श्रीविट्ठलनाथजी के अनुग्रह बल का स्पष्टीकरण हुआ है। जो दूसरों के ऊपर अनुग्रह करके अघटित घटना को घटा सकता है वह क्या सामान्य मनुष्यों की तरह आधि, व्याधि और उपाधियों के बंधन में रह सकता है ? शास्त्रोक्त प्रमाणों से भी जो सम्पूर्ण शास्त्रों का जानकार हो जाता है वह 'स्वयं प्रकाश' एवं 'सर्वज्ञ' होता है। इस अवस्था में वेद पारंगत, सर्व शास्त्रविद, अनुग्रह मार्ग के प्रकटकर्ता, परंब्रह्म श्रीकृष्ण को इसी जीवन में साक्षात करने वाले और दूसरों को भी कराने वाले आचार्य चरण के निजी चरित्रों की अलौकिकता में क्या सन्देह रह जाता है ? और वह भी उस समय जब कि इन अलौकिक चरित्रों की पुष्टि स्वयं आचार्य चरण ही अपने ग्रन्थों में इस प्रकार करते हैं—

(१) वैश्वानर एवं वाक्पतित्व रूप की उक्ति—

"अर्थं तस्यविवेचितुं न हि विभु वैंश्वानराद् वाक्पते"

—सुबोधिनी

(२) भगवत्साक्षात्कार की उक्ति—

श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि ।
साक्षाद्भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते ।। सिद्धान्त रहस्य

(३) भगवदाज्ञा की स्पष्टोक्ति—

आज्ञा पूर्वं तु या जाता गंगासागर संगमे ।
यापि पश्चान्मधुवने न कृतं तद्द्वयं मया ।।
देह देश परित्याग स्तृतीयो लोक गोचरः । अन्तःकरण प्रबोध

शास्त्र और विज्ञान से भी यह सिद्ध है कि जिन्होंने अपने चंचल और पवन से भी अतिवेग वाले अजेय मन को जीत लिया है और उसको कृष्ण में निरुद्ध कर लिया है वह न केवल विश्व को ही किन्तु कृष्ण को भी अपने अधीन कर लेता है। जो ब्रह्म किसी के भी बंधन में नहीं आता है वह इस निरुद्ध गति वाले भक्त के हृदय में बंध जाता है—आचार्यजी ऐसे ही निरुद्ध गति को प्राप्त हुए थे। इस बात को वे स्वयं इस प्रकार कहते हैं—

"अहं निरुद्धोरोधेन निरोध पदवीं गतः"—'निरोध लक्षण'

आपके हृदय में निगम प्रतिपादित 'रसो वै स' परब्रह्म कृष्ण अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित विराजमान हैं इस बात को भी आप इस प्रकार कहते हैं—

'नमामि हृदयेशेषे लीला क्षीराब्धिशायिनम् ।
लक्ष्मीसहस्र लीला भीः सेव्यमानं कलानिधिम् ।।

आचार्यजी की उक्त स्पष्टोक्तियां गीता के श्रीकृष्ण की दीखाई हुई ' अतोऽस्मि लोक वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ' इस आर्य-प्रणाली का निर्वाह करती है। जब तक आचार्यजी अपने स्वरूप को लोगों के समक्ष वाणी और चरित्रों से स्पष्ट न करें तब तक वे दूसरों के उद्धार

में समर्थ है या नहीं यह किस प्रकार जाना जा सकता है ? इसी लिये सभी आचार्यों ने भारतीय आर्य-प्रणाली के अनुसार अपने-अपने स्वरूपों का वर्णन किया है और अपने चरित्रों से तदनुरूप सामर्थ्य को भी स्पष्ट की है।

इस आचार्य प्रदत्त प्रामाणिक दृष्टि से ही यदि उनके चरित्रों का अवलोकन किया जाय तभी हम उनके यथार्थ स्वरूप और सामर्थ्य को जानवे में सफल हो सकते हैं। केवल आंग्ल विद्या विशारद, पाश्चात्य जड़वादी मानस के ही विद्वान् हो सकते हैं वेदोक्त आध्यात्मिक विज्ञान के वे विद्वान नहीं होते हैं। इसी लिये वे लोग विभिन्न आचार्य एवं भक्तों के चरित्रों की अलौकिक घटनाओं पर विश्वास नहीं करते हैं। किन्तु इससे आध्यात्मिक विज्ञान असत्य नहीं ठहर सकता है। आज भी इस विज्ञान को खोजने वाले व्यक्ति निराश नहीं होते हैं तो उस समय जब कि सर्वत्र भक्ति का साम्राज्य था तब तो उस विज्ञान के दिव्य प्रकाश को ऐसा कौनसा साहित्यिक पुरुष था जो देख न सका हो। क्या पूर्व और क्या पश्चिम सभी देशों के उस समय के साहित्य में भक्ति के चमत्कारों का बोलबाला रहा है । भले उसको आज के भौतिक बुद्धिवादी विद्वान् न माने। अस्तु

इस दृष्टि से हम आचार्यजी के इस निजी और घरू चरित्रों का अध्ययन करेंगे तो हमें यह स्पष्ट प्रतिभासित होगा कि आचार्य चरण साधारण मानव न थे, किन्तु उनमें कृष्ण के मुखारविंद की आध्यात्मिक वैश्वानर अग्नि, वेद की सर्वज्ञता, आचार्यो की दिव्य प्रतिभा और सन्मनुष्य के सभी लक्षण विद्यमान थे। कृष्ण मुख की आध्यात्मिक वैश्वानर अग्नि की हृदय में स्थिति होने के कारण वे जहाँ कृष्ण को साक्षात् बुलवा सकते थे वहाँ अपने स्वरूप का दिव्य और प्रकाशमय रूप भी लोक में प्रकट कर सकते थे। इसी प्रकार वेद में पारंगत होने के नाते वे जहाँ त्रिकालज्ञ बन जाते थे वहां सर्व मंत्र-तंत्रों को अधीन

भी कर लेते थे, आचार्य की दिव्य प्रतिभा के कारण 'आचार्य मां विजानियात्' आदि भगवद् वाक्यों के अनुसार वे जहाँ भगवत्स्वरूप के दर्शन दे सकते थे वहाँ वेद से विरुद्ध सभी वादों को निरास भी कर सकते थे, ऐसे ही सन्मनुष्याकृति रूप में सदाचार सद् विचार और सद् व्यवहारों को प्रकट कर सात्विक जन-समूह के अवलम्बन-आश्रय रूप बनते थे। इस सन्मनुष्याकृति रूप से आपने कृष्ण की विशुद्ध प्रेममयी भक्ति को भूमि में प्रकट कर उसको अपने जीवन में आचार, विचार और व्यवहारों द्वारा व्यक्त किया। यही आपके चतुर्विध स्वरूपों की निजी अरू घरूवार्ताओं के प्रसंग रूप प्रस्तुत चरित्र है।

इन स्वरूपों का अनुसंधान रखते हुए यदि इस ग्रन्थ का अध्ययन होगा तो अध्ययनकर्ता को लौकिक और अलौकिक उभय प्रकार का वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त होगा इसमें कोई सन्देह नहीं। सर्वशक्तिधृक् ईश्वर की कृति और सामर्थ्य में ऐसा कोई तथ्य एवं तत्त्व नहीं जिसका अभाव वा असंभाव अनुभूत हो। इस विश्व में ईश्वर ही सर्व रूपों से सर्वविध क्रीडाकर्ता है इस लिये भारतीय विचारश्रेणी में असंभावना और विपरीत भावना को कोई स्थान प्राप्त है ही नहीं। यह दो भावना तो जडवादी मानस में ही प्रतीत होगी। अस्तु

माघ शु० ५
वसन्त पंचमी
सं० २०१५ वि०
मथुरा.

श्रीवल्लभ–वल्लभीय चरणरज
आकांक्षित
—द्वारकादास परीख

* आमुख *

श्रीगवर्द्धन ग्रन्थमाला की स्थापना शुभ सम्वत् २०११ में कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा श्रीगोवर्द्धन पूजा के दिवस हुई थी इस ग्रंथमाला का मुख्य उद्देश्य केवल पुष्टिमार्गिय ग्रन्थ प्रकाशन करना ही है। वर्तमान समय तक इस ग्रन्थमाला ने अपने शैशवकाल के ४ वर्ष समाप्त करके पांचवें वर्ष में प्रदार्पण कर लिया है। इस ग्रन्थमाला की ओर से प्रति वर्ष ३ पुष्प प्रकाशित होते हैं श्रीगोवर्द्धननाथजी की कृपा से चतुर्थ वर्ष का ११ वां पुष्प हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं प्रस्तुत ग्रन्थ सम्प्रदाय के स्तम्भ ब्रजभाषा साहित्य एवं वार्ता साहित्य के मर्मज्ञ श्री द्वारकादासजी परीख के सौजन्य से हमें प्राप्त हुआ है हम आपके अत्यन्त आभारी हैं कि आप अपनी पूर्ण कृपा हम पर एवं इस ग्रन्थमाला पर रखते हुए अपने तीन अमूल्य ग्रन्थ अब तक इस ग्रन्थ-माला को प्रकाशनार्थ प्रदान कर चुके हैं। प्रथम ग्रन्थ इस ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प श्रीविट्ठलेश चरितामृत था, द्वितीय ग्रन्थ इसका दसवां पुष्प खटऋतु वार्ता था, एवं तृतीय ग्रन्थ यह निजवार्ता, घरूवार्ता है हम पूर्ण आशावादी हैं कि भविष्य में भी श्रीपरिखजी हम पर पूर्ण कृपा रखते हुए इसी प्रकार ग्रन्थमाला को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में मैंने प्रूफ अवलोकन में यथा संभव पूर्ण सावधानी बरती है, परन्तु फिर भी प्रेस की भूल से यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमा करते हुए सुविज्ञ पाठक उसे कृपा कर सुधार लें।

प्रार्थी:
निरंजनदेव शर्म्मा
व्यवस्थापक:
श्रीगोवर्द्धन ग्रंथमाला कार्यालय, दाऊजीघाट
मथुरा.

माघ शुक्ला ५
वसन्त पंचमी सं० २०१५

❀ श्रीकृष्णाय नमः श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ❀

श्रीआचार्यजी महाप्रभून की निजवार्त्ता

चिंता संतानहंतारो यत्पादांबुजरेणवः।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ १ ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रगट भए। दैवी जीवन के उद्धारार्थ। सो दैवी जीवन कों भगवान ते बिछुरें बहुत दिन काल भए हैं। सो गद्य श्लोक में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप कहे हैं। 'सहस्रपरिवत्सर' सो श्री ठाकुरजी कों लीला में दया उपजी। तब श्री आचार्यजी महाप्रभून कों आज्ञा दीनी। जो तुम भूतल में पधारो। और दैवी जीवन को उद्धार करो। वे दैवी जीव बहुत काल के भटकत हैं। सो वे सब मार्ग में पेठत हैं। परि कहूँ उनकों स्वास्थ नांही।

भावप्रकाश—काहेतें स्वास्थ नांही जो—जा वस्तु के वे अधिकारी हैं। सो तो कहूँ वे देखत नांही। तातें परिभ्रमण करत हैं। परि कहूँ स्वास्थ होत नांहीं।

सो तिन जीवन के लीयें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप पधारे। सो साक्षात् पुरुषोत्तम को धाम हैं। सो तेजोमय हैं। सो ताको आधार अग्नि हैं। सो अग्नि कुण्ड में तें श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रगट भए। तातें सब कोऊ इनकों अग्नि रूप कहत हैं।

उलटो इनकों सेवक करत हैं ? तातें जो तोकों अपनों कार्य सिद्ध करनो होइ तो तू इनकी सरनि आइ। एतो साक्षात् मेरो स्वरूप हैं। ए भक्तिमार्ग स्थापन के लिऐं प्रगट भऐ हैं। सो महापुरुष वह तत्काल जागि परयो। सो उठिकें श्री आचार्यजी महाप्रभूनकों आइकें साष्टांग दंडवत् कीऐ। और कह्यो महाराज! मेरो अपराध क्षमा करो। मैं कालि आपकों अनुचित बचन कह्यो। मैं आपुको स्वरूप नहीं जान्यों। आपु तो साक्षात् पुरुषोत्तम हों। मेरे उद्धार के लिऐं आप पधारें हो। सो मेरो अंगीकार करोगे। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे जो-- हां हां तेरो उद्धार करेंगे। कहा भयो जो तैं कछू कह्यो तो तब सबारें श्री आचार्यजी महाप्रभू वा महापुरुष कों नाम दियो। वाकों अंगीकार किऐ। पाछे आप श्री आचार्यजी महाप्रभू उहांतें आगें पधारें।

सो आगें एक बडो नगर आयो। सो वा ठोर बडो नगर-सेठ हतो। सो वाकी देह छूटी। वाके चारि बेटा हुते। और सबतें छोटे दामोदरदास हते। सो उन बड़े भाईन विचार कियो जो होंइ तो यह द्रव्य अपुनो अपुनों हम चारों भाई बांटिलेहि। काहेतें जो द्रव्य है सो क्लेश को मूल है। पाछें हमारो आपुस में हित न रहेगो। तब दामोदरदास जी तो छोटे हुते सो इनसों कहे-क्यों बाबा! तू अपने बांटे को द्रव्य लेहिगो?तब दामोदरदास कहे जो-मैं तो कछू समुझत नांहीं। तुम बड़े हो आछो जानो सो करो। तब इन द्रव्य सगरो घर

मेंतें काढि वाके चारि बट किये । सो चारयो चिठी लिखिकें वाके उपर डारी । सो जा जाके नाम की चिठी आई । सो सो वानें लीयो । तब दामोदरदास सों कहे जो तुम्हारो द्रव्य जहां तुम कहो तहां धरें । ता समें दामोदरदास गोख में बैठे हुते । सो गोख के नीचें राज मारग हुतो । सो ता समें श्री आचार्यजी महाप्रभू वा मारग होइकें निकसे । सो उपरतें दामोदरदास की दृष्टि परी । सो तत्काल उहांतें उठि दोरे । न कछू द्रव्य की सुधि रही न कछू घर की सुधि रही । सो आवत ही श्री आचार्यजी महाप्रभून कों साष्टांग दंडवत कीयो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री मुखतें कहे जो । दमला तू आयो ? तब इन कही जो महाराज मैं कब को मार्ग देखूं हूँ । सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनके चरणारविंद के संग पाछें पाछें दामोदरदास चले । सो पाछें भाई कहन लागे जो दामोदरदास कहां गये तब काहूनें कही जो या मारग में एक लरिका जात हुतो तिनके पाछें पाछें दामोदरदास जात हैं तब ये तीनों भाई उहांतें चले । सो आगें वा नगर के वाहर एक स्थल हुतो । तहां श्री महाप्रभुजी के आगें दामोदरदास बैठे हैं । तब इह देखत ही तीनों भाई चक्रित होइ गए । सो इनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्सनसात्तात् तेजको पुंज भयो । सो इनतें कछू वोल्यो न गयो । अपने मनमें बिचारे जो कदाचित कछू वोलेंगे तो यह अग्नि हमकों भस्म करि डारेगी । तब दामोदरदास भाईनकों देखिकें कहे जो जाऊ । सो उन

भाईननें दामोदरदास को स्वरूप ता समें तेजोमय देखे। सो भय खाइके पीछें फिरि आऐ।

भावप्रकाश—सो दैवी जीव होते तो सरन आवते। श्री आचार्यजी महाप्रभून को नाम है जो 'दैवोद्धार प्रयत्नात्मा'।

तब दामोदरदास कों संग लेकें श्री आचार्यजी महाप्रभू आगें पधारे। दामोदरदास कछू ब्याहे तो हते नहीं।'जो इनकों स्त्री आइकें प्रतिबंध करे। बहुत दिना के बिछुरे हते सो आइ मिले। तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग दामोदर दास चले।

सो आगें विद्या नगर में कृष्णदेव राजा। तहां श्री आचार्यजी महाप्रभूनके मामा को घर हुतो सो तहां श्रीआचार्य जी महाप्रभू पधारे। सो वे देखिकें बहुत प्रसन्न भऐ। बहुत आदर सनमान किऐ। तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों कहे जो उठो आप भोजन करो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो मैं तो कहूं भोजन करत नांहीं। अपुने हाथ करिकें लेत हों। तब यह बात सुनिकें मामा कों रिस चढी। बहुत बुरो लाग्यो। तब कुढिकें कह्यो जो हमारे घर भोजन नांही करत तो राजासों देखे जो कैसे मिलोगे राजाके इहां दानाध्यक्ष तो हम हैं। देनों दिवावनों तो हमारे हाथ है। यह सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू बोले नांही।

भावप्रकाश—क्यों जो आप तो ईश्वर हैं। आप जो काहू के बराबरि होइ तो काहू सों बोलें।

सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप उहां रात्रिकों पोढे। इतने में श्री गोवर्द्धननाथजी आप पधारे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आप निद्रा में हते । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभूनके केश दाबे । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू तत्काल जागि परे । देखें तो श्री गोवर्द्धननाथजी आगें ठाढे हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप उठिकें श्रीहस्त जोरिकें ठाढे भये। तब श्री गोवर्द्धननाथजी कहे जो ऐसो गर्वित बचन याको सुनिकें वाके घर में आप क्यों रहे ? मैं तो तिहारे पाछें पाछें लाग्यो डोलतई हों । एक छिनहूँ नहीं छोडत । यह तुमकों राजासों कहा मिलावेगो। एसो तो कोटि राजा तुम्हारे चरणारविंद की अभिलाषा करत हैं । और करेंगे। आप उठो याके घर मति रहो। सो तत्काल में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप उहांतें उठि चले। सो उहां नगर के बाहर जलासय हुतो। तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप स्नान सन्ध्या करिकें कृष्णदेव राजाकी सभा कों पधारे।

सो कृष्णदेव राजा के इहां आये। तहाँ वैष्णव सम्प्रदायको और स्मार्त सम्प्रदाय को आपुसमें झगरो होत हतो। सो वैष्णव सम्प्रदाय के बड़े बड़े आचार्य महन्त। बहुत भेले भए हते सो युक्ति सों स्मार्त जीते । सो वा दिना यह झगरो चुकत हतो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू के मामा ने राजा कृष्णदेव सों कहे जो आज झगरो चुकबे उपर हैं। सो द्वारपाल सों कहि राखो जो आज कोई नयो ब्राह्मण न आवन पावे।

तब राजा कृष्णदेव के इहां सब ब्राह्मण आए। सब सभा भेली भई, इतने में श्री आचर्यजी महाप्रभू पधारे । सो द्वारपाल और सब मनुष्य श्री आचार्य जी महाप्रभून कों देखत ही चकित भए। जो मानों आकास तें सूर्य पधारे एसे तेज को पुंज देख्यो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो भीतर पधारे राजा कृष्णदेव की सभा में पधारे। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों देखत ही राजा कृष्णदेव सब सभा सहित उठि ठाढ़ो भयो ता समें की कहा उपमां दीजिए। जो मांनो राजा बलि की सभा में श्री वामनजी पधारे हैं। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन करिकें, राजाकृष्णदेव बहुत प्रसन्न भयो। जो आज मेरो बडो भाग्य है। जो साक्षात् भग्वान मेरे घर पधारे हैं। ऐसो राजा कृष्णदेव कों दर्सन भयो । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कृष्णदेव राजा नें विज्ञप्ति कीनी जो महाराज बिराजिए। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजे। राजा कृष्णदेव सों श्री आचार्यजी महाप्रभू पूछे जो तुम्हारे इहां ए ब्राह्मणन को कहा झगरो है ? तब राजा कृष्णदेव नें कही जो महाराज यह वैष्णव सम्प्रदाय और स्मार्त इनको आपुस में झगरो है। सो वैष्णवसम्प्रदाय वारे तो निरुत्तर भए हैं। और स्मार्त्त जीते हैं। तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो एसो कोंन है जो वैष्णवसम्प्रदाय कों जीतेगो ? वैष्णव सम्प्रदाय तो हमारी है। हमसों चरचा करो । वे कोंन हैं ऐसे जीतन हारे ? तब यह सुनिकें वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य

बड़े बड़े महंत बैठे हुते। सो बहुत प्रसन्न भऐ। तब राजा कृष्णदेव उन मायावादीनसों कहे जो आओ। जो तुम्हारें चरचा करनी होइ सो करो। तब उनमें बड़े बड़े पंडित हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों चरचा करवे लागे। सो श्री आचार्यजी महाप्रभून तो आप साक्षात् ईश्वर। च्यारो वेद पुराण सास्त्र सब महाप्रभून के जिभ्याग्र ताते उनकी कितनीक सामर्थ। सो वे मायावादी तत्काल निरुत्तर भऐ। तब श्री आचार्यजी महाप्रभून कों साष्टांग दंडवत किऐ। और कहे जो महाराज कोई मनुष्य होंइतो तासों हमारी चले। और आपतो साक्षात् ईश्वर हो। तब श्री आचार्यजी महाप्रभून को महात्म्य देखिकें राजाकृष्णदेव बहुत प्रसन्न भयो। सब वैष्णवसंप्रदायके आचार्य महन्त हुते। ते सहस्रावधि एकठोरे भये हुते। सो सबननें यह कही जो हम सब श्री आचार्यजी महाप्रभून कों तिलक करेंगे। जो हमारे ए वैष्णव सम्प्रदायके, ब्राह्मणनके, सबनके राजा भऐ। और आचार्य पदवी दीनी सो हमारे सबनके सिरोमनि हैं। जिननें हमारी वैष्णवता और वैष्णव मार्ग राख्यो। यह सुनिकें राजाकृष्णदेव कहे जो बहुत आछो। तुम सबन एसे विचारे हैं तो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों। कनकाभिषेक कराउंगो। तब सब वैष्णव सम्प्रदायके आचार्य महन्त प्रसन्न भऐ। तब राजाकृष्णदेवनें आछो महूर्त्त देखिकें कनकाभिषेक करवायो। ब्राह्मण सब तिलक किऐ। सब कोउ श्री वल्लभाचार्यजी कहे। एसो नाम प्रसिद्ध भयो। मायामत

को खण्डन किऐ । भक्तिमार्ग स्थापन किऐ । तब राजा कृष्णदेवनें विनती करी जो महाराज मेरो अंगीकार करिऐ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अनुग्रह करिकें राजाकृष्णदेव कों नाम सुनायो। तब राजाकृष्णदेवनें द्रव्य को थार भरिकें आगें भेट धरयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू वामेंतें आप सात मोहोर काढि लिऐ। तब राजाकृष्णदेवनें कही जो महाराज। सब द्रव्य आप अंगीकार करिऐ । तब श्री आचार्यजी महाप्रभून आप श्रीमुखतें कहे जो हमारो इतनों ही है । हमारें अधिक नांही चहियत। तब राजा कृष्णदेवनें बिनती करी जो महाराज यह स्नान को सुवर्ण हैं। सो आपको है। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कही जो यह हमारे कहा काम को है। यह तो उच्छिष्ठ जलबत हैं। तातें तुम ब्राह्मणनकों बांटि देऊ। तहांते श्रीआचार्यजी महाप्रभू दक्षिण दिग्विजय करिकें आप आगें पधारे । वार्ता प्रथम ॥ १ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें विचारे जो सब देशांतर में दैवी जीव हैं। तातें आपनकों तो सब ठौर जानों । परि होंइतो प्रथम ब्रज में चलें। ब्रज है सो हमारो धाम है,श्रीगोकुल, वृन्दावन, श्रीगोवर्द्धन, यमुना, प्रथम तो ऐ देखीए। सो दामोदरदासकों संग लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ब्रज में पधारे। सो आवत आवत मार्ग में झारखंड में आए। तब झारखंड में श्रीगोवर्द्धन नाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों आज्ञा दीने जो आप वेग पधारो। हम श्रीगोवर्द्धन पर्वत मैं तीनिदमन हैं।

नागदमन । इन्द्रदमन । देवदमन । सो मध्य में देवदमन । सो हम प्रगट भए हैं सो आप वेगि पधारिकें हमारी सेवा को प्रकार प्रगट करो । सो यह बचन सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दमला सों कहे जो दमला श्रीठाकुरजी हमकों एसी आज्ञा दीनी । तातें आपुन वेगि ब्रज में चलो । सो झारखंडतें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप ब्रज कों चले । सो केतेक दिन में आप ब्रज में पाउधारे ।

सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीगोकुल पधारे । सो ता दिना श्रावण शुदि ११ हुती । तातें श्री आचार्यजी महाप्रभू उपवास किए हुते । सो रात्रि कों गोविन्द घाट उपर एक चोंतरा हुतो । ता ठोर श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पोढे । और थोड़े से दूरि । दामोदरदास सोये । इतने में श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों चिंता बहुत उपजी ।

भावप्रकाश—कहा चिंता जो श्री ठाकुरजी तो आज्ञा दीनी हैं । जो भूतल में दैवी जीवन कों अङ्गीकार करो तो उनकों मेरो सम्बन्ध होइ । और इहां तो जीव सब संसार में पड़े हैं । सो समुद्र में पड़े हैं । अपुनो हू स्वरूप भूलि गए हैं । और श्री ठाकुरजी कोहू स्वरूप भूलि गए हैं । और संसार में मग्न है सो दोष बहुत बढि गयो है । और ठाकुरजी तो पूर्ण गुण बिग्रह हैं । इनकों प्रभू को सम्बन्ध कौन रीति सों होइ । ऐसी चिता होत भई ।

तब अर्द्ध रात्रि समें । साक्षात कोटिकंदर्पलावण्य । पूर्ण पुरुषोत्तम श्री गोवर्द्धनधर प्रगट भए । तब श्री ठाकुरजी श्रीमुखतें कहे जो तुम चिंता क्यों करत हो । जिनकों तुम नाम

देऊंगे। तिनके सकल दोष दूरि होइ जांइगे और मेरी प्राप्ति होयगी और ब्रह्मसंबन्ध की आज्ञा दीनी जो जीवकों ब्रह्म-संबन्ध करवाओ।

भावप्रकाश—ब्रह्मसंबन्ध को कारण कहा जो ब्रह्मसंबन्ध बिना प्रेम लक्षणा न होई। भक्ति न होइ। और प्रेम लक्षणा भक्ति बिना पुष्टि-मार्ग में अङ्गीकार न होइ। पुष्टिमार्ग में अङ्गीकार होइ तो भगवत्सेवा को अधिकार होइ। और जीव तो कृतार्थ भगवत् नाम सों होइ जाइ। ताही तें श्री गुसांईजी आप श्री सर्वोत्तम में कहे हैं। श्री आचार्यजी महाप्रभून को नाम।

"भक्तिमार्गं सर्वमार्गे वैलक्षण्यानुभूतिकृत्"

भावप्रकाश---तातें भक्तिमार्ग हु प्रथम हुतो औरहु सब भगवान की प्राप्ति के मार्ग हुते परि ब्रजभक्तनके सनेह को मार्ग न हुतो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट किऐ। बिना सनेह पुष्टिमार्ग में अङ्गी-कार न होइ और बिना सनेह सेवा है सो सेवा नांही। वे पूजा है। पूजा है सो मन्त्र के आधीन हैं और सेवा है सो भावात्मक हैं। ताईपें सूरदास जी गाए हैं।

※ रागकेदारो ※

भजि सखी भाव भाविक देव।
    कोटि साधन करो कोउ तउ न मानत सेव ॥ १ ॥
धूमकेत–कुंमार माग्यो कोंन मार्ग प्रीत।
    पुरुषतें सखी भाव उपज्यो सबै उलटी रीति ॥ २ ॥
बसन भूषन पलटि पहरे भावसों संजोय।
    उलटि मुद्रा दई अङ्गनि बरन सूधे होइ ॥ ३ ॥
वेद विधि को नेंम नाहिन प्रीति की पहिचान।
    ब्रज बधू बस किऐ मोहन 'सूर' चतुर सुजान ॥४॥

ऐसो मार्ग प्रगट करिवे को श्री ठाकुरजी की इच्छा हती। तातें श्री आचार्यजी महाप्रभूनकों ब्रह्मसम्बन्ध की आज्ञा दीनी।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पवित्रा उपरना मिश्री सवारे श्रावण सुदि द्वादसी के लिऐ सिद्ध करि राखे हुते। सो वाही समें श्री ठाकुरजी कों पवित्रा पहराऐ। उपरना उढाऐ और मिश्री भोग धरी। ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे जो दमला तें कछू सुन्यो ! तब दामोदरदासजी कहे जो श्री ठाकुरजी के बचन मैं सुने तो सही परि समुझ्यो नांही। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो मोकों श्री ठाकुरजी नें आज्ञा दीनी है जो जीवन कों ब्रह्मसम्बन्ध करावो। तिनके सकल दोष दूरि होइगे और मैं अङ्गीकार करोंगो। तातें ब्रह्मसम्बन्ध अवश्य करनों। तब ए जो श्री आचार्यजी महाप्रभून की श्री ठाकुरजी सों जितनी आज्ञा भई ताको एक श्रीआचार्यजी महाप्रभू ग्रन्थ किऐ। ताको नाम 'सिद्धान्त रहस्य'।

श्लोक—"श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महा निशि"

भावप्रकाश—यह वार्ता एकादशी की अर्द्धरात्र कों भई। ताते अर्द्धरात्रि कों ही मिश्री पवित्रा धराये। तातें श्रीनाथ जी कों और सातों स्वरूपनकों पवित्रा एकादशी के दिन ही धरयो जात है और उत्सव श्रीनाथजी के इहां एकादशी कों मानें हैं और श्री आचार्यजी महाप्रभून के घर सातों स्वरूपन के इहां एकादशी द्वादशी दोउ उत्सव माने हैं।

तब श्रावण सुदी द्वादसी के दिना श्री आचार्यजी महाप्रभू

प्रथम ब्रह्मसम्बन्ध दामोदरदासकों करवाए और । दामोदरदासजी श्री ठाकुरजी के वचन सुने परि समुझे नांही ।

भावप्रकाश—ताको हेतु यह जो समुझें तो स्वामी सेवक भाव न रहे और फेरि श्री आचार्यजी महाप्रभू इनकों ब्रह्मसंबन्ध काहे कों करावें । कैसें जो गोविन्द दुबे श्री रणछोडजी सों बातें करन लागे । तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कथा श्रीसुबोधनी जी कहत हुते सो पोथी बांधी । जो तोसों श्री ठाकुरजी बातें करत हैं । तो अब हम तुमसों कथा काहेकों कहें । तातें स्वामी सेवक भाव राखिवे के लिए दामोदर दासजी वचन सुनें परि समुझे नहीं । याको कारण आगें श्रीगुसाईंजी दामोदरदास सों पूछेंगे जो तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों कहा करि जानत हो । तब दामोदरदासजी कहे जो श्री ठाकुरजी तें अधिक जानत हों । तब श्री गुसांईजी कहे जो श्री ठाकुरजी तें अधिक काहे कों कहत हो । तब दामोदरदासजी कहे जो महाराज दान बड़ो के दाता बड़ो । यामें यह सिद्ध भयो जो श्री ठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके वस हैं ।

तब ब्रज में श्री आचार्यजी महाप्रभूनको महात्म्य देखिकें बहुत सेवक भए ।

और कृष्णदासमेघन क्षत्री सो सोरम में रहते । सो एक महन्त के सेवक हते सो कृष्णदासमेघन ब्रज में आए । सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करिकें यह मन में आई जो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक ही होऊ ।

भावप्रकाश--काहेतें जो इनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन साक्षातपूर्ण पुरुषोत्तम के भए और प्रभूदास जलोटा क्षत्री और

रामदास ये सब सेवक भये। सबनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रह्मसंबंध करवाऐ।

तब श्री आचार्यजी महाप्रभू सब सेवकन कों संग लेकें आप श्रीवृन्दावन परासोली होइ आन्यौर में सधू पांडे के घर के आगें एक बड़ो चोंतरा हुतो ता ठोर श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजे। इतने में सब ब्रजवासी देखे और कहन लागे जो ये तो कोऊ बड़े महापुरुष हैं। ऐसो तेज तो काहू मनुष्य के तो मोहडे पे न होइ। कहा जानियें यह कोंन स्वरूप हैं। ऐसें सब कोउ कहें तब सधू पांडे आऐ। हाथ जोरिकें कहै स्वामी कछू खाउगे? तब कृष्णदासमेघन बोले जो आप तो सेवकं बिना काहू को लेत नांही हैं।

और सधू पांडे के एक बेटी हती। वाकौ नाम नरो हुतो सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पर बहुत कृपा करते। सो वे दोउ बिरियां सांझ सबारें दूध प्याइवे जाती। जब यह घर के काम काज में होइ तब न जाइ सके। तब ऊपरतें श्रीनाथजी याकूं पुकारें। तबउ न जाइ तो श्रीनाथजी याके घर जाइकें दूध दही अरोगें मांगिलें। जैसें कोउ घर को बालक होइ तैसें श्रीनाथजी यासों हिले हैं।

सो जा समें कृष्णदासमेघन सधूपांडे सों नांही करी। ताही समें श्रीगोवर्द्धननाथजी उपरतें पुकारिकें कहे। अरी नरो दूध ल्याउ। तब नरो ने कही जो आजु तो हमारें पाऊने

आए हैं। तब श्रीनाथजी कहे पाऊने आए हैं तो आछी भली भई, परि मोकों तो दूध ल्याउ। तब नरो नें कही जो हां वारी लाल लाई। सो नरो दूध को कटोरा भरिकें ऊपर पर्वत पर ले गई। ता समें श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासजी सों कहे जो दमला तू यह शब्द सुन्यो। तब दामोदरदास नें कह्यो जो हाँ महाराज सुन्यों। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो यह शब्द और झारखंड को शब्द एक मिल्यो। तातें यही प्रगट भऐ हैं। ऐसो जान्यों परत है। तातें सवारें ऊपर चलेंगे। ऐसें श्रीमुखतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदास सों कहे। इतनें ही में नरो श्रीनाथजी कों दूध प्याइ कें आई। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो अरी यामें कछू है। तब नरो बोली और कह्यो जो महाराज रंचक है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखतें कहे जो यह हमकों देहि। तब नरो ने कही जो महाराज और घर में बहुत है। जितनों चहिऐ तितनो लेऊ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो और तो हमारें नांही चहिये। हमारें तो यही चहिऐ।

और सधू पांडे तो परम भगवदी हैं। श्रीगोवर्द्धननाथजी के परम कृपापात्र हैं। साक्षात् इनसों बातें करे हैं। चहिए सो मांगि लेत हैं। ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के साक्षात पुरुषोत्तम के दर्शन भऐ सधूपांडे कों। तब सधू पांडे नें कही जो महाराज हमकों कृपा करकें नाम दीजिऐ। हम हारे और

आप जीते। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनुग्रह करिके अपुने कीऐ। तब सब कछू उनको अंगीकार किऐ। तब रात्रिकों सधू पांडे और इनके बड़े भाई माणिकचंद और इनकी बेटी नरो और इनकी बहू भवांनी और ब्रजवासी बहुत बड़े बड़े हुते सो सब रात्रिकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के चोंतरा के पास आइके सब बैठे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सधू पांडे सों कहे जो कहो पांडे ऊपर देवदमन प्रगट भऐ हैं सो कोंन रीतिसों प्रगट भऐ हैं? इनकी सब वार्ता हमसों कहो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों सधूपांडे श्रीगोवर्द्धननाथजी को प्रागट्य जा भांतिसों भयो ता भांतिसों कहति भऐ।

जो--महाराज हमारी गाइन को एक ग्वाल हुतो सो वह सगरे गाम की गाइ चराइवे जातो। सो एक ब्राह्मण की गाइ बड़ी हुती। सो वेऊ चरिवे जाती सो चरिकें जब घर आवे तब वे ब्राह्मण दुहिवे बैठे। तब दूध रंचक हू न देइ और सवारे की वेर दुहिवे बैठे तो तब कछू थोरो सो देइ और सब चढाय राखे। सो वे ब्राह्मण बहुत कुढे। जो मेरी ऐसी बड़ी गाइ और दूध काहेतें नांही देत? तब यह मन में निर्द्धार कियो जो गाइ को ग्वाल दुहि लेत हैं। होंइ तो ग्वाल सों कहूँ। तब सांझ समें घर आयो ग्वाल। तब वे ब्राह्मण ग्वाल कों जाइकें खीज्यो। क्यों रे भैया! तू मेरी गाइ दुहिकें पी जात है? सो काहेतें? तब वानें कही जो भैया हौं तो या बात कों जानतहु नांही। तू वृथा बिन देखें मेरो नाम लेत है सो आछो नांही। जो तें

क कहे ? तो मैं काल्हि ठीक राखूंगो । तब सवारें ज
चराइबे कों गयो । तब सगरी गाइ तो बन में छोडि दीनं
वाके पीछें पीछें डोले । वाकों नजरि में राखे जो याको
दोऊ और तो दुहिके न पी जात होइ । तब इतने में वह
ग्वाल की दृष्टि बचाइ कें पर्वत ऊपर चढी । तब वे
हू पर्वत ऊपर चढ्यो सो देखें दूरितें तो वह गाइ
न के ऊपर एक बड़ी सिला हुती । वामें एक छेद
सो वाके ऊपर ठाढी होइकें आपतें श्रवे । सो सगरो दूध
र डारिकें नीचें उतरि आई । सो ग्वाल नें यह सब
देख्यो । तब वा ठौर गयो देखें तो एक सिला में छेद
यह देखिकें ग्वाल हू नीचें उतरि आयो । सगरो दिन
चरायो । जब घर आयवे को समें भयो तब वह गाइ दृष्टि
कें वैसे ही पर्वत ऊपर चढी । वह ग्वाल हू ऊपर चढ्यो
वें तो जैसें सवारें आपते श्रवत हुती तैसें हूँ अबहू
है । फेरि गाइ पर्वत ऊपरतें उतरि आई तब वा ग्वालनें
ब्राह्मण के घर जाइकें सब समाचार कहे जो भैया ऐसें तेरी
दोऊ विरियां पर्वत ऊपर जाइकें आपतें श्रवत है जो तू
तो सवारें मेरे संग चलि । हौं तोहि दिखाइ देऊंगो ।
ब्राह्मण कों सुनिकें आश्चर्य भयो । सो सवारो भयो
तब वन कों चलीं तब वोउ गाइ गई । तब वह ब्राह्मण हू
पाछें चल्यो । सो आगें जाइकें पर्वत ऊपर गाइ चढी ।
ग्वाल और ब्राह्मण दोऊ पर्वत ऊपर चढे सो दूरितें देखें

तो गाइ दूध आपतें ठाढी ठाढी श्रवत है । सो वा ब्राह्मण के मन में जब सांच आयो तब विचारयो जो या बात को अब कहा करनों ? तब वा ब्राह्मणनें आइकें यह सब बात हमसों कही । सो हमकों हूँ सुनिकें आश्चर्य भयो । तब हम सब ब्राह्मण गाम के मुकद्दम और हू बड़े बड़े भेले भए और विचार कियो जो कहो भैया यह कहा कारण है । तब एक वृद्ध ब्राह्मण हुतो वानें कही जो भैया मैं तो ऐसें सुन्यों हैं जो जहां कछू धन होइ । तहां गाइ श्रवत हैं । तब हम यह निश्चय करिकें सब पर्वत ऊपर जाइकें देखें तो वा सिला में एक छेद है । तब विचारे जो या सिलाकों उठावें । तब हम सबनने मिलिकें । यह बड़ी सिला हुती सो उठाई । तब नीचे तो एक सुन्दर लरिका बरस सात को ठाढो है । और वह सिला को छेद हुतों । सो मुख के उपर हुतो । सो वह दूध पीवत हतो । तब हम सबननें कही जो धन याके नीचें है सो सांचो है । ता पाछें हम दूध दही कों भोग धरें । सो सब अरोगें । आप इहाँ सब लरिकान में खेलें । और हम नाम पूछ्यो । तब अपनो नाम देवदमन बताऐ । और हम ऐसें जाने जो यह पर्वत को देवता है । ऐसी रीतिसों ये प्रगट भये । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आप ईश्वर हैं । सब जानत हैं । अपनी बात आप पूछत हैं ।

भावप्रकाश----सो काहेते जो सब जगत में अपनो महात्म्य प्रगट न करें । तो भगवद्‌ी कहा गुन गान करें, ताहीतें गोपलदासजी गाऐ हैं ।

"आपनी लीला वदन पोतें कही उच्चार आनन्द तें अभि दीधो"।

तब श्रीआचाजी महाप्रभू सवारे उठि स्नान करिकें स वैष्णवनकों संग ले आप गिरिराज ऊपर पधारे। तब श्री गोवर्द्धननाथजी श्री आचार्यजी महाप्रभूनकों देखिकें आप साम्हें पधारे। मिलवेकों अति हरखित भये। सो गोपालदासजी गाऐ हैं।

"हरखेंते सामा आवियां श्री गोवर्द्धनउद्धरण"।

तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों मिले। बहुत प्रसन्न भऐ।

श्रीगोवर्द्धननाथजी आप श्रीआचार्यजी महाप्रभून के लिऐ प्रगट भऐ हैं।

भावप्रकाश—याको हेतु यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभूनके आप आज्ञा दीनी जो तुम भूतल में प्रगट भऐ हैं। दैवी जीवन कों अङ्गीकार करो। दैवी जीव बहुत दिनन के मोते बिछुरे हैं। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी की आज्ञा तें भूतल में मनुष्य देह को अङ्गीकार करिकें पधारे। और दैवी जीवन कों तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम नन्दराय कुमार ऐसे दर्सन देत हैं। सो सबकों ऐसे दर्सन देहि तो सब कृतार्थ होइ जाइ। तातें मनुष्य देहकों नाट्य कीऐ। श्रीगुसांईजी आप श्री वल्लभाष्टक में कहे हैं जो—

"वस्तुतः कृष्णएव"

ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप है जिनको परम भाग्य होइगो। सो पुष्टिमार्ग में अङ्गीकार होइगो। तिनके हृदय में। श्री आचार्यजी महाप्रभून को ऐसो स्वरूप आवेगो।

श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों आज्ञा दीनी जो तुम भूतल में पधारो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू भूतल में प्रगट भए। सो श्रीठाकुरजी कों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बड़ो स्नेह है। ताहीतें श्री आचार्यजी महाप्रभूनको नाम श्रीवल्लभ हैं। यमुनाष्टक के श्लोक में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपही अपनों स्वरूप प्रगट किऐ हैं जो—

"वदति वल्लभ श्रीहरे"

तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनको विरह श्री ठाकुरजी ते न सह्यो गयो। तातें आपहू तत्काल भूतल में पधारे। ताते भगवत लीला अनन्त हैं। श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहैं। भगवत्स्वरूपहू अनन्त हैं। और पूतना ते आदि देकें। सब लीला अनन्त हैं।

श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धनधर प्रगट किऐ। सो ताको कारण यह जो श्री गोवर्द्धन परम कृपाल हैं। ईन्द्रने इतनों इतनों आइकें अपकार कीयो। और वापर अनुग्रह किऐ ईन्द्रनें गाइनको ब्रज भक्तन को ब्रज को श्री गोवर्द्धनको सब भगवदीनको द्रोह कीयो परि श्रीगोवर्द्धननाथजी कछू मनमें न ल्याये। वाके ऊपर अनुग्रह करिकें फेरि वाकों अपने लोक पठाऐ। और वानें अपराध कीनों। सो आप सेवा करि माने जो ब्रजवासी तो सब सामग्री मोकों भोग धरे। और ईन्द्रनें जल की सेवा करी यह जानिकें अनुग्रह किऐ। याहीतें श्रीगोवर्द्धननाथजी परम दयाल हैं। जीव तो अपराध भयो है। सो प्रभू परम कृपाल हैं। ऐसी दया बिना जीवकौ अङ्गीकार न होइ।

तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों आज्ञा दीनी मेरी सेवा को प्रकार करो। मोकों पाट बैठावो। सेवा बिना दैवी जीवनकों पुष्टिमार्ग विषें अङ्गीकार न होइ याहीतें मैं प्रगट भयो हूँ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी कों तत्काल एक छोटो सो मन्दिर सिद्ध करवायो। वामें श्री

गोवर्द्धननाथजी कों पधराऐ। और अपछरा कुण्ड के ऊपर एक गुफा है। सो वामें रामदासजी भगवदी रहते। सो सदां भजन करते। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों पधारे सुनिकें। आन्यौर में आये। श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन कीये। और कहे महाराज मेरो अंगीकार करो। मैं आपके लिऐं बहुत दिना को श्रीगोवर्द्धन की कंदरा में तप करत हुतो। सो मेरो तप आजु सुफल भयो। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू रामदास कों अंगीकार कीयो। और श्री आचार्यजी महाप्रभू आप रामदास कों आज्ञा दीनी जो श्रीगोवर्द्धन पर्वत में श्री गोवर्द्धननाथजी प्रगट भये हैं। सो तुम इनकी सेवा करो। तब रामदासजी कहे जो महाराज मैं तो कभूं कछू सेवा कीनी नांही। सो मैं केसें करूं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो तोकों सब सेवा श्री गोवर्द्धननाथजी आप सिखावेंगे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मोरकी चन्द्रकान को मुकट सिद्धि करवायो। और पीतांबर काछनी सिद्ध करवाऐ। और सिद्ध करवाइकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीगोवर्द्धन नाथजी कौ सिंगार किऐ। सो श्रीठाकुरजी बहुत सुन्दर दर्सन दिऐ। और श्रीआचार्यजी महाप्रभू रामदास सों कहे जो नित्य सवारें तुम गोविन्द कुण्ड में स्नान करिकें एक जल को पात्र भरिलाइयो और श्रीठाकुरजी कों स्नान कराईयो। पाछें अंग वस्त्र करिकें यह सिंगार जो हमनें कियो हैं सो धरियो। ऐसे नित्य करियो। और जो कछू भगवद इच्छातें तो कों प्राप्त होइ

सो नित्य भोग धरियो । तातें तू निर्वाह करियो । और दूध दही माखन तो सब ब्रजवासी भोग धरत ही हैं । और श्री आचार्यजी महाप्रभू सधूपांडे मांनिकचंद पांडे और आन्यौर में जो सब सेवक भए हते तिन सबन सों कही जो हमारो यह सर्वस्व हैं । इनकी तुम सब नीकी भांतिसों सेवा करनी । चौकी पहरा कोऊ उपद्रव होइ तो सब भांतिसों सावधान रहनों । ऐसें आज्ञा देकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप व्रजयात्रा कों पधारे । सो संकेत बट के नीचें श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक हैं । सो प्रसिद्ध है । सब कोऊ वैष्णव भोग धरत हैं ।

सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें विचारे जो या समें दही होइ तो श्रीठाकुरजी कों समर्प्यें । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मनकी । प्रभूदास जलोटा क्षत्री ने जानी । सो तत्काल उठे । सो गाम में गए । उहांतें दही लेकें वाकों मुक्ति दीनी । सो वार्ता में प्रसिद्ध हैं ।

भावप्रकाश—सो मुक्ति दीनी ताको कारण यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मनमें इह इच्छा भई जो मेरे सेवकन को महात्म्य जगत में प्रगट करूं । यामें यह सिद्ध भयो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू के सेवक में यह सामर्थ हैं । जो मुक्ति देत हैं । जो ब्रह्मादिकनसों न दीनी जाइ । और आगें भगवदीनकी सामर्थ प्रगट करेंगे जो भगवदी भक्तिहू देत हैं । सो गदाधरदासजी नें माधवदास कों दीनी । ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने सेवकन को महात्म प्रगट कियो ।

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धन की तरहटी

में गोवर्द्धन पूजा की ठौर उहां एक छोंकर को वृक्ष है तहां श्री आचार्यजी महाप्रभून की बैठक है तहाँ एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप पोढे हुते। तहां और दामोदरदासजी बैठे हुते। तिनकी गोद में श्रीमस्तक हुतो। इतने में श्री गोवर्द्धननाथजी आप पर्वत ऊपरतें पधारे। तब दामोदरदासजी दूरितें हाथसों वरजे। तब श्री गोवर्द्धननाथजी उहांई ठाढे हो रहे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू जागि परे। और उठिकें कही जो आप पधारो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो तुम्हारो सेवक वरजे हैं जो आगें मति आओ। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे दमला क्यों बरजत है ? तब दामोदरदासजी कहे जो महाराज आप जागि परो ? ताके लिऐं मैं वरज्यो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदास सों खीजे। तब श्री गोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होइकें कहे जो इनसों कछू मति कहो। इनकों ऐसें ही चहिऐ। सेवक को धर्म ऐसें ही हैं। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भऐ। दामोदरदासजी ऐसे भगवदी कृपा पात्र हुतो।

तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सों श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो मोकों नूपुर बनवाइ देऊ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू वेग सुवर्ण देकें एक वैष्णव कों मथुरा पठायो। जो याके वेगि नूपुर बनवाइ कें लेआव। तब वह वैष्णव नूपुर बनवाइ कें सिद्ध कराइकें ले आऐ। सो नूपुर श्रीआचार्यजी महाप्रभू लेकें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों समर्प्यें। सो वे नूपुर बहुत सुन्दर बाजें

श्रीगोवर्द्धननाथजी वहुत प्रसन्न भए। तेसो तो मुकट काछिनी को सिंगार। और तैसोई नूपुर को सब्द। जो दर्सन करे ताको मन हरिलें। और व्रजवासीन के लरिकान सों खेलें। जैसें वे लरिका खेलें। तैसें उनके संग अनेक क्रीडा श्री गोवर्द्धन-नाथजी हू करें।

सो सधूपांडे के पास एक व्रजवासी हुतो। वाके घर में समृद्धि बहुत हुती। भेंस वहुत गाइ बहुत। वाके कुटुम्ब बोहोत बेटा नाती बहुये। सो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभून की सरनि आऐ। सो वे श्रीआचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह तें कैसे भगवदी भए? जिनके घर श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारे।

सो वाके घर में एक डोकरी हुती। सो बहुत वृद्ध हुती। सो सवारें वाकी बहू सब बिलौना करें। सो सगरो माखन भेलो करिकें वा डोकरी के आगें लाइ धरें। तब डोकरी जितने वाके घर में लरिका बहू हे तिन सबनकों वो डोकरी सवारें कलेउ देहि। रोटी ऊपर माखन धरिकें और दही और वा डोकरी कों दृष्टि बल थोरो हुतो। सो जो लरिका आवे ताको नाम पूछि पूछि कें देहि तब उन लरिकान में श्री गोवर्द्धननाथजी हू जांइ। सो कहें अरी मोहू कों देरी तब वह डोकरी माखन रोटी दही देहि। और पूछे जो अरे तेरो नाम कहा है? तब श्री गोवर्द्धननाथजी कहें जो मेरो नाम देवदमन है। वो डोकरी तब कहे ज़ो अरे तू पर्वत ऊपर रहत हैं। सोई है? तब श्री गोवर्द्धननाथजी कहें हां! तब वो डोकरी कहे जो देवदमन तू

मेरे घर नित्य आइकें कलेउ करि जैयो। वो डोकरी श्री-आचार्यजी महाप्रभूनकी कृपातें। ऐसी भाग्यशील भई। जिन पे श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसो अनुग्रह करें।

भावप्रकाश—अनुग्रह काहेतें करे जो बे सूधी बहुत। कछू प्रपंच में समझें नहीं। और भक्तिमार्ग की तो यह रीति है जो प्रपंच की विस्मृति होइ तो श्री ठाकुरजी अनुग्रह करें। और उनके तो प्रपंच स्वप्न ही में नहीं। तातें वे परम उत्तमाअधिकारी हैं। तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी उनसों साक्षात् बातें करें।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी सों आज्ञा मांगिकें आप श्री गोकुल पधारे। सब वैष्णव संग है। आपके परम कृपा पात्र सेवक दामोदरदासजी प्रभृति सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप मन में विचारें जो पृथ्वी पावन कों चलें तो आछो।

भावप्रकाश—क्यों जो दैवी जीव तो इकठौर हैं नांही। सर्वत्र देशान्तरन में हैं।

ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासजी सों कहे। वार्ता द्वितिया ॥ २ ॥

तब श्री आचार्यजी महाप्रभू। एक समें श्री गोकुल में गोविन्द घाट के ऊपर एक चोंतरा है। ताके ऊपर छोंकर को वृक्ष है। ताके नीचें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजे हैं। सब सेवक पास ठाढे हैं। इतने में एक वैरागी आयो। सो आइकें वानें छोंकर की डारसों अपने सालिग्राम को बटुवा हुतो

सो लटकाइ दीयो। और कपड़ा उतारिकें श्रीजमुनाजी के तीरपे धरयो। और आप स्नान करिवे पेठ्यो इतने में स्नान करिकें जब आयो तब देखें तो उहां सालिग्राम को बटुवा नांही। तब वा वैरागी नें श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो महाराज मेरो इहां बटुवा हुतो सो इहां नांही। काहू आपके सेवक नें लीयो होइ तो मेरो ले दीजिये। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे जो हमारे सेवक तेरो बटुवा काहे को लेइंगे। तू जहां धरयो होइ तहांई देखि। सो इतने में देखे तो सगरो छोंकर बटुवानसों भरयो है। तब वा वैरागी नें। श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कहे जो महाराज यह तो सगरो छोंकर बटुवान सों ही भरयो है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो तेरो एक उतारिले। सो इनमें तें उतारिबे लग्यो। तब देखे तो एक ही है। सो वानें उतारि लीयो। वा वैरागी कों श्री-आचार्यजी महाप्रभू ऐसो महात्म्य दिखाए परि वह दैवी जीव तो हतो नहीं जो सरन आवे। जो दैवी जीव होतो तो सरन आवतो। इतनों श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपनों महात्म्य अपने सेवकन कों दिखाए। और छोंकर को स्वरूप प्रगट किए जो इह छोंकर ऐसो है।

और जहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है। तहां छोंकर कौ रूख है। और श्री गोकुल की बैठक ऊपर जो छोंकर है। ताको नाम ब्रह्म छोंकर है। या छोंकर के पात-पात भगवद्रूप हैं। तहां तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह

विचारे जो होइ तो प्रथम कासी चलें। कासी में मायावादी बहुत हैं। और सिवकी पुरी है। सो सब जीव भगवान तें बहिर्मुख हैं। तातें कासी चलिकें मायावादीन कों जीतें और मायावाद को खंडन करें। तब सब वैष्णव संग लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कासी पधारे। सो मणिकर्णिका ऊपर श्रीगङ्गाजी के तीर आप स्नान करिकें तीर पे विराजे। ता समें उहां बड़े बड़े पण्डित स्नान करिवे कों आऐं हुते। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्सन उनकों भऐ सो वे जानें जो ए बड़े पण्डित हैं। तब वे चरचा करन लागे सो चरचा में सबनकों निरुत्तर किऐ मायामत को खंडन किऐ। भक्तिमार्ग स्थापन कीऐ।

ता समें पुरुषोत्तमदास सेठ क्षत्री हुते सो उहां के नगर सेठ हुते सो ये मणिकर्णिका पे स्नान करन आऐ। तब उहां इनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन भऐ। सो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्सन भऐ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों साष्टांग दंडवत कीऐ। और विनती करी जो महाराज मो पर अनुग्रह करिकें मोकों अपनो करिये! तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू इनकों नाम ब्रह्मसम्बन्ध करवायो। तब सेठ पुरुषोत्तम दास विनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिऐ। मेरो गृह पावन करिऐ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अनुग्रह करिकें सब भगवदी संग लेकें सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पधारे। तब पुरुषोत्तमदास सेठ के घर के सब सेवक भऐ। सबनकों आप

अंगीकार किऐ और श्री मदनमोहनजी ठाकुर सेठ पुरुषोत्तम दास के माथे पधराऐ। और वाही समें सेठ पुरुषोत्तमदास कों सेवा की सब रीति सिखाई। सेठ पुरुषोत्तमदास सपन्न बहुत हुते। सब पात्र सामग्री सब सिद्ध करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पाक करिकें श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्ये। पाछें आप भोजन करिकें सेठ पुरुषोत्तमदास के घर विराजे उहां ही आप रहे। सो पुरुषोत्तमदास सेठ के घर में श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है गई। सो सब पण्डित उहां ही चरचा करिवे कों आवें। सो बड़े बड़े स्मार्त। मायावादी। उहां बहुत सो नित्य आइकें झगरो करें सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सबनकों निरुत्तर करिदेंहि। तब एक दिन श्री आचार्यजी महाप्रभू विचारे जो यह नित्य उठिकें मायावादी आइकें दुःख देत हैं सो ऐतो बहुत, कौन कौन सों माथो पचाइये। तब एक पत्रावलंवन। श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ग्रन्थ किऐ। सो ग्रन्थ एक पत्रा पर लिखिकें एक वैष्णव कों दिऐ। जो यह पत्र जाइकें विश्वेस्वर महादेव के मन्दिर की भीत सों लगाइयो। सो श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप वा पत्र के नीचे लिखे जो या पत्रकों बांचिकें ता पीछें कोऊ हमसों वाद करिवे आईयो। सो विश्वेस्वर के दर्सन कों तो यहां सब मायावादी आवें। सो पत्र देखें जो जो उनके मन में चिंता सन्देह होइ। तो ताही को वामें उत्तर मिले सो गोपालदासजी गाए हैं वल्लभाख्यानमें।

"पत्रावलंवे पण्डित जीत्या मायिक मत मांतग"।

सो वे पत्रा बांचिकें पाछें कोउ मायावादी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास जांइ ही नहीं। कैसे जैसे श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक विष्णुदास। सो विष्णुदास यह विचारे जो सब मायावादी आइकें श्रीगुसांईजी कों श्रम करिवावें हैं। सो विष्णुदास कों आछो न लाग्यो। सो जो मायावादी आवे कैसोई परिडत होइ। तासों पूछे जो तू क्यों आयो है। तब वे कहे मैं श्रीगुसांईजी सों चरिचा करिवे कों आयो हूँ। ये बड़े पंडित सुने हैं। तब विष्णुदासजी कहे। तुम कहां पढ़े हो। जो वे बतावे ताही कों श्रीआचार्यजी महाप्रभून की कृपा वल सों दूसनि देहि। तब वे परिडत निरुत्तर होइकें जात रहैं। ऐसो पत्रावलंवन ग्रन्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभू कीये। जो जासों वहिरमुखन सों संभाषण ही करनों न पडे।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोत्तमदास के घर में। अपनी बैठक में विराजे। सो सेठ पुरुषोत्तमदास के बहुत समृद्धि सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून की सेवा भली भांति सों करी। जैसे श्रीमदनमोहनजी की सेवा करें। तैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी की करें। तैसी ही रीति सों जे श्रीआचार्यजी महाप्रभून के संग भगवदी हैं दामोदरदासजी कृष्णदासजी मेघन प्रभृति। बहुत भगवदी सङ्ग हुते। तिनहूँ की सेवा आछी भांति सों करें। सेठ पुरुषोत्तमदास के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभून को बहुत अनुग्रह। जो तीन वस्तु चहियें सो तीनों वस्तु श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों दीनी भगवत्सेवा, गुरुसेवा

और भगवदीन की सेवा। सो कासी में जे दैवी जीव हुते ते सब श्रीआचार्यजी महाप्रभून की सरनि आऐ।

सो कासी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कितनेक दिन विराजे। ऐसे में जन्माष्टमी को उत्सव आयो। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मन में विचारे जो अवतार तो श्रीठाकुरजी के सभी हैं। परि कृष्णावतार सब अवतारन को मूल है। सब अवतार इनसों भऐ हैं। श्रीभागवत् में कहे हैं।

"एतेचांशकलापुंशः कृष्णस्तु भगवान्स्वयं"

सो कृष्णावतार हमारो सर्वस्व है। और हमारे सेव्य हैं। और पुष्टिमार्ग इहां ही तें प्रगट भयो है। सो पुष्टिमार्ग कहा जो। व्रजभक्तन को स्नेह सो सब स्नेह को मूल है। सो नन्द-महोत्सव है। श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप प्रगट करिवे की इच्छा कीनी।

भावप्रकाश—काहेतें जो नन्द महोत्सव आप प्रगट करें तो दैवी जीव जाने जो नन्दरायजी के घर ऐसो उत्सव प्रगट भयो। सो शुकदेवजी तो राजा परीक्षतसों कहिकें बताऐ और श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो अपुने दैवी जीवन कों साक्षात् नन्द महोत्सव के दर्सन करावाये। कैसें? श्री ठाकुरजी तो आप पालनें झूलें। श्री रानीजी झुलावे व्रजभक्त श्रीनन्दरायजी तथा गोप सब नृत्य करें। सो ऐसो उत्सव सेठ पुरुषोत्तमदास के घर श्री आचार्यजी महाप्रभू आप प्रथम ही प्रागट्य करनों विचारे। काहेतें जो बहुत समृद्धि बिना। यह उत्सव बनि न आवे। सो सेठ पुरुषोत्तमदास के घर जो वस्तु चहियें। सो सब सिद्ध हैं।

सो श्री मदनमोहनजी के आगें नन्द महोत्सव प्रथम ही

भयो। सो यह उत्सव श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोतमदास के घर प्रगट किऐ। सेठ पुरुषोतमदास के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभून को ऐसो अनुग्रह है। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोतमदास कों नाम देवे की आज्ञा दीनी जो हम तो फेरि जब भगवत इच्छा होइगी तब इहां आवेंगे। और दैवी जीव तो बहुत तिन सबन को अंगीकार करनों। तातें सेठ पुरुषोतमदास कों नाम देवे की आज्ञा दीनी आज्ञा देकें श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप श्री जगन्नाथजी पधारे। वार्ता तृतीय ॥ ३ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दैवी जीवन को उद्धार करनों। और पृथ्वी कों पावन करनी। तीर्थन कों सनाथ करनों। मायामत को खंडन करनों। ताके लिऐ आप श्रीजगन्नाथरायजी पधारे सो श्रीजगन्नाथरायजी बड़ी पुरी है। पुरुषोतम चेत्र हैं सब पृथ्वी में प्रसिद्ध है और पूजा को बड़ो प्रकार है। ये मायावादीन सों सब देश आछादित हुतो। सो आप श्री-आचार्यजी महाप्रभू पुरुषोतम चेत्र पधारे। ता दिना एकादशी को दिन हुतो। सो आप जब पुरी में पधारे मन्दिर के निकट। तब एक कोउ महाप्रसाद ले आयो। सो उहां महा-प्रसाद को महात्म अधिक हैं। श्रीठाकुरजी के दर्सन तो पाछें और महाप्रसाद प्रथम। श्रीआचार्यजी महाप्रभून की तो यह प्रतिज्ञा है जो एकादसी के दिन तो जलहू न लेनों। और वानें तो आइकें महाप्रसाद दियो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपु

श्रीहस्त में लिए सो आप तो साक्षात् ईश्वर । बेद में पुराण में जहां जहां महाप्रसाद को महात्म्य हुतो । सो वा समें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप महात्म्य के श्लोक श्रीमुखते कहिवे लागे । सो कहते कहते एकादसी को दिन और रात्रि सब व्यतीत होइ गई । जब सवारो भयो । तब स्नान सन्ध्या की कछू मन में बाधा न राखी । और महाप्रसाद लिए । ता पाछें श्री जगन्नाथरायजी के दर्सन कीये । जो पुरुषोतमपुरी में श्री आचार्यजी महाप्रभून को ऐसो महात्म्य देखिकें सब कोउ कहे जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं । मनुष्य,में तो यह विद्या न कहूँ देखी न सुनी । च्यारो वेद पुरान सब सास्त्र जिनके जिव्हाग्र । ऐसें सब कोउ कहे । सो यह समाचार उहां के राजानें सुनें । सो सुनिकें राजा श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन कों आयो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन करिकें राजा बहुत प्रसन्न भयो । और कह्यो जो मेरो बडो भाग्य है जो में यह दर्सन पायो । और श्रीआचार्यजी महाप्रभून की विद्या और इनको सौन्दर्य तेज प्रताप देखिकें राजानें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी जो महाराज इहां हमारे देश में ब्राह्मणन को सदा आपस में क्लेश चल्यो जात हैं । सो ये मायावादी तो अपुनी खेंच करे हैं । सो ये नित्य लरे हैं । सो आप साक्षात् ईश्वर हो । यह ब्रह्म क्लेश आप मिटाय देऊ । आप बिना ऐसी काहू की सामर्थ नांहीं । जो और काहू सों यह झगरो निबडे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हां । जैसें तुम्हारो मनोर्थ है

सो श्रीठाकुरजी सब सिद्ध करेंगे। प्रभू सर्व सामर्थ सहित हैं। और भक्त मनोरथ पूरक हैं। तब यह बात सुनिकें राजा बहुत प्रसन्न भयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो जितने हैं तुम्हारे इहां ब्राह्मण तिन सबनकों एकत्र करो। और उनमें जो बड़े बड़े पण्डित होइ सो आइकें हम सों चरचा करें। तब राजा सब ब्राह्मणन कों बुलवायो। सो सब आइकें श्रीजगन्नाथ-रायजी के मन्दिर में भेले भए। वैष्णव स्मार्त और बड़े बड़े मायावादी। सो राजाहू आइकें बैठ्यो। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप मन्दिर में पधारे। सो सबन कों ऐसें दर्सन भये जो साक्षात् सूर्य के अग्नि हैं। ऐसें तेजोमय दर्सन भयो। उन ब्राह्मणन में जे बड़े बड़े पण्डित हुते ते श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों वाद करन लागे। सो जों जो बे युक्ति लावें। सो श्री आचार्यजी महाप्रभू उनकी सब युक्ति को खंडन करें। सो वे सब निरुत्तर होइ जाइ। सो वे ब्राह्मण बहुत हुते। सो सवारे वे बैठे। सो तीनि पहर तांई श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विराजे। और राजाहू बैठ्यो रह्यो। परि झगरो चुके नाहीं। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू ब्राह्मणन सों कहे जो तुम्हारे जो वाद हैं। ताको जो श्रीजगन्नाथरायजी कहे। सो प्रमाण। तब राजा और ब्राह्मण कहे जो महाराज श्रीजगन्नाथरायजी कैसें कहेंगे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे। जो श्रीजगन्नाथ रायजी आरोगत कैसे हैं तुम तो भोग धरत हो। तैसें ही श्री जगन्नाथरायजी के आगें कागद कोरो और लेखन द्वात

धरो। जो मार्ग सांचो होइगो सो श्री जगन्नाथरायजी लिखि-देइंगे। सो यह बात सुनिकें बड़ो आश्चर्य भयो। और कागद लेखनि द्वात मंगवाए। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप राजासों कहे जो मन्दिर में जे श्रीठाकुरजी के सेवक हैं। पंड्या जे होइ तिन सबन कों वाहिर काढो। और यह कागद लेखन द्वात तुम जाइकें श्री ठाकुरजी के आगें धरि आओ। और किवार दे देऊ। और तुम उहां किवार के आगें बैठो। जब हम कहें तब किवार खोलियो। सो जा भांति श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे ताही भांति सों राजा ने कीयो। और राजा आप किवार के आगें बैठ्यो। जब श्रीजगन्नाथरायजी लिखि चुके तब श्री आचार्यजी महाप्रभू राजा सों कहे जो अब किवार खोलो। तब राजा किवार खोलिकें देखे तो श्री जगन्नाथरायजी के आगें कागद लिख्यो धरयो है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजा सों कहे जो कागद ले आवो। तब राजा कागद ले आयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो सब ब्राह्मणन कों दिखावो। तब सब ब्राह्मण कागद बांचे। सो श्री जगन्नाथरायजी के हस्ताक्षर देखिकें सब प्रसन्न भये। सब कहे जो श्रीजगन्नाथ रायजी लिखे सो सांच। सो वचन हमारे माथे पर। तब श्री आचार्यजी महाप्रभून की सब कोउ स्तुति करन लागे। और कहे जो धन्य ये जिनकी आज्ञा में श्रीठाकुरजी ऐसें हैं। जो ये कहें सो करें। वैष्णव मारग सत्य भयो। और मायामत को खंडन भयो। और कह्यो जो महाराज आप साक्षात् ईश्वर हो।

यह ब्रह्म क्लेस आप बिना और काहू सों न मिटतो।

तब इतने में एक ब्राह्मण बड़ो मायावादी हुतो। सो बोल्यो जो हमकों तो यह लिख्यो प्रमान नांही। हम तो जो परंपरा करत हैं सो करेंगे। तब श्री आचार्यजी महाप्रभू राजा सों कहे जो सास्त्र की मर्यादा ऐसे हैं जो जाको भगवद् वाक्य पे विस्वास न होइ ताकों म्लेछ जानिऐ। सो ताकों तुम राजा हो निश्चें करो। याकी माता सों पूछो जो यह कौन को वीर्य है। ब्रह्मवीर्य तो यह न होइ। तब राजा कों हूँ बुरो बहुत लाग्यो। सो वाकी माता कों बुलायो। और एकांत में पूछे जो सांच कहु। यह तेरो बेटा कौनतें उत्पन्न भयो है। नांतर तेरे प्राण जांइगे। ऐसो वाकों भय दिखायो। तब जो हुतो सो वानें वृतांत कह्यो। तब राजा और सब ब्राह्मण एही कहे जो साक्षात् ईश्वर हैं। और श्रीजगन्नाथरायजी आप लिखे सो श्लोक—

"एकं शास्त्रं देवकी पुत्रगीतमेकोदेवोदेवकी पुत्रएव। मंत्रो-प्येकंतस्यनांमानियानिकर्मोप्येकंस्तस्यदेवस्य सेवा" ॥ १ ॥

यह श्लोक श्रीजगन्नाथरायजी आप श्रीहस्त सों लिखे। सो याको अर्थ श्रीठाकुरजी के श्रीमुख के वचन जो भगवद्गीता है सो प्रमाण। सब देवन में जो मुख्य श्री कृष्ण। सब देवतान के अनेक मंत्र हैं। परि जीव तो कृतार्थ। एक भगवन्नाम तें ही होय। और जीव तो अनेक देवतान की पूजा करे हैं। परि आवागमन काहू को न मिटे। सब संसार में ही भटके। और जीव कों भगवत्प्राप्ति तो एक भगवत्सेवा ही तें होइ। ऐसें

वैष्णव मारग श्रीजगन्नाथरायजी स्थापन किए। जो श्रीकृष्ण के भजन ही सों यह जीव कृतार्थ होइ। और काहू भांति सों न होइ। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू भक्ति मार्ग स्थापन किए। मायामत को खंडन किए। सो ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून कौ महात्म्य देखिकें जे दैवी जीव हुते ते शरण आए। जिनके लिए श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हैं। सो कछुक दिन उहां रहिकें पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पुरुषोतम क्षेत्र तें आगे। पृथ्वी पावन करिवे कों पधारे। वार्ता चतुर्थी ॥ ४ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दक्षिण देश कों पधारे। सो सब भगवदीय दामोदरदासजी, कृष्णदासजी मेघन, प्रभृति और सब वैष्णव संग हे। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हैं। सो एक दिवस में मार्ग में जात देखे तो एक बड़ो अजगर मरयो परयो है। और वाकें लक्षावधि चेंटा लगे हैं। श्री आचार्यजी महाप्रभू सो देखे। सो देखिकें आप कछू बोले नांही। सो और दिना तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप मार्ग में पधारते कथा वार्ता करत चलते। सो वा दिना श्रीआचार्यजी महाप्रभू कछू बोले नांही। जहां उतारो हुतो तहां आप पधारे। सो तहां स्नान करिकें पाक सिद्ध किए। श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप भोजन किए। परि काहू सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू बोले नांही। तब दामोदरदासजी बिनती करी जो महाराज आपके चरणारविंद सों ए सब सेवक लगे हैं। ए सब अपुनों घर वार कुटुम्ब छोडिकें महाराज के

साथ आऐ हैं। सो ए अब आपके बचनामृतनसों सीचे बिना कैसें जीवेंगे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो दमला तें सवारे वह अजगर देख्यो ? तब दामोदरदास कहे जो हां महाराज में देख्यो, मरयो हुतो । और बाकों चेंटा लगे हुते । तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो यह अजगर पिछले जन्म में महन्त हुतो । और याने सेवक बहुत ही किये हे सो उदरार्थ जो मेरी जीवका चले । और उनके कृतार्थ करिबे की तो सामर्थ्य न भई। काहेतें जो भगवत्सेवा। भगवन्नाम परायण होइ। तो जीव कृतार्थ होइ । सो यह तो उदर भरिबे के लिऐं महन्त भयो सो मरे पाछें आप तो अजगर भयो। और वे सब चेंटा भए हैं। सो याकों खात हैं। और कहत हैं जो अरे पापी। तामें उद्धार करिबे की सामर्थ्य नाही हुती तो हमकों सेवक काहेकों कीयो ? हमारो जनमारो वृथा काहेकों खोयो ? सो वाकों देखिकें मोकों मनमें बहुत ग्लानि आई। तब दामोदरदासजी विनती कीये जो महाराज ऐसे आप कहा बिचारत हो। आप तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम हो। आपके नाम कों जो जीव एक वेरहू स्मरण करेगो ताको सब पाप भस्म होइ जाइगो। आप ती साक्षात् अग्निरूप हो। अग्निके संबंध ते कछू दोष रहत है ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भये। और श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह वार्ता काहेके लियें प्रगट करी जो जीव सरण जाइ। सेवक होइ सो वेचारकें होइ । तातें गुरु एक वल्लभाधीशजी हैं ।

श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी महाप्रभून कौ नाम कहे हैं जो।

"श्रीकृष्ण ज्ञान दो गुरु"

सो ऐसो सिद्धान्त प्रगट करिकें ? श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप आगें पधारे।

सो श्रीद्वारिका श्रीरणछोडजी के दर्सन कों पधारे। सो मार्ग में गुजरात पधारे । सो वैष्णव को समाज साथ बहुत हतो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपनो महात्म्य प्रगट करिवे के लिऐं, अपनों ऐश्वर्य दिखाइबे के लिऐ, श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चकडोल में विराजे। सो गुजरात के देसाधिपति के गोख नीचे व्हैकें आप पधारे। सो वह गुजरात को देसाधिपति महादुष्ट हुतो। धर्म को द्वेषी हुतो। सो वा देसाधिपति के आगें असवारी बैठिकें निकस न सके। सो ऊपरतें खोजा की दृष्टि परी। तब वाने कही जो देखिये साहिब ! देखिये तो कैसी असवारी जाइ है ? तब वा देसाधिपतिनें कह्यो जो अरे मूरिख ! तू मोहि आगि ते लरावत है ? तेरें मोंसों कछू वैर है कहा ? यह तो अग्नि है। मोकों भस्म करि डारे। तोकों दीसत नाही ? ता समें देसाधिपति कों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन साक्षात् अग्नि को पुंज। तेजोमय से भये। सो देखिकें ड़रप्यो।

पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू उहां ते द्वारिका कों पधारे। सो मारग में गोविंददुबे सेवक भए । सो बे गोविंददुबे बहुत

पण्डित हुते। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कथ कहे। तब गोविंददुबे श्रोता होइ बैठे। और नवरत्न ग्रन्थ श्री आचार्यजी महाप्रभू इनही के लिए किए। काहेतें जो गोविंददुबे एक समें विज्ञप्ति कीनी जो। महाराज मेरो मन सेवा में नांहि लगे हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेवा में मन लगिवे के लियें। नवरत्न ग्रन्थ लिखिकें दिऐ। और आप श्रीमुखते कहे जो यह ग्रन्थ को पाठ करो। तुम्हारो मन सेवा में लगेगो। गोविंददुबे कों जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अंगीकार किऐ हैं। सो श्रीरणछोडजी साक्षात् गोविंददुबे सों बातें करे हैं। सो गोविंददुबे तो सब वैष्णवन के ऊपर अनुग्रह करिबे के लिऐ। श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी जो। वैष्णव नवरत्न को पाठ करेगो ? ताकी सर्व चिंता निवर्त होइगी। चिंता है सो महा दोष है। चिंता सो भगवन्नामको, भगवत् सेवाको, वा जीव कों अधिकार ही नहीं। तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपुने सेवकन की चिंता दूरि करिवे के लिऐ नवरत्न ग्रन्थ प्रगट किऐ। गोविंददुवे के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभून कौ ऐसो अनुग्रह। ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू उहांते द्वारिका पधारे। तब गोविंददुबेहू श्रीआचार्यजी महाप्रभून के साथ द्वारिका आऐ। सो एक दिवस श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिका में आप कथा कहत हुते। सो सब सेवक पास बैठे हुते। दामोदरदासजी हरसानी कृष्णदासजी मेघन। गोविंददुबे। राणाव्यास। रामदासजी। औरहू बहुत भगवदी हुते। और

श्रीरणछोडजी के सेवक बहुत । सो ता समें कथा में सब रसा-
विष्ट भये । जैसें चन्द्रमा कों चकोर देखे । तैसें सब कोई श्री-
आचार्यजी महाप्रभून कों श्रीमुख देखें । ऐसो श्रीआचार्यजी
महाप्रभून को नाम है जो ।

"श्रीभागवत्पीयूष समुद्रमथनक्षमः"

सो श्रीभागवतरूपी अमृतके समुद्र में सब भगवदीन कों
श्रीआचार्यजी महाप्रभू मग्न करि दिए । काहूकों कछू देहा-
ध्यास न रह्यो । ऐसी रीतिसों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कथा
कहत हुते । सो ऐसे में एक घटा उठी सो सब आकास घटा
सों छाइ गयो । सो जब बूंद आइवे लगी, तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभू श्रीहस्त सों बरजे । ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू
विराजे हुते । और जहां लों सब वैष्णव बैठे हुते तिनकी
दूरि दूरि च्यारो आडी मेह बरसे । और बीच में एक चक्र सो
रहि गयो । तहां एक बूंदहू न परी । ऐसें वर्षा बहुत भई । सो
गोविंददुबे श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी जो ?
महाराज हमतो आपकों साक्षात पूर्णपुरुषोत्तम जानें हैं ।
आपकी माया ऐसी है । जो एक छिन में अनेक ब्रह्मंड को
रचे हैं । और नाश करे हैं । सो आप हमकों ऐसो काहे कों
दिखावत हो । हम तो आपको स्वरूप आछें जांनत हैं ! काहेतें
जो आप अनुग्रह करिकें दिखाए हो । तातें नांही तो आपको
स्वरूप तों ऐसो है जो बेदहू नेति नेति कहे हैं । तातें जीव
कहा जो जानें ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो

मैं कछू वर्षा याके लियें तो नांही बरज राखी जो तुम मेरो महात्म्य जानों । कथा कहत में उठनों परतो । ताके लिऐ ऐसें किऐ । उठे पाछें फेरि ऐसो रसावेश होइ के न होइ । तब भगवदी सब बहुत प्रसन्न भऐ । सो द्वारिका में श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक बहुत बहुत भऐ । पृथ्वी में औरहू बड़े बड़े भगवद्धाम हैं । श्रीजगन्नाथरायजी, श्रीरङ्गनाथजी, श्रीलक्ष्मणजी, श्रीबद्रीनाथजी, परि तामें श्रीद्वारिकाजी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपुनी सत्ता राखी । तबतें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ही सेवक श्रीरणछोडजी की सेवा करे हैं । और श्रीआचार्यजी महाप्रभून की सत्ता जानिकें श्रीगुसांईजी छै बेर श्रीद्वारिका पधारे ।

ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिका तें नारायणसर पधारे। सो मारग में मोरवी में दोइ भाई पुष्करणां ब्राह्मण रहते । सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मोरवी पधारे । तब वे दोउ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सरण आये सो वे दोउ भाई दैवी जीव हुते। तिनके लियें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हुते । सो एक को नाम तो बाला हुतो । और दूसरे को बादा हुतो । सो बाला को नाम तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बालकृष्ण धरे । और बादा को नाम बादरायण धरे । ता पाछें उन दोउ भाई नें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी जो महाराज अब हमारो निर्वाह कैसें करें ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे । जो तुम भगवत्सेवा करो । तब उननें कहे जो

महाराज सेवा हमकों पधराइ दीजे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो तुम एक वस्त्र लेआवो। तब वे वस्त्र ले आए। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चरणारविंद सों कुंकुम लगाइकें। वा वस्त्र ऊपर दोऊ चरणारविंद धरे। सो उनकों अनुग्रह करिकें अपने चरणारविंद की सेवा दीनें। सो वे दोउ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभून की कृपातें बड़े भगवदी भए। पाछें उहांतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सब वैष्णवन कों संग लेकें फेरि आप ब्रजकों पधारे। वार्ता षष्टम् ॥ ६ ॥

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रजकों चले। ता समें श्रीगोवर्द्धननाथजी विचारे जो मन्दिर तो छोटो। और समृद्धि तो बहुत भई। बड़े मन्दिर बिना सेवा को मंडान कैसें होइ। तब एक पूरणमल्ल त्तत्री जवल अंबालय में रहते। सो पूरण-मल्ल की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो। सो वह पूरणमल्ल दैवी जीव हुतो। उनको द्रव्यहू दैवी हुतो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वाके घर पधारे। सो वासों श्रीगोवर्द्धननाथजी स्वप्न में कहे जो हम श्रीगोवर्द्धन पर्वत में तें प्रगट भए हैं। देवदमन हमारो नाम हैं। सो तू आइकें हमारो मन्दिर श्रीगोवर्द्धन परवत ऊपर बनवाइ। सो स्वप्न में पूर्णमल्ल कों साचात् दर्सन भए। सो कोटिकंदर्पलावण्य सौंदर्य वाकों दर्सन भए। सो सवारें भए पूर्णमल्ल कों चटपटी लगी। सो सब काम काज छोडिकें पूरणमल्ल श्रीगोवर्द्धन आए। तब उहां आइकें पूछे जो इहां देवदमन ठाकुर सुने हैं सो कहाँ हैं? तब कोउ ब्रजवासी हुतो।

तानें बताए जो पर्वत ऊपर हैं । तब पूर्णमल्ल पर्वत ऊपर आइकें दर्सन किऐ । दर्सन करत ही पूर्णमल्ल बहुत प्रसन्न भयो । और मन में कहे जो अनुग्रह करिकें मेरे घर पधारे मोकों दर्सन दिऐ । सो ऐही हैं । श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करि पूर्णमल्ल रामदासजी चौहान सेवा करत हुते । तिनसों पूछे जो इहां सेवा तुम ही करत हो । के कोउ और ही सेवक है ? तब रामदासजी कहे जो इनके सेवक तो बहुत हैं । ऐ नीचें आन्यौर गाम है । इहां जो जो रहत हैं ते सब सेवक ही हैं । सब सेवा करत हैं । दूध दही माखन जो चहिये सो ऐ सब कछू लावत हैं । इनकों श्रीआचार्यजो महाप्रभून की आज्ञा है । इनकों सौंपिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे हैं । तब पूर्णमल्ल नें पूछी जो वे कौन हैं । तब रामदासजी कही । जो जिनके ऐ देवदमन ठाकुर हैं । जिनके लिऐं ऐ प्रगट भऐ हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे हैं । तब पूर्णमल्ल नें रामदास सों कही जो मोकों इननें आज्ञा दिऐ हैं जो तू मेरो मन्दिर बनवाइ । सो में इनको मन्दिर बनवाइबे के लिऐं आयोहूँ । तातें तुम मन्दिर बनवाइवे को उद्यम करो । तब रामदासजी कहे जो या गाम के मुकद्दम सधूपांडे हैं । तुम उनसों कहो । तब पूर्णमल्ल सब समाचार सधूपांडे सों कहे । तब सधूपांडे नें उत्तर दियो । अरे भैया ! यह मन्दिर तो मेरो और तेरो बनवायो बनें नांहीं । जिनके ऐ ठाकुर हैं । सो पृथ्वी परिक्रमा कों गए हैं सो अब वे आवेंगे तब जो वे आज्ञा देंइगे

तो मन्दिर बनेगो। तब यह बात सुनिकें पूर्णमल्ल विचारयो जो श्रीठाकुरजी आप मोकों बुलवायो हैं तातें घर तो न जानों। यह निर्द्धार करिकें पूर्णमल्ल आन्यौर में रहे। श्रीआचार्यजी महाप्रभून को मार्ग देखे। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वभाव हैं जो। भक्त विरह कांतर करुणामय डोलत पाछें लागें। और श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा भई मन्दिर बनवाइबे की। तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू वेगि ब्रजमें पाउधारे। सो आइकें श्रीगोवर्द्धननाथजी को दर्सन कीये। और सब वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन करिकें बहुत प्रसन्न भये। पूर्णमल्लहू श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन करिकें बहुत प्रसन्न भए। यों जाने जो एतो साक्षात ईश्वर हैं इनमें और श्रीठाकुरजी में कछू भेद नांही। तब पूर्णमल्ल नें श्री-आचार्यजी महाप्रभून सों बिनती कीनी जो महाराज। मोकों नाम दीजिये। मोकों अपुनों करिये। तब श्रीआचार्यजी महा-प्रभू अनुग्रह करिकें अंगीकार किए। तब पूर्णमल्ल नें श्री-आचार्यजी महाप्रभून सों विनती कीनी और सब वृतांत कह्यो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे हां हम पूछें। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पूछे। तब आज्ञा भई जो मन्दिर सिद्ध करो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूरणमल्ल कों आज्ञा दीनी जो मन्दिर सिद्ध कराओ। तब पूरणमल्ल आगरे ते कारीगर बुलवाए। जा भांति सों मन्दिर सिद्ध भयो। सो पूर्णमल्ल की वार्ता में प्रसिद्ध है।

सो मन्दिर सिद्ध भयो। मन्दिर बहुत बडो भयो श्रीगोवर्द्धननाथजी मन्दिर में विराजे। मन्दिर के ऊपर ध्वजा फहराऐ। अक्षयतृतिया के दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी कों पाट बैठाऐ। सो दर्सन करिके पूर्णमल्ल बहुत प्रसन्न भऐ और कह्यो धन्य यह दिन जो श्रीठाकुरजी जैसें मोकों अनुग्रह करिकें आज्ञा दीनी जैसें मेरो मनोर्थ सिद्ध भयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूरणमल्ल ऊपर बहुत प्रसन्न भये। और श्रीमुखतें कहे जो पूरणमल्ल कछू मांगि। जो मांगे सोई देऊं। तब पूरणमल्ल नें कही जो महाराज! मेरो मनोर्थ यह है। जो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अरगजा मैं समर्पूं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनुग्रह करिकें कहे। जो हां समर्पि। जो तुम्हारो मनोर्थ होइ सो पूर्ण करो। तब पूरणमल्ल श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अरगजा समर्प्यो। सो अरगजा समर्पिकें पूरणमल्ल बहुत प्रसन्न भये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूरणमल्ल ऊपर बहुत प्रसन्न होइकें अपनों ओढ्यो उपरना प्रसादी पूरणमल्ल को दीऐ। तब पूरणमल्ल श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों साष्टांग दंडवत करि आज्ञा मांगिकें अपने घर अंबालय कों गऐ।

पाछें रामदासजी की देह छुटी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सधूपांडे कों बुलवाये। और श्रीआचर्यजी महाप्रभू सधूपांडे कों आज्ञा दीनी जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को मन्दिर तो बड़ो सिद्ध भयो। सो ऐसे बड़े मन्दिर में सेवक हू बहुत चहिऐं। तातें तुम

ब्राह्मण हो। और यह मर्यादा है जो भगवत्सेवा ब्राह्मण करें तो आछो। तब रुधूपांडे नें कहे जो महाराज हमारी जातिके तो कछू आचार विचार जानत नांही तातें महाराज सेवा में तो कोई समभत होइ। ताकों राखिऐं। तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू विचारे जो श्रीकुण्ड (राधाकुण्ड) में ब्राह्मण हैं। सो वैष्णव हैं। कृष्णचैतन्य के सेवक हैं। इनकों राखिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू उन बंगाली ब्राह्मणन कों बुलाये सेवा की आज्ञा दीनी। सेवा की रीति भांति बताई सिखाई सब और श्रीगोवर्द्धननाथजी को नित्य को नेग बांध्यो। इतनी सामग्री श्रीठाकुरजी नित्य अरोगें और श्रीआचार्यजी महाप्रभू बंगालीन सों कहे जो इतनों नेग तो तुमकों नित्य सधूपांडे पहुँचाइ देहिंगे। और अधिक आवे तो अधिक उठाईयों और या नेग में ते तो मति घटाइयो और या महा-प्रसाद सों तुम निर्वाह करियो। और ऐसें श्रीआचार्यजी महा-प्रभू सेवा की आज्ञा दीनी और कहे। जो इनको समें तुम कबहू मति चूकियों। भोग जो भगवद इच्छातें आइ प्राप्ति होइ सो धरियो। परि ठाकुरजी कों अबार न होइ।

एक समें श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों कहे जो मोकों गाइ ल्याइ देऊ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे हां सिद्ध हैं। तब सधूपांडे कों बुलाइकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसें आज्ञा दिए हैं जो मोकों गाइ लाइ देऊ। सो यह सुवर्ण को वेढा है। सो

याकी गाइ आवे । सो आनि देऊ । तब सधूपांडे नें कही जो महाराज घर में इतनों गौधन हैं । सो कौंन को है ये गाइ भेंस सब आपकी हैं हम तो तन मन धन सब आपकों सोंप्यो है । हमारो रह्यो कहा है तातें जितनी गाइ आप आज्ञा करो। तितनी गाइ में ले आऊं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सधूपांडे सो कहे जो तुम ल्यावो ताकी तो हम नाही नांही करत। तुम्हारी इच्छा परि मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी नें आज्ञा दीनी जो है । ताके लिए तुम प्रथम तो हमारे या सुवर्ण की तो गाइ ले आवो । तब सधूपांडे प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभून के वा सुवर्ण की गाइ ले आऐ ।

सो गाइ श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगें लाइ ठाढी कीनी तब सधूपांडे तथा और सब ब्रजवासी अपने अपने घरतें कोउ एक कोऊ द्वे गाइ लाइकें श्रीगोवर्द्धन-नाथजी कों भेंट कीऐ । औरहूँ गाइ वैष्णवन के यहां ते बहुत आई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धननाथजी को नाम गोपाल धरे । और श्रीगुसांईजी गोपाल नाम सों गोपालपुर बसाऐ । और भगवदी गाए हैं ।

※ रागपूरवी ※

आगें गाइ पाछें गाइ इत गाइ उत गाइ गोविंदा कों गाइन में बसिवोई भावे । गायन के संग धावे गाइन में सुचिपावे गायन की खुररेंनु हियें लगावे ॥ १ ॥

गाइन सों ब्रज छायो वैकुण्ठ विसरायो गाइन के हेत

गिर कर ले उठावे। छीतस्वामी गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी ग्वालन को भेष किये गाइन में आवे ॥ २ ॥

सो गाइन की बहुत समृद्ध बढी। ग्वाल बहुत राखे। सो वे ग्वाल गाइ चरावन कों जांइ। तब श्रीगोवर्द्धननाथजीहू गाइ चरावन कों जांइ। वन में सो उहां ही छाक आवे। सो श्रीबलदेवजी सब ग्वालन कों बांटे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी सब ग्वालन की मंडली में बैठिकें। आपहू छाक खांइ। श्रीगुसांईंजी छाक वनमें ले पधारे। सो वार्ता में प्रसिद्ध है। गाइन को दूध बहुत होइ। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी दूध दही माखन बहुत अरोगें। ऐसी रीतिसों सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा होइ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू। एक दिवस श्रीगोकुल पधारे। सो गोविंद्घाट ऊपर स्नान करिकें अपुनी बैठक में विराजे। सब भगवदी आगें ठाढे हैं ता समें उहां एक ब्राह्मण आयो। सो वह ब्राह्मण पूजा मारगीय हुतो। सो वह ब्राह्मणउ उहां न्हायो। न्हाइकें अपनी पूजा वानें खोली सो पूजा को साज सब मांग्यो। सो वाके पास एक बंटी हुती तामें एक ठाकुर को स्वरूप हुतो। और एक सालिग्राम हुते सो वह ब्राह्मण पूजा करिवे कों बैठ्यो। धूप दीप नैवेद्य करिकें पाछें वानें फेरि बंटी में ठाकुरजी कों पोढाए। और तिनकी छाती ऊपर सालिग्राम धरे। और बंटी को ढकना दियो ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभून की दृष्टि परी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदास सों कही जो या ब्राह्मण सों कहो जो तेरे सालिग्राम न्यारे धरि।

ठाकुर के उदर पर मति बैठावे। तब दामोदरदासजी वा ब्राह्मण सों कही तब वानें कही जो महाराज अब तो कछू ए ठाकुर हैं नहीं ठाकुर तो में बिसर्जन करि दीयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो अरे भगवत्स्वरूप तो हैं। परि वा ब्राह्मण नें मानी नहीं तब वो अपनो पूजा को साज बांधिकें उठि चल्यो। तब फेरि दूसरे दिन आयो। स्नान करिकें जैसें पूजा करत हुते। तैसें फेरि करिवे लग्यो।

ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सन्ध्या वंदन करत हुते। सब भगवदी पास ठाढे हुते तब ब्राह्मणनें वंटी खोल्यी । देखे तो ठाकुर तो पोढे हैं। और सालिग्राम के टूक टूक व्हैगए। सो देखिकें ब्राह्मणनें बहुत दुःख पायो ? और श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों कहे जो महाराज में काल्हि आपकी आज्ञा न मान्यों। सो मेरे सालिग्राम के टूक टूक व्हैगये बहुत झीकवे लग्यो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो। तू जो फेरि ऐसें न करे तो सालिग्राम आछे होइ जांइ । तब वानें कही जो महाराज। अब में फेरि ऐसें कभूं न करूंगो।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो तू इनके सब टूक टूक जोरि। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो तू इनके ऊपर जमुना जल डारि। सो वानें जमुना जल उनके ऊपर डारयो। सो वे सालिग्राम जैसे हुते तैसेई होइ गये। ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने सेवकन के ऊपर अनुग्रह करिकें अपनो महात्म्य अनेक रीतिसों दिखाऐ। वार्तासप्तम ॥ ७ ॥

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विचारे जो। हमकों श्रीठाकुरजी आज्ञा दीनी हैं जो। तुम भूतल में प्रगट होइ कें दैवी जीवन को उद्धार करो।

भावप्रकाश—सो दैवी जीवन को उद्धार तो दोइ वस्तु सों ही होइ एक तो भगवद् रूप सों। एक तो भगवन्नाम सों तामें भगवद् रूप तो श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट भए। अब भगवन्नाम प्रगट कर्‌यो चहिये। नाम सों कहा। श्रीमद्भागवत् की टीका श्रीसुबोधनी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप लिखे हैं जो जैसें व्यासजी कों श्रीठाकुरजी नें आज्ञा दीनी है जो तुम श्रीभागवत् प्रगट करो। तैसें श्रीठाकुरजी नें हमकों आज्ञा दीनी हैं। जो तुम श्रीभागवत की टीका करो।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू विचारे जो। कोउ लिखनवारो होइ तो टीका होइ। आप ऐसें विचारे। ऐसे में एक काश्मीर में बडो पंडित हुतो। केशवभट्ट वाको नाम। सो वानें अपने देस में सुनी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट भए हैं। सो वे बहुत पंडित हैं सगरी दिग्विजे कीनी हैं। सगरी पृथ्वी के पंडित जीते हैं। चलो होइ तो उनसों मिलिए सो वे केशवभट्ट काहेकों आए जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो सरस्वती उलंघन न करें। तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के पास केशवभट्ट आयो। केशवभट्ट के संग सिष्य बहुत हुते तिनमें एक माधवभट्ट हुते। ते दैवी जीव हुते तिनके लियें केशवभट्ट आयो। सो आइकें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती करी जो। महाराज आप दिग्विजे किए हो सब पंडित जीते हो। भक्त मारग स्थापन किये हो। और आपको श्रीआचार्य पदवी है। और

श्रीभागवत् एकादस्कंध में श्रीठाकुरजी उद्धव सों कहे हैं जो आचार्य मेरो स्वरूप है। आचार्य कों कोई मनुष्य मति जानियो तातें आप साक्षात् भगवत्स्वरूप हो। मोकों अनुग्रह करिकें आप कछू पढाओ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा केसवभट्ट के आगें कथा कहें तब सब भगवदी सुनें। और माधवभट्ट केशवभट्ट के संग हुतो। सो उनहू सुनी। सो माधवभट्ट कों तो। श्रीआचार्य-जी महाप्रभून के श्रीमुखतें कथा सुनेते भक्ति उत्पन्न भई। काहेतें जो दैवी जीव हुते और केशवभट्ट तो श्रीआचार्यजी महाप्रभून की विद्या देखन कों आयो हुतो। सो वाकें कछू बोध न भयो ता पाछें केशवभट्ट अपने स्थल में जाइकें अपने सेवकन सों कथा कहे। सो माधवभट्ट उहां न जाइ। और माधवभट्ट केशवभट्ट सों उदास भयो रहे और माधवभट्ट अपने मन में यह विचारे जो मेरे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के चरणा-रविंद छोडिकें कहूँ न जानों तब एक दिन केशवभट्ट नें माधव-भट्ट सों कहे जो तू हमारी कथा छोडिकें उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवकन में बैठ्यो बैठ्यो बातें हाँसी करत है। तब माधवभट्ट नें कही जो तुम्हारी कथा सों मोकों उनकी हांसी आछी लगे है। तब केशवभट्ट मनमें बहुत कुढ्यो जो। यह मेरे काम ते गयो। और माधवभट्ट ऐसो वचन काहेते कह्यो जो काहू भांतिसों मेरो यह गोहन छोडे तब केशवभट्ट कितनेक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभून पास रह्यो। ता पाछें सीख मांगी और कहे जो महाराज में आपके श्रीमुखतें कथा सुनी परि

मोकों कछू वोध न भयो सो याको कारण कहा । तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू कहे जो तू निराभिमानी होइकें कथा नही सुन्यों तातें तोकों वोध न भयो। और या बात कों उत्तर हुतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू गोप्य राखे। उत्तर कहा हुतो जो तू दैवी जीव होतो तो तोकूं वोध होतो। सो यह बात कहिबे की न हुती तातें और उत्तर दे दिऐ। तब श्रीआचार्यजी महा-प्रभून सों केशवभट्ट नें कही जो महाराज यह माधवभट्ट मेरो सेवक है। सो मैं आपकी भेंट करत हूँ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो बहुत अच्छो । यह तो हमारें चहिये सो माधवभट्ट बड़े भगवदी भए प्रथम तो बड़े पंडित तो हते ही।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू माधवभट्ट सों कहे जो हमारें। श्रीभागवत् की टीका करनी है। सो तुम लिखो सो श्रीआचा-र्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहत जांइ सो माधवभट्ट लिखत जांइ। जहां माधवभट्ट न समुझे तहां लिखनों छोडि देहि। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू समुझाइ कें कहें। तब माधवभट्ट फेरि लिखे। ऐसे माधवभट्ट कृपापात्र भए।

भावप्रकाश—श्रीसुबोधनीजी प्रगट भई। दोउ वस्तु सिद्ध भई। श्रीगोवर्द्धननाथजी। श्रीगोवर्द्धन में ते प्रगट भये। और श्रीसुबोधनी। श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट किऐ। और माधवभट्ट लिखे । सो दैवी जीवन के भागिसों भगवद्रूपहूँ प्रगट भयो। और भगवन्नामहूँ प्रगट भयो। सो निबन्ध में श्रीआचार्यजी माहाप्रभू प्रथम ही आप लिखे जो—

"रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडतियोयतः"

वार्ताअष्टम ॥ ८ ॥

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू ओरछा देश है तहां पधारे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो अन्तर्यामी ईस्वर। सो उहां आगे मायावादीन सों और वैष्णवन सों झगडा होत हुतो। सो वे मायावादी केसे हुते। जो साक्षात् देवी सरस्वती उननें पूजा करिकें बस में करि राखी हुती। सो वो मायावादी जा देश में जांइ तहां एक घट धरें ताके ऊपर एक बस्त्र उढायें। और सबन सों झगडा करें और कहें जो यह साक्षात् सरस्वती हैं। जाकों ए सांचे करें सो सांचो। सो वो मायावादी जहां जांइ तहां जीतें। उनसों कोउ चरचा न करि सके सो उहां ओरछा के राजा। रामभद्र नारायण के इहां ब्राह्मणन की सभा इकठौरी भई। सो वो मायावादी सबन कों जीते। सो यह समाचार उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें सुनें सो सुनिकें श्री-आचार्यजी महाप्रभू। राजा की सभा में पधारे।

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन राजा करिकें बहुत प्रसन्न भयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजा सों पूछी जो। तुम्हारे इहां ब्राह्मणन को कहा झगरो है। तब राजा नें कही जो महाराज वैष्णव तो सब हारे हैं। और ए साकत जीते हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पूछे जो मायावादी कैसें जीते हैं। तब राजानें कही जो महाराज साक्षात् देवी इनसों बोलत हैं। और इनको मार्ग कों सत्य कहत हैं तासों ए जीते हैं तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू कहे जो हम देखें देवी कैसें बोलत है। तब राजा उन मायावादीन सों कहे जो बाबा अब तुम इनसों चरचा

करो, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों चरचा करन लागे। तब उनन कही जो महाराज साक्षात् सरस्वती हैं जो ये कहैं सो सांच है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हां कहो सो वह कछू बोले नांही बहुतेरो ब्राह्मण बुलावे परि वह घट में तें सब्द निकसें नहीं? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजा सों कहे जो ये सब पाखंडी हैं। वैष्णव मार्ग तो साक्षात् श्रीकृष्ण श्री-भागवत् एकादस्कंध में उद्धवजी सों कहे हैं जो वैष्णव है। सो मेंरो अंग है मेरो ही स्वरूप वैष्णव कों जानियो। वैष्णव विषें ज्ञाति बुद्धि राखे सो महा अपराधी है ठौर ठौर वैष्णव को महात्म्य बेद में पुराण में सास्त्र में कहे हैं। सो ये मायावादी वैष्णव मार्ग ते कैसें जीतेंगे। तब वो मायावादी निरुत्तर होइकें देवी के ऊपर मरिवे कों बैठे जो। तें हमारो सभा में मान भंग क्यों कीयो। तुम बोली क्यों नहीं तब देवी नें कही जो अरे अपराधी वो तो साक्षात मेरे पति हैं, मैं उनके आगें लज्जा छोडिकें कैसें बोलूं। मो सारखी तो इनके कोटिक दासी हैं। कोई मनुष्य होइ ताके आगें में बोलूं एतो साक्षात पुरुषोत्तम हैं। सो यह सब समाचार। राजा नें सुने तब राजा मन में विचारे जो धन्य मेरो भाग्य जो। मेरे घर में साक्षात् ठाकुर पधारे हैं तब राजाहू श्रीआचार्यजी महाप्रभून को सेवक भयो। और बहुत दैवी जीव सरण आए। और वैष्णव मारगी जो ब्राह्मण हुते। तब सब प्रसन्न भये जो हमारो धर्म श्रीआचार्यजी महाप्रभू राखे।

तब वह राजा श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों कनकाभिषेश करायो। मायामति को खंडन भयो । भक्तिमार्ग को स्थापन कियो। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आगें पृथ्वी पावन कों पधारे।

सो एक समें कृष्णचैतन्य । श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन करिकें कृष्णचैतन्य बहुत प्रसन्न भये । और कहे जो महाराज मेरो बडो भाग्य है जो मैं महाराज के दर्सन पायो। तब कृष्णचैतन्य श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगें भगवन्नाम को महात्म्य कहे जो ये श्रीठाकुरजी के चरणारबिंद में जो मन लगावे तो। यह जीव कृतार्थ होइ जाइ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हमारो मार्ग तो ऐसो नांही हमारे मार्ग में तो क्षण एकहू जो श्रीठाकुरजी के चरणारबिंद में ते। मन काढे तो आसुरबेश होइ । ताही तें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप नवरत्न में कहे हैं जो।

"तस्मात्सर्वात्मनानित्यं श्रीकृष्णःशरणंमम"

ऐसें जीव कों अहनिंश कहनों पुष्टिमार्ग को ऐसो स्वरूप है यह वार्ता सब भगवदी श्रीआचार्यजी महाप्रभून के श्रीमुख सों सुने इनकों सन्देह भयो जो । तब कृष्णदास मेघन मन में विचारे जो ऐसेहू भगवदी कोउ होइगें जो अहनिंश भगवन्नाम लेत हैं तब कृष्णदास मेघन कों सन्देह आयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें कृष्णदास मेघन के मन की जानी जो इनकों सन्देह भयो है जो । कृष्णदाज मेघन कछू पूछे होते तो

श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी उत्तर देते श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आप मारग में पधारत हुते। सो मारग में एक सरोवर सुन्दर देखें। सो वा सरोवर के ऊपर वृक्ष बहुत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदास सों कहे जो आज तो हम इहांही पाक करेंगे यह स्थल बहुत सुन्दर हैं।

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप उहांही उतरे। सो आप स्नान करिकें पाक सिद्ध कीये। कृष्णदास मेघन पतोवा लेन गये। तब देखे तो सरोवर के तीर पर एक बडो जानवर बैठ्यो हैं। सो कृष्णदास मेघन अकस्मात वा जानवर के पास ही जाइ ठाढे भये। परि देखत भय लग्यो। तब विचारे जो भगवत् इच्छा हे सो होइगी तब तातें भगवन्नाम लीजिये। तब कृष्णदास मेघन वा जनावर सों श्रीकृष्ण सुमिरण कीये। तब वा जनावरनें जल में डुबकी मरिकें जल पीयो। तब दूसरी बेर फेरि श्रीकृष्ण सुमिरण कीये तब फेरि वा जनावरनें जल पीयो, तब तीसरी वेर फेरि श्रीकृष्ण सुमिरण कीये। तब फेरि वा जनावरनें। डुबकी मारिकें जल पीयो। तब कृष्णदास उहांते आगें जाइकें पतोवा लीने। परि मनमें विस्मे बहुत। जो कछू समुझ परी नहीं जो यह कहा में तीन वेर श्रीकृष्ण सुमिरन कीयो। और वानें तीनों बेर जल पीयो। कछू याको आसय जान्यों नहीं। तब पतौवा लैकें कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजी महाप्रभून के निकट आऐ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कृष्णदास सों पूछे जो क्यों कृष्णदास तेरो सन्देह गयो। तब

कृष्णदास मेघन कहे जो महाराज सन्देह तो आप जब अनुग्रह करिकें दूरि करोगे तब दूरि होइगो जीव तो सन्देह भरयो ही है। जीव की बुद्धि तो अलिप। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो वो जो तें जीव देख्यो सो बहुत दिना को प्यासो हुतो। और जल के तीर ऊपर बैठ्यो हुतो और जल न पीये। जो जल पीऊँगो तो मेरो भगवन्नाम छूटि जाइगो। ऐसी भगवन्नाम पे आसक्ति है सो तुमनें भगवन्नाम वाकों सुनायो, सो वानें तीन वेर जल पीयो। जीव कों ऐसी भगवद नाम पे आसक्ति चाहियें। तब कृष्णदास मेघन सुनिकें बहुत प्रसन्न भए। मनको सन्देह गयो। वार्ता नवम् ॥ ९ ॥

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू पाडुरंग विट्ठलनाथ पधारे। जो उहां जाइकें बिराजे उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है। फेरि श्रीविट्ठलनाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों मिले, और कहे आप श्रीमुखतें जो आप विवाह करो। सो पाडुरंग विट्ठलनाथजी काहे कों कहे जो तुम विवाह करो।

भावप्रकाश—ताको कारण यह जो श्रीआचार्योजी महाप्रभून के मार्ग की तो बहुत दिन तांई स्थित हैं दैवी जीवन को अङ्गीकार बहुत दिना तांई करनो हैं। और जो श्रीआचार्योजी महाप्रभू आप विवाह न करें तो। सिष्य द्वारा हू दैवी जीवन कों अङ्गीकार होइ जैसें सेठ पुरुषोत्तमदास नाम देते। गोपालदास नाम देते। चाचा हरिवंशहू नाम देते। ऐसें औरहू सेवकन कों नाम देवे की आज्ञा श्रीआचार्यजी महाप्रभून की हुती। सो श्रीठाकुरजी विचारे जो। ये जो भगवदी इनकी आज्ञा तें

नाम देत हैं। सो तो ये श्रीआचार्यजी महाप्रभून के कृपापात्र हैं। और अंग है तातें इनकों जीव कृतार्थ करिवे की सामर्थ्य है। जैसें गदाधरदास भक्ति दीनी। प्रभूदास मुक्ति दीनी। परि आगें तो काहू की ऐसी समर्थ्य होइगी नांही। जैसें और वैष्णव सम्प्रदाय हैं। सो उनसों वेद मार्ग छूटि गयो है। जहां वेद मार्ग छूट्यो। तहां जीव कृतार्थ कहांते होइ। तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू विवाह न करें। तो यहू मार्ग वेद रहित होइ जातो। और वेद रहित मार्ग में जीव कृतार्थ न होतो। तातें श्रीपांडुरंग विठ्ठलनाथजी आज्ञा दीनी जो। तुम विवाह करो मैं तिहारे घर जन्म लेऊँगो।

यहां कोऊ सन्देह करे जो श्रीविठ्ठलनाथजी आज्ञा दीनी। तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा क्यों न दीनी। ताको कारन यह जो भगवत्स्वरूप कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्पर्श करें। सो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम होइ जाइ तातें यह जानियें जो यह श्रीगोवर्द्धननाथजी ही आज्ञा दीनी। और छीतस्वामी पद जो गाए हैं। तामें हू ऐसें ही गाए हैं। जो छीत स्वामी गिरधरन श्रीविठ्ठल। तातें श्रीगुसांईजी साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर हैं। आगरे में एक वैष्णव श्रीगुसांईजी को पंखा करत हुतो। तिनकों सन्देह भयो। सो उनकों श्रीगुसांईजी साक्षात श्रीगोवर्द्धनधर होइकें दर्सन दिऐ। ऐसे दर्सन श्रीगुसांईजी सबन कों क्यों न देंहि जो ऐसे दर्सन सबन कों देंहि। तो सब जगत कृतार्थ होइ जाइ। और श्रीआचार्यजी महाप्रभू। और श्रीगुसांईजी को प्रगट्य तो दैवी जीवन के उद्धार्थ है। और आप सेवा मार्ग प्रगट कियो। सो आप सेवा करें तो। सेवा मार्ग प्रगट होइ। सो गोपालदासजी गाऐ हैं।

आप सेवा करी सीखवे श्रीहरी भक्ति पक्ष वैभव सुदृढ कीयो।

तातें आप साक्षात् ईश्वर हैं। परि सेवक भाव करिबे के लिऐ। मनुष्य देह कों अनुकरण किये हैं।

तब श्रीविट्ठलनाथजी सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो हम विवाह कैसें करें। हमकों कन्या कौन देइगो । हमारो तो कहूँ एकठौर वास नहीं। और ब्रह्मचर्य आश्रम कों हम अंगीकार कियो है और पृथ्वी परिक्रमा करत हैं। सो हम कौनसों कहें जो हमकों कन्या देऊ। तब पांडुरंग विट्ठलनाथजी कहे जो, में सब सिद्ध करि राख्यो हूँ। आप कासी पधारो उहां एक ब्राह्मण तुम्हारो मार्ग देखे है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सब भगवदी संग लैकें आप कासी कों पधारे । सो वह ब्राह्मण कैसो हुतो। वाके घर प्रजा न होत हुती और वृद्ध भयो, तब वानें श्रीठाकुरजी सों विनती करि प्रार्थना करी जो महाराज मेरे घर में प्रजा होइ तो मैं परमार्थ करूं जो बेटा होइ तो काहू महापुरुष की भेट करि देउं और जो कन्या होय तो। ज्ञात में कोऊ अपूर्व निष्कंचन ब्राह्मण होइ ताकों कन्या देउं। सो भगवत् इच्छा ते वा ब्राह्मण के घर कन्या भई । सो कैसी कन्या भई। जिनको नाम श्रीमहालक्ष्मी धरे।

भावप्रकाश—महालक्ष्मी काहेते जो जिनके पतिहू पुरुषोत्तम और पुत्रहू पुरुषोत्तम।

सो वा ब्राह्मण कें जब कन्या को विवाह काल आइ प्राप्त भयो। तब वो नित्य कासी के द्वार पर जाइ ठाडो होइ। सो जो नगर में अपूर्व मनुष्य प्रवेश करे। वासों वो ज्ञात नाम पूछें सो नित्य ऐसें ही करें। सो ऐसें पूछत पूछत कितनेक दिन भए तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू कासी पधारे। सो

सब भगवदी आपके संग हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कासी के द्वार विषें प्रवेश करत हुते। सो इतने में वह ब्राह्मण आइ ठाडो भयो। और श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों पूछे जो आप कौन ज्ञाति हो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो हम तैलंग ब्राह्मण हैं पृथ्वी परिक्रमा करत हैं और हम ब्रह्मचर्याश्रम में हैं। तब वा ब्राह्मणनें प्रसन्न होइकें कही जो हमहूँ तैलंग ब्राह्मण हैं। और मेरे घर कन्या है सो में आपकों दीनी। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो ईश्वर सब जानत हैं। और तापर पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजी की आज्ञा भई हैं। तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो बहुत अच्छो। तब वा ब्राह्मण नें आछो महूर्त देखिकें पूछिकें श्री-आचार्यजी महाप्रभून को विवाह कियो।

भावप्रकाश—सो जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पूर्णपुरुषोत्तम। तैसें वो साक्षात् महालक्ष्मी जी।

सो वा ब्राह्मण कें और तो प्रजा कछू हती नांही। एक श्रीमहालक्ष्मीजी बेटी भई सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को विवाह करि दीयो। और घर में जो कछू हुतो सो सब श्री-आचार्यजी महाप्रभून कों समर्प्यो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो विवाह करिकें पृथ्वी पावन कों पधारे। तीसरी परिक्रमा श्रीआचार्यजी महाप्रभू विवाह भये पाछें कीनी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रज में पधारे।

सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दर्सन कीये। श्रीआचार्यजी

महाप्रभून को विवाह भयो। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी बहुत प्रसन्न भये। और श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों आज्ञा दीनो जो। काहू स्थल सिद्ध करिकें आप बिराजो, आप गृहस्थाश्रम कों अङ्गीकार कियो हैं। तातें उहांतें श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा लैकें श्रीआचर्यजी महाप्रभू आप परासोली पधारे। तिनको नाम आदि वृन्दावन हैं सो उहां जाइकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू देखे। सो गोपालदासजी गाए हैं।

त्यांथी श्रीवृन्दावन पाँउधारीया जहां मधुप करे झंकार।
कुसुम द्रुम नवमल्लिका, मकरन्दनो नहिं पार ॥ १ ॥
तरु तमाल अति शोभिता, हेमयूथिका संजोड़।
ललना ते सुभगा लटकतां, हिंडे ते मोड़ामोड़ ॥ २ ॥
तान धुनि मुनि मयूर रूपें, सांभले धरि ध्यान।
नित्य लीला गान श्रवणे करेते मधु पान ॥ ३ ॥
कुंज सदन सोहामणुं शोभा तणो नहीं पार।
विविधि रास मंडल रचना रची, खेले श्रीनंदकुमार ॥४॥

ऐसें परासोली में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप रासलीला के दर्सन कीये। ताही तें श्रीगुसांईजी आप सर्वोत्तम में श्री-आचार्यजी महाप्रभू को नाम कहे हैं जो।

"रासलीलैकतात्पर्य"

भावप्रकाश—रासलीला जो हैं। सो जितनी श्रीठाकुरजी की लीला हैं। तिन सबन में फलरूप लीला है। याही तें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुबोधनी में रासलीला को नाम फलप्रकरण धर्यो है।

ऐसें दर्सन श्रीआचार्यजी महाप्रभू करिकें आप श्रीगोकुल पधारे।

भावप्रकाश—सो जैसें आदि वृन्दावन में आप साक्षात् रासलीला के दर्सन कीये। तैसें ही श्रीगोकुल में साक्षात् बाललीला के दर्सन किऐ। श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो साक्षात् ईश्वर हैं। रासलीलाहू आपकी हैं। और बाललीलाहू आपकी है। और आप ही सब करत हैं। परि इतनों जो भगवदी न्यारो करिकें गाऐ हैं सो जी न्यारो करिकें न गावें तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू मानुष्य देह को अङ्गीकार किऐ हैं। और श्रीआचार्यजी ठाकुरजी सेव्य रूप भये। श्री आचार्यजी महाप्रभू आप सेवा के भाव कों अङ्गीकार कियो है याही तें भगवदी गाये हैं।

* रागसारंग *

भक्ति श्रीगोकुलतें प्रगट भई।

पहिले करि श्रीवल्लभनन्दन फिर औरन सिखई॥ १॥
चारयो बरन सरन अपुने करि विधिसों बांटि दई।
श्रीविट्ठलनाथ प्रताप तेजतें तीनों ताप गई॥ २॥
प्रगट हुते द्वै प्रेति अदित्तित तिनहूँ मांगि लई।
अब उद्धरे कहत अपुने मुख पत्री लिखि पठई॥ ३॥
श्रीवल्लभ विट्ठल श्रीगिरिधर तीनो एक सही।
नव प्रकार आधार नारायण घोक लोक निवही॥ ४॥

तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू। श्रीगुसांईजी। और श्रीगोवर्द्धननाथजी एक स्वरूप हैं। और श्रीआचार्यजी महाप्रभू और श्रीगुसांईजी सेवा जो करे हैं सो जीवन के सिद्धार्थ सो भगवदी गाऐ हैं।

॥ रागदेवगंधार ॥

आपुनपे अपुनी सेवा करत।

आपुन प्रभू आपुन सेवक व्है अपुनों रूप उर धरत॥ १॥
आपुन धर्म करत सब जानत मरजादा अनुसरत।
छीतस्वामि गिरधरन श्रीविट्ठल भक्त बछल बपु धरत॥ २॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुल पधारे सो गोकुल में श्रीबलदेवजी के संग क्रीडा करत श्रीठाकुरजी के दर्सन भए तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें कहे जो। श्रीठाकुरजी की इच्छा ऐसी दीसे हैं जो हम दोउ तुम्हारे घर प्रगट होइंगे। श्रीठाकुरजी की ऐसी इच्छा जानिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के मन में बहुत आनन्द भयो।

भावप्रकाश—बलदेवजी हैं तिनको नाम श्रीगोपीनाथजी धरेंगे। और श्रीनन्दराइ कुमार हैं तिनको नाम श्रीविट्ठल धरेंगे और बलदेवजी साक्षात् वेद को स्वरूप हैं। सो वेद मार्ग को विस्तार करेंगे। और श्रीबिट्ठलनाथजी हैं। सो नन्दराय कुमार हैं। सो अपने जो दैवी जीव भगवदी हैं। तिनकों परमानन्द को दान करेंगे। याको भाव गोपालदासजी कहे हैं।

रंगे ते रमतां दीठडां बलदेव श्रीगोविंद।

पुत्र भावे प्रगटशे, मन ऊपज्यो आनन्द ॥ १ ॥
बलदेव श्रीगोपीनाथ कहिये श्रीविट्ठल नंदा नन्द।
ए वेद पंथ बिस्तारसे, जन आपशे आनन्द ॥ २ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कासी कों पधारे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा दीनी है जो एकठौर आप बिराजो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा मन में निर्द्धार करिकें आप यह बिचारे जो कहूँ स्वतंतर वास करनों। जामें काहू की सत्ता न होइ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कासी तें श्रीमहालक्ष्मीजी कों लैकें आप अडेल कों पधारे सो उहां स्थल करिकें आप विराजे। सब भगवदी आज्ञा कारी

ेवक आपके संग हैं। सो सब सेवा करत ही हैं और श्री-
प्राचार्यजी महाप्रभू आप भगवत्सेवा करें। सो श्रीमदनमोहनजी
ो अपने बडेन के ठाकुर हैं। श्रीआचार्यजी महाप्रभून के माता
ीइलम्मगारुजी दक्षिण तें पधराय ल्याई हैं सो और श्रीगोकु-
नाथजी, श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सासुरें ते पधारे। सो
ीआचार्यजी महाप्रभून के सुसर पंच पूजा करत हुते।
तनमें श्रीगोकुलनाथजी बिराजत हुते सो जब श्रीआचार्यजी
हाप्रभू श्रीमहालक्ष्मीजी कों लैकें पधारे। तब श्रीआचार्यजी
हाप्रभून के सुसरनें पंच पूजा हती सो संग दीनी जो मेरे तो
छू और प्रजा तो नाही जो इनकी पूजा करे। तातें आप ले
धारो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सबनकों लेकें श्रीगंगाजी के
ीर विषें पधराये सो च्यारकों तो श्रीगङ्गाजी में पधराये।
महादेव, भवानी, सूरज, गणेश, और जुगल श्रीस्वामिनीजी
हित श्रीगोकुलनाथजी कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सेवा
ों राखे। सो जब चारोंन कों श्रीगङ्गाजी में पधराये। तब
ो चारों बोले जो आप ही हमकों न मानोंगे तो जगत में
मकों कौन मानेगो, और हमारी पूजा कौन करेगो, तब श्री-
प्राचार्यजी महाप्रभू कहे जो हम तुमकों प्रस्ताव में बुलावेंगे।
ब तुम्हारो समाधान करेंगे। तब वो प्रसन्न भए।

भावप्रकाश—सो श्रीगोकुलनाथजी तिनको नाम श्रीआचार्यजी
हाप्रभू और श्रीमहालक्ष्मी ने गोवर्द्धननाथजी राखे काहेतें जो श्रीगोव-
्न इनके श्रीहस्त में हैं और एक श्रीहस्त में संख है, सो संख काहेतें
े हैं जो जल को आदिदेव है और दोइ श्रीहस्त सों बेनुनाद करत हैं।

सो बेनुनाद करिकें ब्रज भक्तन कों आनन्द देत हैं। या भांति के श्रीगोकुलनाथजी को स्वरूप है।

ऐसी रीति सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेल में बास करिकें सेवा करत हैं। अपने जे सेवक भगवदी हैं तिनकों सुख देत हैं। वार्तादशम ॥ १० ॥

अब जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ने ब्रज में श्रीबलदेवजी के और श्रीठाकुरजी के दर्सन कीए सो कैसे दर्सन किए जो रमण करत हैं। सो श्रीबलदेवजी प्रथम प्रगट भये।

भावप्रकाश—सो काहेतें बलदेवजी हैं सो श्रीठाकुरजी को धाम हैं? अक्षर ब्रह्म हैं और साक्षात् शेष महा नाग हैं प्रथम सिंघासन शैय्या सिद्ध होइ तब श्रीठाकुरजी सहित पधारें सो श्रीवलदेवजी श्रीठाकुरजी की सब भांतिसों सेवा करत हैं।

सो श्रीबलदेवजी श्रीगोपीनाथजी होइकें अडेल में सम्वत् १५६७ आश्विन कृष्ण १२ के दिन प्रगट भये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तीस वर्ष की बय को अंगीकार किए हते और श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम तो नित्य लीला बिनोदकृत है। सदा नित्य लीला अखंड विराजमान हैं सो श्रीगोपीनाथजी को प्रागट्य भयो ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कितनेक दिन लों अडेल ही में बिराजे। फिर एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमहालक्ष्मीजी सहित चरणाद्रि पधारे। सो श्रीगङ्गाजी के तीर हैं। सो उहां साक्षात भगवान के चरणारबिंद को चिन्ह हैं

सो उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप स्थल करिकें विराजे सो संवत् १५७२ के पौष कृष्ण ९ शुक्रवार के दिवस साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धननाथजी । श्रीमन्नन्दराय कुमार श्रीयशोदोत्संगलालित । श्रीव्रजभक्तनके प्राण आधार आप प्रगट भये । कस्तूरी के तिलक सहित । जा समें श्रीगुसांईजी प्रगट भये । ताही समें एक कोउ ब्राह्मण श्रीविट्ठलेशरायजी कों पधराइ कें ले आयो । सो वाही समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू कों दीयो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के घर दोइ रीतिसों श्रीठाकुरजी प्रगट भये । सेव्य सेवक भावसों सो सेव्य सेवक भाव श्रीठाकुरजी आप अंगीकार किये ।

भावप्रकाश—काहेतें जो आप श्रीठाकुरजी की सेवा न करें । तो दैवी जीव सेवा को स्वरूप कहा जानते ताहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू दैवी जीवन कों सेवा करिकेंहू बताई । और कहिकेंहूँ बताई ।

सो जा समें श्रीगुसांईजी को प्रागट्य भयो । ता समें अलौकिक रीत को बडो उत्सव भयो । सो वा उत्सव को अनुभव दामोदरदासजी हरसानी । कृष्णदासजी मेघन प्रभृति भगवदीन कों और गोपासदासजी गाए हैं जो ।

भावप्रकाश—सेरडिये वहेरे सुगन्ध । और फेरि गाऐ जो कोईक भागवंत ते समें । दास नों दास जाइ वारनें । वारनें रह्योरे उत्सव जुऐ ।

"फेरि मानिकचंदजी गाए हैं जो" ।

॥ रागदेवगंधार ॥

सुनि सुत को जसु लक्ष्मणनन्दन ढाडी निकट बुलायो ।

कंचन थार भरे मुक्ता फल भले बसन पहरायो ॥ १ ॥
मन बाँछित फल सबहिन दीनों कीयो अजाचक ढाढी ।
मानिकचन्द वलि वलि उदारता प्रीति निरंतर वाढी ॥ २ ॥

"और मानिकचन्दजी गाए हैं जो" ।

॥ रागदेवगंधार ॥

बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल प्रगटे श्रीविट्ठलनाथ हमारे ।
द्वापर वसुधा भार हरयो हरि कलियुग जीव उद्धारे ॥१॥
तब वसुदेव ग्रह प्रगट होइकें कंसादिक रिपु मारे ।
अब श्रीवल्लभ ग्रह प्रगट होयकें मायावाद निवारे ॥२॥
ऐसो को कवि है जुग महियां वरनें गुनजु तिहारे ।
मानिकचन्द प्रभू कों सिव खोजत गावत बेद पुकारे ॥३॥

॥ रागदेवगंधार ॥

पौष कृष्ण नौमी को सुभ दिन पूत अक्काजी जायो हो ।
निज जन सुनि सुनि सब आनन्दें हरखित करति वधायो ॥१॥
नारदादि ब्रह्मादिक हरखित सुक सुनि अति सचुपायो हो ।
श्रीभागवत विवेचन करिकें गूढ अर्थ प्रगटायो हो ॥२॥
कलिके जीव उद्धारन कारन द्विज वपु धरि भुव आयो हो ।
अति उदार श्रीलक्ष्मणनंदन देत दान मन भायो हो ॥३॥
करत वेद धुनि विप्र महामुनि जात करम करवायो हो ।
मानिकचंद श्रीविट्ठल प्रभूकों विमलि विमलि जसु गायो हो ॥४॥

"और बिष्णुदासजी गाए हैं" ।

॥ रागदेवगंधार ॥

भयो श्रीगोकुल में जै जैकार ।
भक्त सुधा प्रगटे श्रीविट्ठल कलियुग जीव निस्तार ॥ १ ॥

महा अघोर कटे या कलिके प्रगट कृष्ण अवतार ।
विष्णुदास प्रभू पर न्यौछावरि तन मन धन बलिहार ॥ २ ॥

"और कृष्णदासजी गाए हैं" ।

॥ रागदेवगंधार ॥

गोकुल में आनन्द भयो है घर घर बजति वधाई ।
श्रीवल्लभ ग्रह प्रगट भये हैं श्रीविट्ठल सुखदाई ॥ १ ॥
सब मिलि संग चलो मेरे तुम जो भावे सो लीजे ।
भये मनोरथ मन के भाये अपुनो चीत्यो कीजे ॥ २ ॥
उदय भयो गोकुल को चन्द्रमा पूजी मन की आस ।
भक्तन मन आनन्द भयो है दुःख द्वंद भयो नास ॥ ३ ॥
देश देश के भिक्षुक गुनीजन रहसि बधावो गावें ।
एक नाचे एक करे कुलाहल जो माँगे सो पावें ॥ ४ ॥
काहे बिलंब करत भैयाहो वेगि चलो उठि धाई ।
श्रीवल्लभ सुतको दर्शन देखे जनम जनम दुःख जाई ॥५॥
अष्टसिद्ध नवनिध लक्ष्मी ठाढी रहति है द्वारे ।
ताकी ओर दृष्टि करि भरिकें कोउ नाहि निहारे ॥ ६ ॥
श्रीवल्लभ करुणामय सागर बांह पकरि गहि लीनों ।
कृष्णदास अपुने ढाढी कों अभय पदारथ दीनों ॥ ७ ॥

"और छीतस्वामी गाए हैं" ।

॥ रागसारंग ॥

जे वसुदेब किये पूरन तप तेई फल फलित श्रीवल्लभ देह ।
जे गोपाल हुते गोकुल में तेई अव आइ बसे करि गेह ॥ १ ॥
जे सब गोप बधू ही ब्रज में तेई अब बेदरुचाभई येह ।
छीतस्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल तेई येई येई तेई कछून संदेह ॥२॥

"और नन्ददासजी गाऐ हैं" ।

॥ रागदेवगंधार ॥

प्रगटित सकलसृष्टि आधार । श्रीमद्‌वल्लभ राजकुमार ॥ १ ॥
ध्येय सदां पद अवुंज–सार । अगनित गुण महिमाजु अपार ॥२॥
धर्मादिक द्वारे प्रतिहार । पुष्टि भक्ति कों अंगीकार ॥ ३ ॥
श्रीविट्ठल गिरधर अवतार । नंददास कीनों वलिहार ॥ ४ ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक भगवदी । श्रीगुसांईजी के जन्म उत्सव को दर्सन करिकें । अनेक प्रकार को जस वर्णन किऐ ।

भावप्रकाश—कोउ ऐसो सन्देह करे जो ऐ भगवदी तो सब पीछें आऐ हैं । और श्रीगुसांईजी को प्रागट्य तो पहलें हैं । तातें ये कैसें गाऐ । तहाँ कहत हैं जो ऐसो सन्देह न करनों । काहेतें जो, जो भगवत लीला । भगवज्जस और भगवदी नित्य हैं । काहेतें जो सूरदासजी नन्दरायजी सों कहे हैं । और गाऐ हैं ।

॥ रागमारू ॥

नन्दजू मेरे मन आनन्द भयो सुनि गोवर्द्धन तें आयो ।
तुम्हारे पुत्र भयो हो सुनिकें हों अति आतुर उठि धायो ॥ १ ॥
वंदीजन और भिक्षुक सुनि सुनि देश देशातें आऐ ।
एक पहिलेई आसा लागी बहुत दिनन के छाऐ ॥ २ ॥
तुम दीने कंचन मनिमुकता नाना बसन अनूप ।
मोहि मिले मारग में मानों जात कहूँ के भूप ॥ ३ ॥
दीजे मोइ कृपा करि सोई जो हों आयो मांगन ।
जसुमति सुत अपने पाइन चलि खेलन आवें आंगन ॥ ४ ॥
कोटि देहु तो परचो रहूँगो विनु देखे नहीं जैहों ।
नन्दराइ सुनि बिनती मेरी तब ही बिदा भलें लेहों ॥ ५ ॥

तुम तो परम उदार नन्दजू जो माग्यो सो दीनों।
ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सरसाखो कीनों ॥ ६ ॥
मदनमोहन मैया कहि टेरे यह सुनिकें घर जाऊं।
हौंतो तिहारे घर को ढाढी सूरदास मेरो नाऊं ॥ ७ ॥

भावप्रकाश—सो सूरदासजी तो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू को प्रागट्य भयो है। तब इनको जन्म हैं। और श्रीनन्दराइजी तो द्वापुर के अन्त में हुते। तब श्रीठाकुरजी प्रगटे पे ऐसें जानिये जो। भगवदी नित्य हैं। जब जब भगवान अवतार लेत हैं। तब तब भगवदी हू। आवत हैं जश गाइबे कों। ताहीतें भगवदी गाऐ हैं जो—

"नित्य लीला नित्य नौतन श्रुति न पावें पार"।

श्रीगुसांईजी के जश को वर्णन कोऊ कहां तांई करे।

"सो छीतस्वामी गाये हैं"।

॥ रागभैरव ॥

जै जै जै श्रीवल्लभ नन्द। कोटि कला श्रीवृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
निगम विचारे न लहैं पार। सो ठाकुर श्रीअक्काजी के द्वार ॥ २ ॥
लीला करि गिर धर्यो हाथ। छीतस्वामी श्रीविट्ठल नाथ ॥ ३ ॥

या भांतिसों श्रीगुसांईजी को प्रागट्य भयो। फेरि श्रीआचार्यजी महाप्रभू सब कुटुम्ब लैकें आप अडेल बिराजे। अब सेव्य स्वरूप तीनि भए। श्रीगोकुलनाथजी, श्रीमदनमोहनजी, श्रीविट्ठलनाथजी अब एक समें। श्रीआचार्यजी महाप्रभू व्रजमें पाउं धारे। सो श्रीगोकुल में बिराजत हते। और श्रीनवनीतप्रियाजी गज्जन धावन कें घर आगरेमें बिराजत हुते। सो श्रीनवनीतप्रियाजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून के मन की जानी,

कहा जानी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून ने यह बिचारे जो। सब स्वरूपन के अधिनाइक तो श्रीनवनीतप्रियाजी हैं। सो श्री-नवनीतप्रियाजी पधारें तो आछो। हमही नें श्रीनवनीतप्रियाजी गज्जन धावन कों पधराइ दीये हैं। और उनसों श्रीनवनीत-प्रियाजी लेहि सो वो कछू नांही। तो वो नांही तो कछू करत नांही। वो तो दे देहिगो। पर उनकों श्रीनवनीतप्रियाजी ऊपर आशक्ति बहुत हैं। श्रीनवनीतप्रियाजी बिना छिनहूँ उनसों न रह्यो जात। तातें जब भगवदइच्छा होइगी तब पधारेंगे। सो यह श्रीआचार्य महाप्रभून के मन की जानिकें श्रीनवनीत-प्रियाजी गज्जन धावन कों कहे जो मोकों तू श्रीगोकुल ले चलि श्रीआचार्यजी महाप्रभून के पास। मोकों पधराउ। सो वाही समें गज्जन धावन श्रीनवनीतप्रियाजी कों पधराइकें श्रीगोकुल आए। सो आइकें गज्जन धामन श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों कहे जो महाराज श्रीनवनीतप्रियाजी पधारे हैं। तब श्रीआचार्य-जी महाप्रभू कहे जो कछू शैज्या सिंघासन सिद्ध नांही अकस्मात् कैसें पधराये हैं। तब गज्जन धामन नें कह्यो जो महाराज सो तो श्रीनवनीतप्रियाजी जानें, मोकों तो श्रीनवनीत-प्रियाजी जैसें आज्ञा कीनी तैसें मैं कीयो। सेवक कों तो आज्ञा ही मुख्य है। और आप मोकों प्रथम ऐसें ही आज्ञा दिए जो जैसें श्रीनवनीतप्रियजी प्रसन्न होहि तैसें ही करियो। मोपे तो आपके अनुग्रह तें श्रीनवनीतप्रियाजी आज्ञा करत हैं, बोलत हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए। गज्जन धावन

की जैसी आसक्ति श्रीनवनीतप्रियाजी ऊपर हैं तैसी श्रीनवनीतप्रियाजी की आसक्ति गज्जन धावन पे हैं । सो श्रीठाकुरजी गीता में कहे हैं जो—

श्लोक—"येयथामां प्रपद्य तेस्तांतथैवभजाम्यहं" ।

जैसी रीतिसों कोउ मेरो भजन करे तैसी रीतिसों । मैं वाको भजन करत हूँ । तातें ऐसी ही आशक्ति गज्जनधावन की श्रीनवनीतप्रियाजी के ऊपर देखिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू गज्जनधावन कों अपुने चरणारविंद के निकट ही राखे । जैसें दामोदरदासजी हरसानी कृष्णदास मेघन । आपके चरणारविंद के संग ही सदैव रहत हैं । तैसें गज्जन धावन कों हूँ अपुने चरणारविंद के समीप राखें । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीनवनीतप्रियाजी कों पधराइ कें आप अडेल कों पधारे ।

तब श्रीनवनीतप्रियाजी सिंघासन ऊपर बिराजे और श्रीआचार्यजी महाप्रभू गज्जन धावन कों आज्ञा दीनी जो तुम मन्दिर के आगें सदां बैठे रहो । काहेते जो श्रीनवनीतप्रियाजी इनसों हिले हैं । गज्जन धावन बिना श्रीनवनीतप्रियाजी छिनहूँ नांही रहत श्रीनबनीतप्रियाजी अनेक भांतिसों क्रीडा गज्जनधावन सों करत हैं । कबहुंक हाथी करत हैं, कबहुँक घोरा करत हैं, कबहुँक गाइ करत हैं, कबहुंक बत्स करत हैं । सो काहेतें जब हाथी करत हैं, तब तो आप ग्रीवा ऊपर विराजत हैं । जब घोड़ा करत हैं तब पीठ ऊपर बिराजत हैं जब गाइ करत हैं तब अपने पीतांबर सों गाइ को श्रीमुख पोछें । और

बछरा करें। तब इनकों पकरि राखें। चलन न देंहि । ऐसें करत करत गज्जन धावन कों ऐसो सुख दियो । अब श्री-आचार्यजी महाप्रभून के घर चारि स्वरूप बिराजें श्रीनवनीत-प्रियाजी, श्रीविट्ठलनाथजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीमदनमोहनजी, और दामोदरदास कन्नौज में रहते। सो श्रीद्वारिकानाथजी की सेवा करते । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह तें दामोदरदास संभरवालेने भली भांति सेवा कीनी । जैसे राजान के घर सेवा होइ तैसें करें। और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो जानें राजा अंबरीष न देख्यो होइ। सो दामोदरदास कों देखे। परि वो मर्यादा मारगी हते । और ये पुष्टिमारगीय हैं। इतनों इनमें अधिक हैं। या भांति सों श्री-आचर्यजी महाप्रभू अपुने श्रीमुखतें दामोदरदासजी संभर वाले की सराहना करते, सो जब दामोदरदास संभर वाले श्रीठाकुरजी के चरणारविंद कों प्राप्ति भए। तब श्रीद्वारिकानाथजी नाव में विराजिकें, अडेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभून के घर पधारे। अब सिंघासन पर स्वरूप पांच बिराजत हैं। श्रीनवनीतप्रियाजी, श्रीविट्ठलनाथजी, श्रीद्वारिकानाथजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्री-मदनमोहनजी, ये पांचो स्वरूप सिंघासन पर बिराजत हैं। भगवदी सब दर्सन करत हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभून के। श्री-गोपीनाथजी के। श्रीगुसांईजी के। या भांतिसों श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजत हैं। आप अडेल में बिराजत हैं। इति।

इति श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी की निजवार्ता भावप्रकाश सहित समाप्तम्

❀ अथ ❀

श्रीआचार्यजी महाप्रभून के-

❀ घर की वार्ता लिख्यते ❀
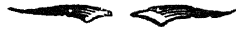
उत्थानिका—श्रीआचार्यजी महाप्रभून के परम कृपापात्र चौरासी, सेवक परम भगवदी तिनकी वार्ता लिखी। और सेवक तो श्री-आचार्यजी महाप्रभून के सहस्रावधि हैं काहेतें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तीनि बेर पृथ्वी पावन करी। और श्रीगुसांईजी जब भगवानदास श्रीगोबर्द्धननाथजी के वालभोगिया तिनसों सामिग्री दाभी। तब त्याग किऐ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास श्री-गुसांईजी सों कहे जो श्रीठाकुरजी ने दैवी जीवन के उद्धार के लिऐ। श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों आज्ञा दीनी। तासों श्रीआचार्यजी महाप्रभू भूतल में अवतार लिये। और दैवी जीवन कों अङ्गीकर किऐ। और दैवी जीव तो बहुत सब सवालाख जीव कों अङ्गीकार करनों। श्री-आचार्यजी महाप्रभू ने तो तुमकों सोंपे और आप तो जीवको अपराध बिचारो हो। और जीव तो दोष भर्‍यो है यह बात श्रीगुसांईजी आप अच्युतदास के मुखतें सुनिकें श्रीगुसांईजी आप संकलप किए जो आजु पीछे काहू सों खीजनो नहीं और भगवानदास कों हाथ पकरिकें श्री-गुसांईजी आप ले आऐ और श्रीमुखतें कहे जो। सेवा सावधानतासों करियो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक तो बहुत हैं, और श्रीगोकुलनाथजी महाराज आप श्रीमुखते चौरासी सेवकन की वार्ता कही ताको हेत यह जो ऐ चौरासी सेवक हैं ते मुख्य हैं। जिनकों श्री आचार्यजी महाप्रभू आप प्रेमलक्षणाभक्ति को दान किऐ हैं सो कैसें जानिऐ जो।

"गोविंद स्वामी गाऐ हैं"।

"भक्ति मुक्ति देत सबहिनकों निज जनपर कृपा प्रेम वरखत अधिकाई"।

सो कृपा प्रेम को कहा स्वरूप है जो। जिनसों श्रीठाकुरजी साक्षात् याही देहसों बोलत हैं बात करत हैं चहिए सो मांगि लेत हैं और श्रीगोकुलनाथजी सर्वोत्तम की टीका में पद्मनाभदासजी को स्वरूप लिखे हैं। तातें ये चौरासी भगवदी कैसे हैं जैसें भगवान के गुन गायेतें कृतार्थ होत हैं तैसें भगवदीन को जसु गाऐतें जीव कृतार्थ होत हैं। याहीते श्रीशुकदेवजी नवम स्कंध में सब राजान की कथा कही है। सो वो सब राजा भगवदीय हते। ताहीतें प्रथम भगवदी की कथा कहिए तो भगवत्कथा को अधिकार होइ। ताहीतें श्रीशुकदेवजी नवमस्कंध में भगवदीन को चरित्र कहिकें, पाछें दशमस्कंध में भगवत नाम को चरित्र कहे हैं, ताहीतें श्रीगोकुलनाथजी चौरासी वैष्णव भगवदीन की वार्ता प्रगट कीनी। और श्रीगोकुलनाथजी नित्य कथा कहते। सो एक दिन श्रीगोकुलनाथजी आप दामोदरदास संभरवाले की वार्ता कहत हते। तब एक वैष्णव नें पूछी जो महाराज आज कथा न कहोगे। तब श्रीगोकुलनाथजी आप श्रीमुखते कहे जो। आजु तो कथा को फल कहत हैं। तातें भगवदीन कों अवश्य चौरासी वार्ता कहनी सुननी। जातें भगवद भक्ति होइ। और श्रीठाकुरजी के चरणारविंद पर स्नेह होइ, श्रीजी सदा प्रसन्न हैं।

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक समें अजुध्या कों पधारे। श्रीरामजी के मन्दिर में सो श्रीरामजी, श्रीलक्ष्मणजी श्रीसीताजी और हनूमानजी ए च्यारो हुते ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो मर्यादा पुरुषोत्तमायनमः तब श्रीरामचन्द्रजी, श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों अति सनमान भली भांतिसों कीऐ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू जाने और कोउ

नही समुझ्यो । ताहीतें हनूमानजी कों बुरो लाग्यो जो श्री-आचार्यजी महाप्रभू श्रीरामचन्द्रजी को मर्यादा पुरुषोत्तमायनमः ऐसें क्यों कहे डंडोत नहीं प्रणाम नहीं ।

भावप्रकाश—सो हनूमानजी के मन में ऐसें काहे कों आई जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को हनूमानजी को ज्ञान नाहीं हैं। तहां कोउ ऐसें कहे जो हनूमानजी तो श्रीरामचन्द्रजी के अत्यन्त कृपापात्र हैं। इनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को ज्ञान नांही सो कैसे संभवे ताको हेत यह है जो, श्रीगुसांईजी के सर्वोत्तम में। श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम कहे हैं जो।

श्लोक—"सर्वाज्ञात लीलोऽति मोहन"।

तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभून की लीला अति गोप्य है । जाकों आप कृपा करिकें जनावें सोई जानें।

" ताहीतें भगवदी गाऐ हैं "।

※ रागकान्हरो ※

जोलों हरि आपन पोन जनावे।
तोलों सकल सिद्धान्त सुमृति बल पढे गुनें नहीं आवे ॥ १ ॥
सुनि विरंचि नारायण मुखतें नारद को सिख दीनी।
नारद कही वेदव्यास सों आपुन सो धन कीनी ॥ २ ॥
वेदव्यास ओखध की नांई पठि तन ताप मिटाबे।
तातें पढे मुनि श्रीशुकदेब परीक्षत कों जु सुनावे ॥ ३ ॥
जदपि नृपति सुनि व्रजकी लीला दसम कही सु शुकदेवा।
पे सरबातमभाव न उपज्यो तातें करी न सेवा ॥ ४ ॥
श्रीभागबत अमृत दधि मथिकें श्रीवल्लभ सर्वोत्तम।
करि आवरन दूरि निजजन के हाथ दिऐ पुरुपोत्तम ॥ ५ ॥

साज सिंगार भोजन नानाविध सेवा रस प्रगटाए।
बृन्दावन निज लीला जनि हरि जीवन स्वाद चखाये ॥ ६ ॥

"और गोपालदासजी गाए हैं जो" ।

नित्य लीला नित्य नौतन श्रुति न पामें पार ।
और कहे जो गाय श्रुति गुणरूप अहर्निशधरे ध्यान बिचार ॥
आनन्दरूप अनूप सुन्दर पामें नहीं को पार ।

वेद की श्रुति ऐसें कहत हैं जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को पार कोऊ नहीं पावे । तो हनूमानजी कहा जाने ।

तातें हनूमानजी कों ईर्षा आई ताही समें श्रीरामचन्द्रजी । हनूमानजी के अन्तःकरण की जानी जो हनूमानजी के मन में दोष आयो है। और यह तो मेरो सेवक है, तातें हनूमानजी को दोष दूरि करिबे के लिऐ श्रीरामचन्द्रजी उपाय कीयो कहा उपाय कीनो जो हनूमानजी सों यह कहे जो तुम श्री-आचार्यजी महाप्रभून पास जाउ देखो तो कहां विराजे हैं। सो देखि आओ ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सरयू गंगा में स्नान करिकें तट पे बिराजे हैं। और सन्ध्या वन्दन करत हैं और सब भगवदी पास बैठे हैं। रसोई को सामिग्री सिद्ध करत हैं। ता समें हनूमानजी आऐ । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन हनूमानजी कों कैसे भऐ जो। साक्षात् श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप धरिकें बैठे हैं तब हनूमानजी कों सन्देह भयो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप कैसें धरयो । और हनूमानजी दंडौत करिकें अपने श्रीरामचन्द्रजी

के मन्दिर में आये। तब श्रीरामचन्द्रजी नें हनूमानजी सों पूछे जो तू श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्सन करि आयो तब हनूमानजी ने कही जो महाराज दर्सन करि आयो। परि श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो आपको स्वरूप धरि बैठे हैं। तब श्रीरामचन्द्रजी हनूमानजी सों कहे जो। उनमें इतनी सामर्थ्य है, जो मेरो स्वरूप धरि लेंइ। और हममें इतनी सामर्थ्य नांही। जो उनको स्वरूप धरें।

भावप्रकाश—सो याको कारण कहा जो श्रीरामचन्द्रजी सों श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्यरूप न धर्‍यो जाय याको हेत यह है। जो द्वितीय स्कंध श्रीभागवत की श्रीसुबोधनी में जहां चौबीस अवतार को श्रीआचार्यजी महाप्रभू निरणय कीये हैं। तहां सब अवतारन के स्वरूप लिखे हैं? कोउ अंस हैं, कोउ कला हैं, कोउ आभर्ण हैं, कोउ वस्त्र हैं, और श्रीरामचन्द्रजी पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। हास्य को स्वरूप हैं। और श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप तो, श्रीगुसांईजी आप श्रीसर्वोत्तम में कहे जो। "श्रीकृष्णास्यं" सो साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण तिनके मुखारविंद रूप श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप है। सो श्रीकृष्ण के मुखारविंद में तें हास्य प्रगट होत है। और हास्य में ते तो मुखारविंद नांही प्रगट होत। ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप धरिलें। और श्रीरामचन्द्रजी तें श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप न धर्‍यो जाइ। याही तें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सबते अधिक हैं। और सबके मूल रूप हैं, सबनको प्रागट्य श्रीआचार्यजी महाप्रभूनते हैं। और सब रस के भोक्ता हैं और वाकधीस हैं, वाणीहूँ श्रीमुख में रहत है और सब पदार्थ को भोगहू श्रीमुखते हैं।

"ताहीतें भगवदी विष्णुदासजी गाऐ हैं"।

वागीशज्ञ रशज्ञ वरुणपुनि अनुभव उभय एक गुणसं।
अखिल धरापद परसि पूतकृत ब्रज यमुना वहरत रुचिरासं ॥१॥

तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप अगाध हैं सो श्रीरामचन्द्रजी हीं जानत हैं और परम कृपापात्र दैवी जीव तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपुनों स्वरूप जनावत हैं सर्व लीला सहित साक्षात श्रीगोबर्द्धनधर के दर्शन करत हैं।

※ वार्ता प्रथम समाप्त ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रज में पधारे। सो ब्रज श्रीआचार्यजी महाप्रभून को सर्वस्व है। आपको धाम है। आप सब लीला ब्रज में करी हैं तातें ब्रज बहुत प्रिय है। सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम कहे हैं जो "ब्रजप्रियः" और दूसरो नाम कहे हैं जो "प्रियब्रजस्थितिः" ब्रज ही जिनकों प्रिय हैं। सो एक दिवस श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार करिकें राजभोग की आरती करि अनोसर करिकें आपको स्थल हैं। श्रीगोवर्द्धन पूजा के साम्हें छोंकर है तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप विराजे। उहां ही आपकी बैठक है सो ता समें एक बाई वैष्णव हुती सो आन्यौर में रहती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के पास आई सो वा बाई कों श्रीगोवर्द्धननाथजी ऊपर बहुत आसक्त हुती सो वा बाई नें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों विनती करी जो महाराज मोकों कोई भगवत् स्वरूप पधराइ देऊ। विना सेवा मेरो दिन नांही कटेगो आपके अनुग्रह तें श्रीगोवर्द्धननाथजी दर्शन देत हैं।

सो हूँ करतिहू पे, आप मोकों श्रीठाकुरजी पधराइ देऊ तो हों सेवा करूं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक स्वरूप श्रीठाकुरजी श्रीबालकृष्णजी कों पधराइ दीये । और वाई सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते कहे जो ये बालक हैं इनकों तू सदां जतन राखियो । कभू अकेले छिनहूँ मति छोडियो जो अकेले छोडेगी तो ऐ डरपेंगे श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा वाई सो ऐसें कही । जो बा वाई को मन अहर्निंश श्रीठाकुरजी में लग्यो रहे । काहेते जो मन को निरोध मुख है सो वा वाई को मन श्री-ठाकुरजी के चरणारविंद में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप धरयो । सो वा बाई को मन एक छिनहूँ श्रीठाकुरजी में ते न निकसे ऐसी वा वाई कों श्रीठाकुरजी में आशक्ति भई, जो एक छिनहूँ वह वाई दूरि जाइ तो श्रीठाकुरजी वाकों पुकारें । जो वह बाई न होइ तो जैसें लौकिक बालक अपनी माता बिनु दुख पावे । ऐसें श्रीठाकुरजी करें । सो वा बाई के स्नेह बढाइवे के लिऐं । और जो वह बाई घर को काम काज करे तो मन्दिर के आगें बैठिकें करे । रंचहू दूरि न जाइ, ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा वाई कों स्नेह दान किऐ ।

भावप्रकाश—काहेते जो कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों प्रथम पूछो है जो महाराज श्रीठाकुरजी कों प्रियवस्तु कहा है, और अप्रियवस्तु कहा है । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभू कृष्णदास सों कहे । सो थोडे में बहुत अर्थ कहे सो । जे भगवदीय होइगे ते सब समुझेंगे । सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो श्रीठाकुरजी कों तो भगवदीन कों स्नेह अति प्रिय हैं । और गोरस अति प्रिय है, सो

गोरस में दूध दही माखन घृत सब आयो प्रथम तो श्रीमुखतें स्नेह कहे ता पाछें गोरस कहे सो याको यह हेत है जो स्नेह बिना सब कछु श्रीठाकुर जी कों समर्प्यो । पै कछू अङ्गीकार न होइ श्रीआचार्यजी के मारग में स्नेह ही मुख्य है । स्नेह सो रंचकहू बहुत करिकें माने हैं । सो सूरदासजी कहे हैं जो–" गोपी प्रेम की ध्वजा " तातें स्नेह सब तें अधिक है और श्रीठाकुरजी कों अप्रिय कहा है । सो आप श्रीमुखतें कहे जो क्लेश श्रीठाकुरजी कों बहुत अप्रिय है काहेतें जो जहां क्लेश रहे । तहां श्रीठाकुरजी कभूं न पधारे । काहेते जो आप अनन्दरूप हैं । ताते आनन्द को और कलेश को परस्पर बिरोध है । जहां क्लेश होइ तहां आनन्द न रहे । जहां आनन्द होइ तहां कलेश न रहे तातें भगवदी अहर्निश भगवद् जश को वर्णन करे हैं । और भगवान के गुन को गान करत हैं भगवान को गुन है सो मंगलरूप है सो सदा भगवदी गावे हैं सो क्लेश हमारे निकट न आवे । यह क्लेश ऐसो है जो श्रीठाकुरजी ते वहिर्मुख करत है । जहां क्लेश होइ ताके हृदय में श्रीठाकुरजी कभूं न आवे और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे हैं जो श्रीठाकुरजी को धूआं अप्रिय है धूआं बालक कें बहुत असह्य है । तातें वैष्णव कों जहां धूआं होइ तहां श्रीठाकुरजी को न पधरावे । और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे हैं जो श्रीठाकुरजी कों भगवदीन को द्रोही अत्यन्त अप्रिय है । श्रीठाकुरजी की प्रतिज्ञा है जो मेरो द्रोह करेगो ताकी तो क्षमा करूंगो और मेरे भगवदीन को द्रोह करेगो ताकी तो क्षमा मोसों न होइ । सो आप दुर्वासा के प्रसंग में कहे हैं जो–"अहं भक्त पराधीन" मैं तो भगवदीन के आधीन हूँ । तातें भगवदीन को द्रोही श्रीठाकुरजी कों अत्यन्त अप्रिय है ।

सो या बाई कों आप दान कीए सो वो बाई भली भांति सों श्रीठाकुरजी की सेवा करे । रात्रिकों सोवे तो श्रीठाकुरजी के निकट ही सोवे और छिनमें कहे जो महाराज में बैठीहूँ आप

डरपो मति, और जो रंचकहूँ वा बाई की आंखि लगे। तब श्रीठाकुरजी कहे जो अरी मैं डरपतहूँ ऐसो श्रीठाकुरजी वा बाई पे अनुग्रह कीनो जो वाको निरोध सिद्ध भयो। अब एक दिवस रात्रिकों श्रीगोवर्द्धननाथजी वा बाई के घर कों पधारे। और वासों कहे जो अरी बाई किवार खोलि तब वानें कही जो में तो उठूं नहीं। में उठूं तो मेरो लरिका डरपे। तब कही जो में देवदमन हूँ। मोकूं किवार खोलि। तब वा बाईनें कहे जो। महाराज आप सवारें पधारियों। में उठूं तो मेरो लरिका डरपे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ही भीतर पधारे। तब बाईनें उठिकें दंडवत कीनी और कह्यो जो महाराज आप इतनो श्रम काहे कों कीयो। में सवारें आपके दर्शनकूं आउं हूँ तब श्रीगोवर्द्धनाथजी प्रसन्न होइकें कहे जो हों तोपरि प्रसन्न हूँ। तू कछू मांगि जो मांगे सो देऊं। तब वा बाईनें कह्यो महाराज आप श्रीआचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह सों, सब कछू दीयो है। और आप जो मोपे प्रसन्न भए हो तो में एक वस्तु मांगू हूँ, इहां श्रीगोवर्द्धन पे ल्यारी बहुत हैं सो यह लरिकान पकरि ले जात हैं। सो मेरो लरिका निपट बालक है सो यह मांगत हूँ जो याकों कभूं ले न जांइ सो यह बात सुनिकें श्री-गोवर्द्धननाथजी कों रोमांच भयो जो धन्य ए हैं। जिन पर ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को अनुग्रह है जो मो पर इनकों ऐसो स्नेह है इनकों में कहा देउं ए मेरी ऐसी सेवा करे हैं।

जो इनसों उरिण कभूं न होऊं। वह बाई श्रीआचार्यजी महाप्रभून की सेवक ऐसी भगवदी हती।

* वार्ता द्वितीय समाप्त *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक समें थानेश्वर पधारे। सो थानेश्वर के निकट सरस्वतीजी हैं। सो उहां तांई श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनुग्रह करिकें पधारते, श्रीआचार्यजी महाप्रभू सरस्वती के पार न उतरते सिंहनन्द के वैष्णव सब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों थानेश्वर आवते, जाको सेवक होनों होतो, सो थानेश्वर में आइकें होतो। जाकों ब्रह्मसंबन्ध लेनो होइ, सो ब्रह्मसंबन्ध लेय। सो सासु बहू की वार्ता में प्रसिद्ध लिख्यो है सो सासु बहू पर ऐसी कृपा हुती जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहते जो कहा करूं। सरस्वती उलंघनी नांही। नाही तो उनको घर जाइके दर्शन देतो। ऐसी कृपा उन पर करते। जो एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सरस्वती के तीर ऊपर बिराजे हते। वा ठौर मृतिका बहुत सुन्दर हती सो मृत्तिका जलसों भीजी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप वो मृत्तिका लेकें वा मृत्तिका को एक स्वरूप निरमाण कीए, सो श्रीबालकृष्णजी उनको नाम धरयो। ता समें एक वैष्णव सिंहनंद को पास ठाढो हतो। सो वानें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों बिनती करी जो महाराज मोकों एक स्वरूप पधराइ दीज़िये। मैं सेवा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू वो जो श्रीहस्त में श्रीबालकृष्णजी को स्वरूप हुतो सो

श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप प्रसन्न होइकें वा वैष्णव कों पधराइ दीये। और जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्वरूप को निरमाण कीऐ, तब वो वैष्णव देखत हुतो। सो ताहीतें वाकों सन्देह उत्पन्न भयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों वा वैष्णवनें बिनती करी जो महाराज इन स्वरूप कों स्नान अभ्यंग कैसें करवाउंगो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो अरे तू ऐसो सन्देह मति करे। जो तेरो मनोर्थ होइ सो सब करियो। सो श्रीबालकृष्णजी कों वह वैष्णव घर पधराइ कें पाट बैठाऐ। अभ्यंग शृङ्गार भोग सामिग्री सब सिद्ध कीयो। बडो वा वैष्णव कों उत्साह भयो। श्रीठाकुरजी वापर अनुग्रह करें सानुभाव जनावें। जो चहिये सो मांगि लें और श्रीबाल-कृष्णजी वाके घर में ऐसें क्रीडा करें। जैसें कोउ प्राकृत बालक करें सो वो ऐसे परम कृपापात्र भगवदी हुते। जिनके भाग्य सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने श्रीहस्त सों स्वरूप निरमाण कीऐ, सो वो वैष्णव सेवा भली भांतिसों करे।

* वार्ता तृतीय समाप्त *

तब एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुल पधारे। सो आप श्रीगोकुल में विराजे। और सब भगवदी संग हते। एक दिबस पूरब तें कोउ वैष्णव मिश्री भेट ले आयो। सो आइकें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगें धरी, सो मिश्री बहुत हुती। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासजी कूं कृष्णदास मेघन कों और सब वैष्णवन कों आज्ञा दीनी जो मिश्री बेगि

सिद्ध करो। छोटे छोटे टूक। जैसें श्रीमुख में धरे जांइ। प्रभून कों अरोगत में श्रम न होइ। तब सब वैष्णव मिश्री सम्हारन बैठे। सो कितने कटोकरा मिश्री सिद्ध भई, सो जितनीक सिद्ध भई, सो सब मिश्री श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी कों समरपी और बहुत बची सो आप श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्री-ठाकुरजी कों राजभोग समरपिकें श्रीजमुनाजी स्नान कों पधारे। सो वो मिश्री बची हती। सो सब संग लिवाइकें आप पधारे। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू। वो सब मिश्री श्रीयमुनाजी कूं समरपी, सो वो वैष्णव जो मिश्री लायो हुतो। सो वाके चित्त कों खेद भयो जो में तो जानी हती जो बहुत दिना तांई वह मिश्री थोडी थोडी चलेगी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो सब मिश्री जल में पधराइ दीनी। जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू करत हैं। सो आछो ही करत होंइगे। जो अंगीकार भई सोउ आछी। जो जल में पधराइ दीनी सोउ आछी। ऐसे वो वैष्णव विचारे मनमें, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू तत्काल वाके मन की जानी। श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो साक्षात् ईश्वर हैं।

सो वा वैष्णव कों बुलाए, और वासों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो ऐसो सन्देह तोकों काहेकों आयो यह तो सब मिश्री श्रीठाकुरजी अंगीकार कीऐ तब वो वैष्णव बोले जो महाराज जीव बुद्धि जैसें देखे तैसें मनमें आवे, आप मिश्री सिद्ध करिकें श्रीठाकुरजी कों भोग समरप सोउ देख्यो। और श्रीयमुनाजी में पधराई सोउ देख्यो। तातें ऐसो

सन्देह आयो। आप तो साक्षात् ईश्वर हो । हमारें तो श्री-ठाकुरजी और सर्वस्व आप ही हो और हमनें तो सब आपकों समर्प्यो है श्रीठाकुरजी अनुग्रह करेंगे ; सो तो आपके अनुग्रहतें करेंगे। श्रीठाकुरजी हमकों कहा जांने। हम सारिखे तो कोटा-निकोटि जीव परे हैं। आपके अनुग्रहतें मेरो भागि सिद्ध भयो है। ऐसो दैन्य या वैष्णव कों देखिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों बहुत दया आई।

भावप्रकाश—काहेतें जो आप कृपासिंधु हैं जो वस्तु काहूसों न दीनी जाइ सो अनुग्रह करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू वाकों दीनें काहेतें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम। सर्वोत्तम में श्रीगुसांईजी कहे हैं जो—

श्लोक—"अदेयदानदक्षश्च महोदार चरित्रवान्"।

सो ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा वैष्णव सों कही जो देखि या तेरी सामिग्री कों कहा उपभोग भयो है सो वा वैष्णव कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू कैसे दर्शन करवाए जो श्रीयमुनाष्टक में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप वर्णन किए हैं जो—

श्लोक—"सकलगोपगोपीव्रते"।

सो श्रीजमुनाजी सकल गोपन सों और गोपीन सों भरे हैं ऐसे दर्सन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें वा वैष्णव कों करवाये। ऐसी ठौर वाकी सामिग्री को उपयोग भयो। सो वैष्णव दर्सन करिकें बहुत प्रसन्न भयो। श्रीआचार्यजी महाप्रभू ऐसो अनुग्रह

वा वैष्णव ऊपर कीऐ । और श्रीयमुनाजी को स्वरूप प्रगट कीऐ । जो भगवदी होइ सो श्रीयमुनाजी कों ऐसें जानियो ताहीतें गोविंद स्वामी श्रीजमुनाजी में पाउ न बोरते श्रीगुसांईजी गोविंदस्वामी कों अनुग्रह करिकें ऐसे दर्सन करवाऐ सो श्री-आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी अनेक वार्ता हैं । और वैरागको स्वरूप प्रगट किऐ जो संग्रह न राखनों जगतमें यह सिद्ध भयो ।

* वार्ता चतुर्थ समाप्त *

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू उज्जैन पधारे । सो उहां चिप्रानदी है ताके तीर श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे हते । सो वह स्थल बहुत सुन्दर हतो सो तहां पास सब भगवदी बैठे हैं । श्रीआचार्यजी महाप्रभू सन्ध्या वंदन आप करत हैं । सो ऐसे में बयारि चली । सो कहूंते एक पीपर को पतौवा उड़तो चल्यो आयो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीहस्त सों वा पतौवा कों उठाइ लियो और आप सन्ध्या कीऐ हुते ताको जल उहां परयो हतो सो वह धरती भीजी हती सो वामें वा पीपर के पतौवा की डांडी श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपुने श्रीहस्त सों रोपी । सो तत्काल वाही में ते नवपल्लव पतौवा निकसन लागे सो देखत देखत तत्काल एक बडो पीपल को वृक्ष भयो । सो इन दैवी जीवन ऊपर अनुग्रह करिकें । अपनी ईश्वरयता प्रगट करी । और जब जगत में अपुनो महात्म्य प्रगट कीनों जो देखो इनमें यह सामर्थ्य हैं । ऐ साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हैं । सब कोऊ ऐसें कहे जो यह कारज मनुष्य सों न बनि आवे

और श्रीआचार्यजी महाप्रभून की जहां बैठक है । तहां छोंकर को वृक्ष है। और उज्जैन में याई पीपर के नीचें आपकी बैठक सिद्ध भई है सो श्रीआचार्यजो महाप्रभू आप उज्जैन पधारे। तब उहां ही विराजे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के श्रीहस्त को लगायो पीपल नित्य हैं।

* वार्ता पंचम समाप्त *

अब एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेल में विराजे। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बडे वैभव सों भगवत्सेवा करें। सो लोग बहुत उहां आइकें बसे श्रीठाकुरजी के वैभव सों । सेवक वैष्णव जलघरिया टहलुवा। सो तिनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ज्ञाति की एक तैलंग ब्राह्मणी आइ रही। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के प्रताप सों वाको निर्वाह तहां आछें चले। जो कोउ वैष्णव आवे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून की ज्ञाति जानिकें कछू दे जाइ! और श्रीआचार्यजी महाप्रभून के घर में प्रस्ताव, विबाह, जनेऊ, छठी, वधाई, जो आवे, तामें वाको सनमान करें। और वाको ऐसो सुभाव है जो। श्रीआचार्यजी महाप्रभून को उत्कर्ष देखकें मनमें कुढे। वैष्णव देशतें विदेशतें आवें। सो सब बहू वेटीन कों दंडवत करें। सो देखिकें वह कुढे जो मोकों तो कोउ पूछतहू नांही। यह जानिकें वह ब्राह्मणी अपने मनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों द्वेष माड्यो। परि कछू बनि न आवे। परि मनमें विचारे जो काहू रीतिसों इनकों दुख देउं तो आछो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के जलघरिया

श्रीयमुना जल लेवे कों जाते। सो एक दिवस वा ब्राह्मणी नें अपने लोटा को जल गागरि पर डारि दीयो। सो वह जल-घरिया कुढ्यो बहुत सो वो तो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक हैं कोउ और दुःख देतो आप सहन करें। परि आप वाकों दुःख न दें। और वो ज्ञात की ब्राह्मणी हुती। तासों श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों जाइकें जलघरिया ने कही जो महाराज! देखो आपकी ज्ञाति की ब्राह्मणी है सो हमारी गागरि पर जानिकें अपने लोटा को जल डारि दियो है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो वासों बोलो मति और गागरि ले जाइकें भरिल्याओ सो जलघरिया फेरि स्नान करिकें दूसरी गागरि भरिल्यायो। ऐसे ही नित्य जाइ जल भरिल्यावे, परि वा बाई की दृष्टि परे तो एकाध गागरि नित्य छुवावे। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगे वो जलवरिया नित्य पुकारत जाहि। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखते एही कहे जो बोलो मति और गागरि भरिल्याओ काहेते जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों एही सिद्धान्त है। आप विवेक-धैर्याश्रय में लिखे हैं जो।

श्लोक–"त्रिदुःखसहनं धैर्यमामृते"।

परि वो जलवरिया बहुत काहे भए, कहा करें कछू बसाइ नहीं और दूसरो कोउ मारग नहीं जो वापेंडे जल ले आवें तब वो जलघरिया नें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों बिनती कीनी जो महाराज यह बाई बहुत दुःख देति हैं। आप तो वाको वरजत

नहीं और आपकी आज्ञा विना हमसों कछू कह्यो न जाइ सो महाराज हम कहा करें। भंडार को तो द्रव्य को जान होत है और हमकों न्हानो पडे सो यह बात सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों दया आई। और आप कहे जो बाकी वस्तु तुम ले आओ तब जलघरिया कहे । जो महाराज वह बाई तो हमारो मोंहडो देखे है। तब ऊपर पानी डारे है सो वो हमकों कछू कैसें देइगी। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहे जो तुम जाउ वो आपते तुमकों देइगी। ऐसे में जलघरिया श्रीयमुनाजी जल की गागरि भरिकें आवत हतो। और वह बाई अपने घर में पोतना करति हती। सो वाकों सुधि आई जो आज में काहू जलघरिया की गागरि छुवाई नांही। सो उठिकें बाहर आई जो देखे तो जलघरिया तो आगें निकसि गयो । इतने में पोतना लैकें गागरि पर मारयो। सो पोतना गागरि सों चिपटि गयो, सो वो जलघरिया वैसेंई लिऐं लिऐं गागरि श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगें धरी और कहे जो देखो महाराज हमकों नित्य वो ऐसो दुःख देत हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप आज्ञा दीनी जो । या पोतना धोइकें आछो करिल्याउ सो जलघरिया वह पोतना धोइ लायो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ताके काकड़ा सिद्ध करवाए सो पिछली रात्रि उन काकडा-न सों, रसोई सब देखी पोती । वा ब्राह्मणी की सत्ता को अंगीकार भयो। और वो ब्राह्मणी ताही समें घर सोइ उठी और वाको ज्ञान भयो जो देखो में कितनों श्रीआचार्यजी महा-

प्रभून कों अपराध कियो है। और देखो वो कैसे कृपाल हैं। जो मोसों कछू नहीं कह्यो और वो सर्वसामर्थ्यवान हैं, इनको ही सब गाम हैं जो ए आज्ञा करें तो मोकों इहां ते वाही समें काढि देहिं परि ऐतो साक्षात् ईश्वर हैं। ईश्वर ही इतनों सहनि करें जीव को दोष न देखें होइतो में इनसों जाइकें अपराध क्षमा करवाऊँ। तब वो ब्राह्मणी वाही समें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों आइकें बहुत प्रणपति कीनी जो महाराज में आपको बहुत अपराध कियो है। सों क्षमा करो में आपको स्वरूप नहीं जान्यो। आप तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हो। अपनो स्वरूप जब आप जीवकों जनावो तब जीव जानें। जीव तो संसार रूपी अंधकूप में परयो है। आप जाको अनुग्रह करिकें काढोगे सोई निकसेगो ताते मोकों आप अनुग्रह करिकें सेवक करो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू परम उदार वापर अनुग्रह करिकें वाकों अंगीकार किए। ताहीतें सूरदासजी गाए हैं जो।

"विमुख भरे करुणाया मुखकी जब देखो तब तैसे"।

और श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम है जो।

※ रागबिहागरो ※

श्रीवल्लभ महासिंधु समान।
सदा सेवत होत सबकों अभय पद को दान ॥ १ ॥
कृपाजल भरिपूर हो जहाँ उठत भाव तरंग।
रतन चौदह सब्य पदारथ भक्ति दसविधि संग ॥२॥

पुष्टि मारग बडी नौका तरत नहीं अयास।
ढिग न आए द्विविध आसुर मरे मीन निरास ॥३॥
जहां सेत वंध्यो प्रगट करि सुत विट्ठलेश कृपाल।
भयो मारग सुगम सबकों चलत नेंकु न आल ॥४॥
पुष्टि रसमय सुधा प्रकटी दई सुर निज दास।
असुर बंचे मनुज माया मोह मुख विधु हास ॥५॥
छांडि सागर कौन मूरख भजे छीलर नीर।
रसिक मनतें मिटी इच्छा परसि चरण समीर ॥६॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धान्त श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रगट किये जो जीव की सत्ता कों श्रीठाकुरजी अंगीकार करें। तब जीवकों मन फिरे यह अङ्गीकार की परिक्षा है। ताहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगुसांईजी जीव की सत्ता को उपयोग श्रीठाकुरजी बिषें करवावें। तब तत्काल वाको मन फिरि जाइ। और भक्ति होइ और या जीवकी ममता महादोष रूप है। सो दोष निवर्त्त व्हे जाइ सो या जीवमें दोय बड़े दोष हैं। एक अहंता, और ममता, अहंता सो तो मैं, और ममता सो मेरो, सो मैं और मेरो, यही दोय बड़े बाधक रूप हैं। सो यह जीव जब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के शरण आवे। तब ये दोउ छूटिजाँइ। तब ही जानियें जो यह जीव शरण आयो। यह सरन आए की परिक्षा है। जीव को यह धर्म हैं जो मैं और मेरो कातें जो यह जीव संसार में पर्यो है। श्रीठाकुरजी तो भूलि गये हैं। तातें मैं और मेरो सूझे है। ऐसे जीव महा दोषवंत देखिकें। श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों दया आई सो तिनके लियें आप प्रगट भये, सो जीव की अहंता और ममता दूरि कीनी। नाम देके तो अहंता दूरि कीनी। और ब्रह्मसंबन्ध करवाइकें जीव की ममता दूरि कीनीं अहंता सो कहा कहत हुतो जो मैं सो नामते यह सिद्ध भयो जो मैं तुम्हारी शरण हूँ, रओ ब्रह्मसम्बन्धतें यह सिद्ध भयो, जो कछू है सो तिहारो है। मेरो कछू नहीं, मैं तुम्हारो दास हूँ। सो नवरत्न में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप

श्रीमुखतें कहे जो—"साक्षितोभवताखिला" साक्षीवत् होइकें रहनों। तो संसार की पीडा याकों वाधित न करे । ताहीतें भगवदी सब श्री-ठाकुरजी की सत्ता मानत हैं और आप साक्षात् होइके रहत हैं ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को मारग है । जाको बडो भाग्य होइगो। सोई सरण आवेगो ।

श्रीआचार्यजी महाप्रभू गृहस्थाश्रम में ज्ञान और वैराग दोऊ अपुने भगवदीन कों सिद्ध करि दिऐ हैं। ज्ञान तो यह जो एक भगवत् सेवाही कों परम पुरुषार्थ ही जानत हैं । और गृहस्थाश्रम में । श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने भगवदीन कों ऐसो दान कियो है जो घर में स्त्री है, पुत्र भाई हैं, कुटुम्ब हैं, ये श्रीठाकुरजी के चरणारबिंद विना काहू सों स्नेह नांही । एक श्रीठाकुरजी सों स्नेह है । सो प्रतिक्ष दीसत हैं घर में तो कोऊ मनुष्य जात रहत हैं । कालबसते तो ताहू समें भगवदी कों श्रीठाकुरजी की सेवाही की चिंता होत है । जो मति मेरें श्रीठाकुरजी कों अवार होइ । भगवदीन को मन श्रीठाकुरजी की सेवा ही में अहनिंस रहत हैं । ताहीतें संसार को क्लेश भगवदीन कों वाधक नांही करत । ताहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू गृहस्थाश्रम में ज्ञान वैराग दोउ भगवदीन कों सिद्ध करि दीये हैं । यह परम पुरुषार्थ रूप हैं । यह ज्ञान और वैराग्य दोउ भगवान की प्राप्त के साधन रूप हैं । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अनेक दैवी जीवन कों सुगम करि दिये हैं । ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू परम दयाल हैं । अडेल में बिराजे भगवदीन कों अनेक प्रकार सों आनन्द को दान करत हैं ।

* वार्ता छठवीं समाप्त *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू एक समें गंगासागर पधारे तब श्रीठाकुरजी नें आज्ञा दीनी जो तुम अब मेरे पास आओ तब शीआचार्यजी महाप्रभू आप विचारे जो श्रीठाकुरजी तो आज्ञा कीनी जो तुम मेरे पास आवो । और हमनें तो मनोर्थ

बहुत विचारयो है जो कार्य बहुत करनों हैं। श्रीठाकुरजी की इच्छा तो ऐसी भई है तातें अब कहा करनों। ता मधें श्री-आचार्यजी महाप्रभू तृतीयस्कंध की सुबोधनी समाप्त कीनी। और चतुर्थस्कंध की सुबोधनी को आरंभ करिबे को विचार करत हुते। तैंसेमें आज्ञा भई, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू चतुर्थस्कंध, पंचमस्कंध, षष्टमस्कंध, ऐ छै स्कंध छोडिकें दशम-स्कंध की सुबोधनी को आरम्भ कीऐ।

भावप्रकाश—यह जानिकें जो दशमस्कंध बडो पदार्थ है। निरोध लीला है। सब को फल है, भगवदीन को बिलास है। लीला समुद्र है। और सब स्कन्ध श्रीशुकदेवजी कहे हैं। और राजा परीक्षत सुने हैं। और दशमस्कन्ध श्रीठाकुरजी आप कहे हैं। और श्रीठाकुरजी आप ही सुने हैं दशमस्कन्ध की सुबोधनी के आरम्भ में।

एवंन्निशम्य भृगुनंदन साधुवादं वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातम्।
प्रत्यच्र्य कृष्णचरितं, कलिकष्मषघ्नं व्याहर्तुमारभत भागवतप्रधानः॥१॥

या श्लोक की सुबोधनी में श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप लिखे हैं जो'वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातं' जो आप ही श्रीठाकुरजी कहें। और आप ही सुने और दसमस्कन्ध में। जन्म प्रकरण में सब ब्रज की कथा श्रीनन्दराइजी, श्रीयसोदाजी, और सब ब्रज भक्तन की कथा है। सो तिनकों ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू मारग प्रगट कियो है सो वह मारग तो ब्रज भक्तन को है। श्रीआचार्यजी महाप्रभू दैवी जीवन के लिऐ प्रगट कियो है। ताहीतें यह विचारकें बीच में षष्टमस्कन्ध छोडिकें दशमस्कन्ध की सुबोधनी करिबे को आप आरम्भ कीऐ।

सो आप कौंन प्रकार सुबोधनी कीऐ श्रीआचार्यजी महा-प्रभू आप कहत जांइ और माधवभट्ट कास्मीरी लिखत जांइ।

सो जहां माधवभट्ट न समझें, तहां लेखनि धरि राखें। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू उनसों मसुस्काइकें कहें। तब माधवभट्ट लिखें सो मारग चलत ही ग्रन्थ सिद्ध होइ। भोजन करिकें आप विराजें। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहें सो ऐसें कितनेक ग्रन्थ सिद्ध भए।

* वार्ता सातवीं समाप्त *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमथुरा पधारे। सो मथुरा में फिरि श्रीठाकुरजी की आज्ञा भई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों दूसरी आज्ञा दीनी जो तुम बेगि पधारो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने मन में विचारे जो श्रीठाकुरजी तो बहुत उतावल करत हैं। और इहां तो अभी कारज रह्यो है, तातें यह आज्ञा श्रीठाकुरजी की बनि न आवेगी। तातें जैसें बनें तैसें दशमस्कंध निरोध लीला सम्पूर्ण होइ तो आछो याहीतें श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम है जो।

"भक्तकृपार्थकृतकृष्ण आज्ञाद्वयोल्लंघनायनमः"

सो अपने भगवदी दैवी जीवन ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभून को ऐसो अनुग्रह है जो श्रीठाकुरजी की दोइ आज्ञा न मानी।

भावप्रकाश—और याको दूसरो अर्थ और है जो श्रीठाकुरजी रूप और नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों प्रगट करनों हैं सो रूप तो श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट कीऐ। और नाम तो तब प्रगट किऐ होइ जो

श्रीसुबोधनी प्रगट होइ तो। तातें सुबोधनी प्रगट करिबे के लिऐं श्रीठाकुरजी की दोइ आज्ञा श्रीआचार्यजी महाप्रभून उलंघन कीनी।

श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों वेगि बुलावत हैं ताको कारण कहा श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों आप ही तो आज्ञा दीनी जो दैवी जीवन कों उद्धार करो। वो मोतें बहुत दिनन के बिछुरे हैं। ऐसी दैवी जीवन के उपर श्रीठाकुरजी कों दया आई। सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम के आरंभ में लिखे हैं। और कहे हैं जो।

श्लोक—"दययानिज महात्म्यं करिष्यन्प्रकटं हरिः"।

सो श्रीठाकुरजी दैवी जीवन के ऊपर अनुग्रह करिकें। श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों भूतल में प्रगट किऐ। श्रीठाकुरजी की आज्ञातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे। अब श्रीठाकुरजी आज्ञा कीऐ जो वेगि पधारो तुम ताको हेत यह है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम श्रीवल्लभ हैं। सो श्रीठाकुरजी कों बहुत प्रिय हैं। ताईतें श्रीआचार्यजी महाप्रभून को नाम श्रीसर्वोत्ताम में श्रीगुसांईजी "वल्लभाख्यः" ऐसो नाम कह्यो है। तातें श्रीठाकुरजी कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू अति वल्लभ हैं और श्रीआचार्योजी महाप्रभून कों श्रीठाकुरजी अति प्रिय हैं। परस्पर ऐसो अनिरवचनीय स्नेह है। ऐसो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों स्नेह। श्रीठाकुरजी ऊपर हैं। तो श्रीठाकुरजी कों छोडिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू भूतल ऊपर कैसें पधारे।

याको हेत यह जो स्नेह जो कोउ पदार्थ है ताको यही स्वरूप है जो आज्ञा उलंघन न करनी। आपुन कों दुःख होइ सो सब सहन करनों, ऐसो स्नेह को रूप है जबतें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी सों पहुँचिकें बिछुरिकें भूतल में पधारे हैं। तबतें सदां विरह को अनुभव ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू करत हैं सो श्रीगुसांईजी श्रीसर्वोत्तम में कहे हैं जो—"विरहानुभवैकार्थ सर्व त्यागोपदेशकः" तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अहर्निश विरह को अनुभव करत हैं। और श्रीआचार्यजी

महाप्रभू आप तो पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। और श्रीगुसांईजी वल्लभाष्टक में लिखे हैं जो—"वस्तुतः कृष्णएव"। तातें श्रीकृष्णहू श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप हैं। श्रीगोवर्द्धनधर आप हैं, और पूर्णपुरुषोत्तमहूँ श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ही हैं।

"ठौर ठौर भगवदी गाए हैं जो"।

※ रागगोरी ※

श्री लक्ष्मणनन्दन जै जै जै।
भक्त हेत प्रगटे पुरुषोत्तम मन बांछित फल निज जन दे॥ १॥
सुख मुखद्रवित सुधारस मथिकें गूढ भाव दसविध करिले।
मायावाद कलिंद दर्प दल दैवी जीवन दान अभे॥ २॥
परिक्रमा मिस परसि पूतकृत भूतल तीरथ राज सबे।
बसो निरंतर मेरे हिय में दासगुपाल पदांबुज द्वे॥ ३॥

अब जो काहू कों संदेह होइ तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ही श्रीठाकुरजी हैं तो आज्ञा कौन कीये, और कौन पे कीये ताको हेत श्रीशुकदेवजी पंचाध्याई में लिखे हैं।

श्लोक—अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमास्थितः।
भजते तादृसीक्रीडा याः श्रुत्वा तत्परो भवेत्॥ १॥

तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ही अपुने दैवी जीवन ऊपर अनुग्रह कीए। साक्षात् पुरुषोत्तम रूप धरिकें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू भूतल में पधारते तो। सब जगत शरण आवे। सो सब जगत को तो उद्धार श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों करनों नांही। श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो केवल भगवदी दैवी जीवन के लिए भूतलमें पधारे। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हैं श्रीगोवर्द्धनधर हैं भगवदीन कों ऐसे ही दर्शन देत हैं और सब जगत तो ऐसें जानत हैं जो ऐ कोउ बड़े महा-पुरुष हैं, बड़े तेजस्वी हैं, महापण्डित हैं, दिग्विजे कीनी हैं, उनकों

श्रीआचार्यजी महाप्रभून को इतनों ही ज्ञान हैं । ये श्रीठाकुरजी को स्वरूप । श्रीआचार्यजी महाप्रभून को है । सो ज्ञान नांही । सो श्री-गुसांईजी श्रीसर्वोत्तम में लिखे हैं जो—

श्लोक—प्राकृत्तानुकृतिव्याज मोहितासुरमानुषः ।

" और भगवदी कीर्त्तन में गाऐ हैं जो " ।

" असुर वंचे मनुज माया मोह मुख मृदुहास " ।

तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के मृदुहास सों सब आसुरी जीव तो मोहित होत हैं । और दैवी जीवन कों तो सकल लीलाविसिष्ट के दर्शन होत हैं जैसो जैसो भगवदी मनोर्थ करत हैं । ताही प्रकार सों श्रीआचार्यजी महाप्रभू दर्सन देत हैं ।

※ वार्ता आठवीं समाप्त ※

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अडेल में बिराजत हते । दशमस्कंध की सुवोधनी संपूर्ण भई । और एकादसस्कंध के चारि अध्याय की सुवोधनी संपूर्ण भई सो वामें नवयोगीन को प्रसङ्ग है । सो श्रीठाकुरजी आप उद्धव के आगें कहे हैं । सो आठयोगीन के ऊपर तो श्रीसुवोधनी भई और नवमो योगी करिभाजन ताके प्रसङ्ग के सुवोधनी कों श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिचार किये जो ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों श्रीठाकुर-जी की तीसरी आज्ञा भई । सो कैसी आज्ञा श्रीठाकुरजी की भई जो—" तृतीयालोकगोचरः " सो श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों कहे जो । तुम सब जगततें अगोचर रहो । जैसें सब कोई तिहारो दरसन न करे । और जे भगवदी हैं तुम्हारे हैं

तिनकों तो तुम्हारे दरसन नित्य हैं वो एक छिनहूँ दर्सन बिना रहि न सकें वो ऐसे कृपापात्र हैं। सो आगें भगवानदासजी की वार्ता में लिखेंगे अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दरसन नहीं देते।

भावप्रकाश—ताको हेत कहा। जैसें श्रीठाकुरजी श्रीकृष्णाअवतार में सब जगत कों दर्सन देते। तामें असुरहू दर्सन करते, ये भक्त बिना दर्सन को फल न होइ। सो सूरदासजी कहे हैं जो—"भक्त बिना भगवंत सुदुर्लभ कहत निगम पुकारि" जिनको श्रीठाकुरजी ऊपर स्नेह है, और भक्त हैं, और श्रीठाकुरजी के स्वरूप को ज्ञान है, ते अनावतार दसामें हूँ सदैव दर्सन करत हैं। और भगवान की लीला नित्य है। नित्य व्रज में विहार करत हैं।

" सो भगवदी गाए हैं जो "।

" सदा व्रज ही में करत बिहार "।

और भगवदी श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक और सब दैवी जीव तिनकों जब जब आरति होत है। तब ही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दर्सन देत हैं।

" सो गोपालदासजी गाए हैं जो "।

" आरति हरन चरन अंबुज पद बलि बलि दास गोपाल "।

श्रीआचार्यजी महाप्रभून की नित्य अखण्ड लीला हैं।

सो जब श्रीठाकुरजी तीसरी आज्ञा दीनी, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप बिचार किए जो कौन रीतिसों पधारनों। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह बिचारे जो सन्यास ग्रहण करें। काहेतें जो ब्राह्मण को स्वरूप जो धरे तो ब्राह्मण को च्यारो

आश्रम कों अंगीकार करनों। सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रह्मचर्याश्रम कों अंगीकार किऐ। ता पाछें श्रीठाकुरजी की आज्ञातें विवाह भयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू गृहस्थाश्रम को अंगीकार किये। सो जब श्रीगोपीनाथजी और श्रीगुसांईजी को प्रागठ्य भये। तबलों गृहस्थाश्रम को अंगीकार किऐ। ता उपरान्त। श्रीआचार्यजी महाप्रभू वानप्रस्थाश्रम को अंगी-कार किये। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रह्मचर्य कीऐ सोउ अलौकिक कीऐ जो मनुष्य सों न बनि आवे। ईश्वर सों हीं बनि आवे, तैसो ही गृहस्थाश्रम कीऐ आप साक्षात् पुरुषोत्तम के घर साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम को प्रागठ्य भयो।

" सो गोपालदासजी गाऐ हैं "।

पूर्ण ब्रह्म श्रीलक्ष्मण सुत पुरुषोत्तम श्रीविठ्ठलनाथ।
श्रीगोकुलमां प्रगट पधार्या स्वजन कीधा सनाथ ॥ १ ॥

तैसो ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू वानप्रस्थाश्रम कीऐ जो साक्षात् ईश्वरसों ही बनें। सब पदार्थ विद्यमान हैं। और तिनसों वैराग हैं। और ता उपरान्त श्रीआचार्यजी महाप्रभू सन्यास ग्रहणहू ऐसें ही कीऐ जो। तीनों वस्तु त्याग कीये। अन्न जल और संभाषण। सो यह विचारिकें सन्यास ग्रहण की आज्ञा श्रीमहालक्ष्मीजीतें मांगी। काहेतें जो स्त्री की आज्ञा बिना सन्यास ग्रहण न होइ सो वो तो आज्ञा दीऐ नांही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू तैसें ही करत भये। तैसें कृष्णावतार

में आप कीयो है जो जब पधारिबे को समें भयो, तब च्यारो आडी अग्नि को आव्रत् करि लिऐ। ताको नाम आव्रताग्नि हैं। जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभू कृष्ण अवतार में कीऐ तैसें ही अब कीऐ। तब श्रीमहालक्ष्मीजी अग्नि कों देखिकें कहे जो आप निकसो अग्नि को उपद्रव बहुत भयो है, सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों तो इतनों कहवावनों ही हुतो जो निकसो, सो इतनों सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सन्यास ग्रहण करिकें कासी पधारे।

※ वार्ता नववीं समाप्त ※

ताको कारण कहा जो कासी हैं। तहां अभक्तन को वास है। आसुरी जीव बहुत हैं, और श्रीआचार्यजी महाप्रभू। जितनी लीला किऐ। सो सब ताको कारण हैं। तातें अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू। आसुरव्यामोह लीला की इच्छा कीनी हैं। सो आसुरव्यामोह लीला तो तहां होइ जहां आसुर होंइ भगवदीन में तो आसुरव्यामोह लीला होइ नहीं काहेतें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू भगवदीन कों तो नित्य दर्सन देत हैं। पुरुषोत्तमदास सेठ के घर में बैठक हैं। तहां नित्य दैवी जीव दर्शन करत हैं। श्रीआचार्यजी महाप्रभू आसुर जीव कों व्यामोह करत हैं ताको कारण कहा।

भावप्रकाश—जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आसुरव्यामोह लीला न दिखावें तो वो आसुर कृतार्थ होइ जांइ तातें वो ऐसें जानत हैं जो जैसो और जीव को जन्म और अंतकाल होत हैं कैसें इनहूँ कों भयो।

आसुर जीव ऐसें जानत हैं। जैसें श्रीदेवकीजी के घर भगवान प्रगटे फेरि व्रज में सब लीला करी फेरि विवाहदिक सब कीने पुत्र पौत्र भये तहां उपरान्त प्रभास लीला श्रीठाकुरजी कीनी। वोहू आसुरव्यामोह लीला है। और भगवदीन कों तो श्रीठाकुरजी सदैव दर्शन देत हैं। अखंड बिराजमान हैं।

"ताहीतें भगवदी गाऐ हैं जो"।

नित्य लीला नित्य नौतन श्रुति न पामें पार"।

तैसें ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू नित्य विराजमान हैं। भगवदीन कों सर्वत्र दर्सन देत हैं। श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास श्रीआचार्यजी महाप्रभू सदैव दर्शन देत हैं। और अपने घर में श्रीनवनीतप्रियाजी के पास श्रीआचार्यजी महाप्रभू सदैव विराजत हैं। और व्रज में श्री-आचार्यजी महाप्रभू सदैव विराजत हैं। और श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम में लिखें हैं जो—

"गोवर्द्धनस्थित्युत्साहस्तल्लीलाप्रेमपूरितः"।

श्रीगोवर्द्धन में ही सदा प्रसन्न विराजत हैं। और श्रीगोवर्द्धनधर की लीला में जिनकों आसक्ति हैं। और जहां तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून की बैठक है। तहां तहां सदैव भगवदीन कों दर्शन देत हैं।

* वार्ता दसवीं समाप्त *

अब ता उपरान्त श्रीगुसांईजी सकुटुम्ब लेकें कासी पधारे। श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों। और भगवदीहू संग हते। तब एक समें श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों प्रार्थना करी जो हमकूं कहा आज्ञा होत है। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो जा समें सन्यास कों अंगीकार कीऐ तबतें संभाषण

को त्याग कीऐ। सन्यासी कों बोलवो उचित नांही तब श्री-आचार्यजी महाप्रभू श्रीगुसांईजी कों साढे तीनि श्लोक सिक्षा के लिखिकें दीने जो तुमकों यह कर्तव्य है। सो साढे तीन

श्लोक—यदा वहिर्मुखा यूयं भविष्यथ कथंचन।
तदा कालप्रवाहस्था देहचित्तादयोऽप्युत ॥ १ ॥
सर्वथा भक्षयिष्यंति युष्मानिति मतिर्मम।
न लौकिकः प्रभुः कृष्णो मनुते नैव लौकिकम् ॥२॥
भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्व चैहिकश्चसः।
परलोकश्च तेनायं सर्वभावेन सर्वथा ॥ ३ ॥
सेव्यः स एव गोपीशो विधास्यत्यखिलं हि नः।

जो ग्रन्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभू पहलें प्रगट किऐ तिन सबको जो सार पदार्थ हतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू अब प्रगट किऐ सो कहा प्रगट किऐ यह प्रगट किये जो अपुनो स्वरूप हतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप जनाए जो मेरे ऊपर विस्वास राखोगे। तो सब कार्य सिद्ध होइगो। काल-बाधा न करेगो। और मेरे चरणारविंद की प्राप्ति शीघ्र होइगी। ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू या ग्रन्थ में कहे, सो कहिकें श्री-आचार्यजी महाप्रभू आप श्रीगङ्गाजी के प्रवाह के भीतर पधारे श्रीगुसांईजी वल्लभाष्टक में आप लिखे हैं जो, "स्वामिन् श्रीवल्लभाग्ने" श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप अग्नि करिकें कहे हैं।

भावप्रकाश—सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू कैसी अग्नि हैं साक्षात् पुरुषोत्तम के श्रीमुखतें जो आधि दैविक अग्नि हैं। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू हैं। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक। विष्णुदास छार-वाल हुते। सो तिननें यह पद गायो है जो।

*** रागगोरी ***

बंदेहं तं बिमलहुतासं।

जातें प्रगट प्रदीप श्रीविट्ठल अमरअभूत तिमर भवनासं॥ १॥
उठत स्फुलिंग विशद निज सेवक वचनमृदुप्रेर मरुत वलिखासं।
अन्न भजन दावानल चहूँदिस मायावाद मनुज मृगत्रासं॥ २॥
पित समीप दूरिजन तापं अनुभव उभय एक गुणभासं।
देवानन जडि अमित समीर वस पुरुषोत्तममुखपद्मविकासं॥३॥
वागीशज्ञ रसज्ञ बरन पुनि अतुल सुभावप्रहत रुचिग्रासं।
अखिलधरा पद परसिपूत कृत व्रज जमुनां वहरत रुचिरासं॥४॥
श्रीवल्लभ वल्लभ सुत गिरधर नरभूपणमति गूढ प्रकासं।
श्रीलक्ष्मणकुल विष्णुस्वामीपंथ श्रुति बचमंडल कह विष्णुदासं॥५॥

"और छीतस्वामी गाए हैं"।

*** रागगोरी ***

हरिमुख अनिल सकल सुरफुनि मुख तिन तनधार धर्मधुर लीनी।
लेराख्यो सुरलोक भोगफल निज मरजाद भक्ति भलि कीनी॥ १॥
तुवहित भजन उपासन सेवा भलो मति बिमल दोष दुख हीनी।
छीतस्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल सब सुख निधि आपनेनकों दीनी॥२॥

ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को आदिदैविक अग्नि को स्वरूप हतो सो वा समें प्रगट कीए जैसें कृष्णावतार में श्रीठाकुरजी तेजोमय रूप धरे। सब ब्रह्मादिक पधराइवे को

आऐ हुते परि वा तेजपुंज के आगें काहू कों कछू खबरि न पडी श्रीठाकुरजी अपने सधाम पधारे। तैसें ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू कीऐ श्रीआचार्यजी महाप्रभून की अब ऐसी इच्छा भई है जो अब मेरें सबनकों दर्सन न देनों, सो आप अंतःकरण प्रबोध में लिखे हैं जो "तृतीयोलोकगोचरः" अगोचर कहा जो यह श्रीठाकुरजी नें आज्ञा करी जो सब जगत कों दर्शन मति देऊ जैसें कृष्णावतार में सब कोउ दर्शन करत हते। और अब तो जाकें ज्ञान भक्ति और भगवद् अनुग्रह होइ। सो दर्शन सदैव करें। और श्रीठाकुरजी तो न कहूँ आवत हैं। न कहूँ जात हैं। माया को टेरा जब दूरि करत हैं। तब दर्शन होत हैं। और माया को टेरा आडो आवत है। तब दर्सन नांही होत। तातें आविरभाव तिरोभाव सदैव हैं। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास ब्राह्मण कडा-मानिकपुर के। तिनकी वार्ता में लिखे हैं। जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सङ्ग कासी में वैष्णव हते। तिनमें तें एक वैष्णव कडा मानिकपुर में आऐ। सो उनकों अच्युतदास सों बहुत स्नेह हतो। सो वो यह जाने जो अच्युतदास सों मिलें तो यह क्लेश निबर्त होइ। यह कैसो क्लेश है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू दुःख के समुद्र में डारि दोने हैं।

भावप्रकाश—जैसें श्रीठाकुरजी मथुरा पधारे तब ब्रज भक्तन के विरहरूपी क्लेश के समुद्र में डारे तैसें ही श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने भगवदोन कूं ऐसो विरह को दान किऐ सो काहेतें कीऐ जो। विरह है

सो मुख्य है याहीतें विरह को नाम उतरदल है सो विरह मुख्य है तातें और दुख काहेतें कहत हैं सो याको हेत सूरदासजी कहे हैं जो—

" हृदयतें यह मदन मूरति छिन न इत उत जात " ।

और याही की पिछली तुक में कहे हैं जो—

" सूर ऐसे दर्श कारण मरत लोचन प्यास " ।

सो नेत्र की प्यास तो श्रीमुख देखे ही सों मिटे ।

" सो कृष्णदासजी गाए हैं जो " ।

※ रागसारंग ※

गिरधर देखें ही सुख होइ ।

नैनवंतन को यही परम फल वंदत द्वेतिहूलोइ ॥ १ ॥
मरकतमणि और नीलकमल को सर्वसु लियो है निचोइ ।
कृष्णदास प्रभू गिरिधर नागर मिलि विरह दुःख खोइ ॥ २ ॥

सो कृष्णदासहू विरह को दुःख कहे हैं ।

तातें यह वैष्णव यह बिचारे जो । अच्युतदास कों मिलिए तो यह दुःख निवर्त होइ । वो बड़े भगवदीय हैं । उन परि श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों वडो अनुग्रह है अपनो स्वरूप उनकों पधराइकें दीनो हैं । तातें उनसों मिलें यह विचारिकें कडा मानिकपुर में आए अच्युतदास कों मिले तब अच्युतदास इनकों अंतःकरण बहुत शुष्क देख्यो । और मुख मुरझाइ गयो है । तब अच्युतदास इन वैष्णवन सों पूछे जो । तुम्हारी ऐसी दशा काहेते है ।

※ वार्ता ग्यारहवीं समाप्त ※

तब उन कहे जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीठाकुरजी के पास पधारे ।

भावप्रकाश—सो काहेतें कहे जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू इनको ऐसें ही दर्शन दीये । जैसें श्रीभागवत महात्म्य में श्रीठाकुरजी की सब रानी द्वारिकातें ब्रज में आंई सो श्रीठाकुरजी कों वैकुण्ठ पधारे सुनिकें अति खेद भयो । सो सब ब्रज में आंई सो आगें श्रीयमुनाजी के तीर बिखें श्रीकालिन्द्रीजी को दर्शन भयो । सो वो कालिन्द्रीजी श्रीयमुनाजी के तीर बिखें बहुत प्रसन्न बैठे हुते । सो उनकों देखिके यह जो सोलह हजार जो भक्त हैं श्रीठाकुरजी की नायिका सों श्रीकालिन्द्रीजी सों पूछे जो हमारो तुम्हारो सम्बन्ध तो समान हैं श्रीठाकुरजी सब के पति हैं । सो वैकुण्ठ पधारे हैं । और तुम तो प्रसन्न हो । और हमकों तो क्लेश ने बाधा कीयो हैं । ताको हेत कहा । तब श्रीकालिन्द्रीजी कहे, जो ऐसो श्रीठाकुरजी कबहूँ न करें । यह तो आसुरव्यामोहलीला है । श्रीठाकुरजी तो सदा श्रीयमुनाजी के पुलिन बिखें विहार करत हैं । तातें तुम सब श्रीठाकुरजी के गुन गान करो तुमकोंहू श्रीठाकुरजी दर्सन देहिंगे । श्रीठाकुरजी तो नित्य लीला करत हैं ।

तातें तैसें ही अच्युतदास इन वैष्णवन सों कहे जो । श्रीआचार्यजी महाप्रभू ऐसी कबहूँ न करें । भगवदीन कों तो नित्य दर्सन देत हैं जिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अङ्गीकार कियो है सो सदैव लीला सहित श्रीठाकुरजी के श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन नित्य करत हैं ।

" सो गोपालदासजी गाए हैं जो " ।

जहां नित्य रास बहु पेरें रे, मध्य नायक नृत्यत घेरे रे ।
जहाँ रत्न जाटत तट सरिता रे, जहां नव पल्लव भूमिहरतारे ।।

जहां रत्न धातु गिरि राजेरे ।
वाजित्र विविध परे बाजेरे ॥
जहां युवति यूथ बहु मांयेरे ।
श्रीजी श्यामल वर्ण सुहाये रे ॥
एणी पेरे श्रीगुसांईंजी ने जाणेरे ।
जाणी अहर्निश गाय बखाणेरे ॥
जे जीव जात होइ कोई रे ।
तेने तत्क्षण सर्व सुख होई रे ॥
सेवक जन दास तुम्हारो रे ।
तेनो रूप वियोग निवारो रे ॥

तातें ऐसो श्रीआचार्यजी महाप्रभून को मारग है जो जीव कोउ जाति होइ ताकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के श्रीगुसांईंजी के चरणारविंद की प्राप्त होइ । और इहां श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक हैं । इनको कहा कहनों तब अच्युतदास वा वैष्णव को हाथ पकरिकें मन्दिर के किवार खोलि के टेरा सरकायो सो वो वैष्णवने देख्यो तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्री-सुबोधनीजी को पाठ करत हैं । सो दर्शन करत सब दुःख मिटिगयो । और श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों पूछे जो महाराज उहां तो ऐसे दिखाऐ हो और इहां तो आप ऐसें विराजत हो । याको कारण कहा तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप श्रीमुखतें कहे जो तुम ऐसो सन्देह मति करो तुमकों तो दर्शन सदैव हैं । और वह तो हमनें सबन सों टेरा आडो करि दीयो है । अब